श्रावण शिव विशेषांक

अगस्त 2026
वर्ष - 16

मूल्य : 40/-
अंक - 12

निखिल-मंत्र-विज्ञान

सिद्धिदायक गणपति साधना

महाकाली साधना

लक्ष्य सिद्धि - संकल्प और कर्म

रसेश्वर महामृत्युंजय

नमः पार्वती पतये हर-हर महादेव

A Monthly Journal

शिव श्रवण कल्प – श्रावण मास – 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

शिव है स्थिरता का स्वरूप और शक्ति है गति का स्वरूप...
शिव है शांति का स्वरूप और शक्ति है क्रांति का स्वरूप...
शक्ति है मनोकामना का स्वरूप
जो सदैव मिलना चाहती है शिव से जो है अमृत का स्वरूप

अधूरी मनोकामनाएं अग्नि है और शिव है उस अग्नि को शांत कर जीवन में अमृतरस प्रवाह करने वाले महादेव

जहां शिव है वहां शक्ति अवश्य है और जहां शक्ति है वहां शिव अवश्य है इसीलिये शिव का पूर्ण स्वरूप है महामृत्युंजय अर्द्धनारीश्वर स्वरूप।

घुट-घुट कर जीने का नाम है - मृत्यु
दुर्बल, व्याधि युक्त जीवन जीने का नाम है - मृत्यु
बाधाओं से भागने का नाम है - मृत्यु
जीवन में अवसर मिलने पर भी आलस्य के कारण कर्म न करने का भाव है - मृत्यु

इस मृत्यु रूपी भय से मुक्ति हेतु शक्ति से युक्तकर भक्त को आशीर्वाद प्रदान करते है

महामृत्युंजय सदाशिव

ॐ ह्रौं जूं सः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

रसेश्वर महामृत्युंजय दीक्षा

महामृत्युंजय दीक्षा से साधक के भीतर ओजस्विता, तेजस्विता, शौर्य और पौरुष का संचार होता है। सद्गुरु से महामृत्युंजय दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् ही शिव साधना, मंत्र जप, अनुष्ठान आदि में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। - महामृत्युंजय दीक्षा न्यौछावर (प्रति चरण) - 3100/-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

वर्ष 16 | अगस्त 2026

निखिल आलेख

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

मूल्य मासिक रुपये 40/-

मूल्य वार्षिक रुपये 405/-

अंक 12 | पृष्ठ 68

अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार
जोधपुर

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

संयोजक
मनोज भारद्वाज

व्यवस्थापक मण्डल
नितेश कुमार
संजय 'निखिल'

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
नन्द किशोर श्रीमाली
निखिल मंत्र विज्ञान
द्वारा
सालासर ईमेजिंग सिस्टम,
ए-97, सेक्टर-58
नोएडा (उ.प्र.) - 201301
से मुद्रित तथा
निखिल मंत्र विज्ञान,
14 अ मेन रोड
हाईकोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर से प्रकाशित

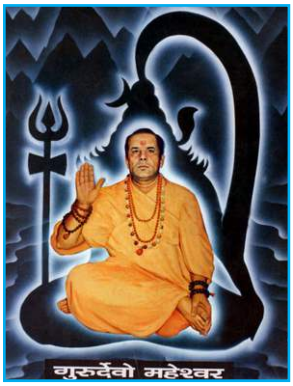

निखिल सम्यक्

सद्गुरु प्रवचन - सूर्य विज्ञान
अन्तर्मन में ज्ञान का प्रकाश ...37
गुरु वाणी ...34
शिष्य धर्म ...36
इस माह की प्रमुख साधनाएं ...30
नक्षत्रों की वाणी ...54
काल निर्णय ...56
वराहमिहिर ...57
शिविर जानकारी ...65

साधनाएं

जन्माष्टमी : लक्ष्य सिद्धि क्लीं साधना ...10
काली जयन्ती : महाकाली साधना ...12
चन्द्र ग्रहण : मदनाक्षी अप्सरा साधना ...17
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पूजन ...22
संतान गोपाल साधना ...27
रक्षा बंधन : गुरु रक्षा सूत्र ...52
सिद्धिदायक गणपति साधना ...62

विशेष

रसेश्वर महामृत्युंजय दीक्षा ...02
लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा ...11
महाकाली दीक्षा ...13
मदनाक्षी अप्सरा दीक्षा ...19
कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा ...64

निखिल विचार प्रवाह

लक्ष्य सिद्धि : संकल्प, कर्म और समत्व यात्रा ...07
विचारों की सही दिशा ...14
श्रीकृष्ण : जीवन के सभी पक्षों का परम सत्य ...20
संतान : जीवन चक्र का दिव्य प्रारम्भ ...25
श्रावण : चन्द्रशेखर स्तोत्र ...50
ईश्वर हमारी प्रार्थना अवश्य सुनते है ...53
गणपति : विघ्नों से विजय की यात्रा ...58

14 A, मेन रोड हाईकोर्ट कॉलोनी, सेनापति भवन के पास, जोधपुर, फोनः 9799988915, 9799988930, SMS & WhatsApp 9602334847
आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोनः 9799988970, 9799988904, 9799988905
www.nikhilmantravigyan.org E-mail – nmv.guruji@gmail.com facebook.com\nikhilmantravigyan.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'निखिल मंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय द्वारा किसी भी सामग्री का विक्रय नहीं किया जाता, केवल उस पर मंत्र साधना, यज्ञ इत्यादि सम्पन्न किया जाता है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। पत्रिका में प्रकाशित आलेखों को किसी भी प्रिन्ट या डिजिटल माध्यम से प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक/सम्पादक कार्यालय से स्वीकृती अवश्य प्राप्त कर लें।

☆ प्रार्थना ☆

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवा सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ।।
स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

हे देव! हम कानों से कल्याणकारी बातें सुनें, आंखों से कल्याणकारी (दृश्य) देखें, हम हृष्ट-पुष्ट अंगों और शरीर से ईश्वर द्वारा प्रदत्त पूरी आयु देवहित कार्यों में बिताएं। महान् कीर्ति सम्पन्न देवराज इन्द्र हमारा कल्याण करें। सर्वज्ञाता पूषा देवता हमारा कल्याण करें। अरिष्टनेमि (जिसकी गति अवरुद्ध न की जा सके), ताक्ष्र्य (गरुड़) तथा बृहस्पतिदेव हमारा कल्याण करें। त्रिविधि तापों में शान्ति हो।

☆ उपेदश से जरूरी आचरण ☆

एक आदमी किसी महात्मा के पास गया और उपदेश देने की प्रार्थना की। महात्मा ने कहा, 'मेरा उपदेश यह है कि आज के बाद किसी से उपदेश मत मांगना।' उनकी बात सुनकर वह व्यक्ति असमंजस में पड़ गया, सोच में पड़ गया।

उसे उधेड़बुन में देख महात्मा ने प्रश्न किया, 'बताओ, सच बोलना अच्छा है या बुरा?'

'सच बोलना तो बहुत अच्छी बात है महाराज।'

'चोरी करना ठीक है या गलत?'

'बिल्कुल गलत, यह तो पाप का काम है।'

'समय का सदुपयोग करना चाहिए या नहीं?'

'समय कीमती है। इसका पूरा उपयोग करना चाहिए।'

दूसरों की इज्जत करनी चाहिए या नहीं?

'जरूर करनी चाहिए। हम दूसरों की इज्जत करेंगे, तभी कोई हमारी इज्जत करेगा।'

महात्मा ने उस व्यक्ति से कहा, 'तुम सब जानते हो, फिर और कैसा उपदेश चाहिए? तुम्हें गुणों और अच्छाइयों का ज्ञान है, किन्तु मात्र ज्ञान से ही काम नहीं चलता। गुणों, अच्छाइयों और विशेषताओं को जीवन में उतारो। उन पर अमल करो। इसी में तुम्हारा कल्याण है, केवल उपदेश सुनने में नहीं।'

उपदेश को अगर जीवन में उतारा नहीं तो उससे क्या लाभ? अपना समय नष्ट किया, मेरा भी कीमती समय लिया और किया कुछ नहीं। यह एक तरह का अन्याय है उपदेश सुनाने वाले के साथ और अपने आपके साथ। इसलिये केवल उपदेश सुनने से अच्छा है कि हम अच्छी बातों पर अमल करें, आचरण में लाएं।

अपनों से अपनी बात...

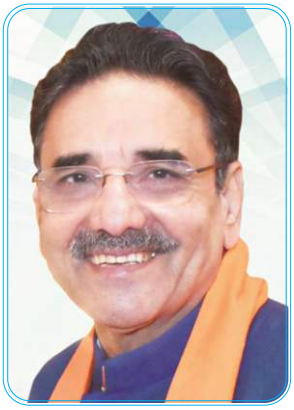

मेरे प्रिय आत्मीय,

शुभाशीर्वाद,

सब चाहते है जीवन Perfect हो, सबकुछ शांति से चले लेकिन क्या ऐसा संभव हो पाता है? कोई भी ऐसा समय हमारे जीवन में नहीं आता है, जब सब कुछ Perfect हो। एक चीज को ठीक करते है तो दूसरी चीज की ओर आपका ध्यान बंटता है। अब उस पर ध्यान देना जरूरी होता है। स्वास्थ्य ठीक चल रहा है तो नौकरी, व्यापार की चिन्ता। नौकरी, व्यापार ठीक चल रहा है तो परिवार में कुछ कलह है, कुछ सम्बन्ध अच्छे नहीं है, सम्बन्धों को आपने ठीक कर दिया तो वित्त व्यवस्था गड़बड़ा जाती है।

देखों भाई, जिन्दगी में कुछ न कुछ चलता रहता है और सबको यही लगता है कि यह समस्या ठीक हो जाये, फिर मैं खुश होऊंगा।

लेकिन ध्रुव सत्य यह है कि एक चुनौती समाप्त होती है तो दूसरी चुनौती सामने आ जाती है। अपने जीवन में एक क्षण रुककर पीछे की ओर ध्यान दो कि क्या आपके जीवन में ऐसी कोई अवस्था आई है जब आपके पास कोई तनाव चिन्ता नहीं थी। यदि ऐसा हुआ है तो आप बहुत सौभाग्यशाली है, पर जीवन का मतलब ही चुनौतियां है।

खुश रहने का रहस्य यह नहीं है कि चुनौतियां खत्म हो जायेगी, तब मैं खुश रहूंगा।

प्रसन्न रहने का एक ही रहस्य है कि चुनौतियों के बीच भी मैं अपनी खुशी को खोज पाऊं, उन्हें अनुभव कर पाऊं। हर बार आप समस्याओं को ही अपनी जिन्दगी का केन्द्र बिन्दु बना लेते हो और सोचते हो कि यह पार हो जाये, उसके बाद मैं आनन्द प्राप्त करूंगा।

होगा क्या? उम्र बीतते-बीतते 70-80 साल के हो जाओंगे और फिर अपने आप से कहोगे कि अरे मैंने अपनी जिन्दगी में क्या किया? आनन्द तो लिया ही नहीं केवल एक के बाद एक समस्याओं के समाधान में जीवन बिता दिया।

हमारा जीवन केवल समस्याओं और चुनौतियों को निपटाने के लिये ही नहीं बना है। चुनौतियों के बीच प्रसन्न रहने के लिये ईश्वर ने जीवन का उपहार दिया है और इस उपहार को पाकर खुश रहना ईश्वर की इच्छा का सम्मान करना है।

चुनौतियां आती है और आयेंगी, यही जीवन का नियम है।

चुनौतियां आती है तो युद्ध करना ही पड़ेगा। युद्ध के बिना किसी भी समस्या का हल नहीं निकल सकता। पाण्डव 13 साल वनवास में रहे और फिर मांगा क्या था - हमें पांच गांव दे दिये जाये। ये पांच गांव थे - इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली), स्वर्णप्रस्थ (सोनीपत), पानप्रस्थ (पानीपत), व्याघ्रप्रस्थ (बागपत), तिलप्रस्थ (फरीदाबाद)। पूरा भारत तो नहीं मांगा था। हस्तिनापुर साम्राज्य का विस्तार तो पूरे आर्यावर्त में था और पाण्डवों ने तो पांच गांव ही मांगे थे।

फिर क्या हुआ? आप जानते है, कुरुक्षेत्र का युद्ध हुआ। जिसे हम महाभारत कहते है और महाभारत कितने दिन चला केवल 18 दिन। इन 18 दिनों में पाण्डवों ने गुरु कृष्ण के निर्देशन में अपनी पूरी शक्ति से युद्ध लड़ा। जो समस्या 13 वर्षों की नहीं, उससे भी पहले की थी, पाण्डु और धृतराष्ट्र के समय की थी

वह पूरी समस्या 18 दिन में मिट गई और आर्यावर्त में धर्म का साम्राज्य स्थापित हो गया और गीता का यह श्लोक अमर बन गया -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

तो फिर आप युद्ध से इतना क्यों घबराते हो? जीवन के सूत्र समझौता, शांति, Adjustment क्यों बना लिये? बार-बार आपको यही सिखाया जाता है कि Adjust करो। घर-परिवार में भी, नौकरी में भी, सम्बन्धियों में भी, लोक-व्यवहार में भी, चाहे आपके साथ कितना ही अहित हो रहा हो आप तिल-तिल कर मरते हो और कहते हो मैं जीवन जी रहा हूं। जी कहा रहे हो? **अपने अन्तर्मन की पीड़ा का विस्तार करते रहते हो और वह पीड़ा, वह व्याधि आपके मन, शरीर, बुद्धि सबको कुण्ठित कर देती है। आप अपने स्वयं के पक्ष में खड़े ही नहीं होते हो,** *जो स्वयं के पक्ष में खड़ा नहीं हो सकता है वह धर्म के पक्ष में कैसे खड़ा होगा। जो सत्य के पक्ष में खड़ा नहीं होगा वह अपने जीवन धर्म को कैसे निभायेगा? वेद वाक्य है - धर्मो रक्षति रक्षितः... जो अपने धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।*

आपका धर्म क्या है? अपने स्वाभिमान की रक्षा करना। धर्म है अनुचित व्यवहार को सहन नहीं करना, धर्म है - अपने आपको परतंत्र नहीं बनाना। धर्म है जो कुछ ईश्वर ने उपहार में दिया है उसकी रक्षा करना और उसमें वृद्धि का प्रयास करना।

धर्म के लिये, प्रिय मित्र जीवन में निरन्तर युद्ध तो करना ही पड़ेगा।

जो युद्ध से बचना चाहते है वे जीवन संग्राम में कुचले जाते है। वे स्वयं अपनी ही नजरों से गिर जाते है और युद्ध जीवन का आवश्यक धर्म है। युद्ध के बिना शांति नहीं हो सकती है, कोई समझौता नहीं हो सकता है, सम्बन्ध ठीक नहीं हो सकते है और कार्य में उन्नति भी नहीं हो सकती है। जो हर कार्य को युद्ध की तरह लेता है, वह अपनी शक्ति में अभिवृद्धि करता है। *ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को चुनौतियों से लड़ने की असीम शक्ति दी है वह अपनी शक्ति का विस्तार उच्चतम रूप में कर सकता है, जिसकी कोई सीमा ही नहीं है।*

भय कोई बाहर की वस्तु नहीं है, कोई शेर आप पर आक्रमण नहीं कर रहा है। भय आपका सबसे बड़ा आन्तरिक शत्रु है, जिसे आपने अपने मन पर ओढ़ रखा है और भय के मित्र है - आलस्य, प्रमाद, चिन्ता और अभिमान।

न आलस्य करना है, न चिन्ता करनी है, न अभिमान करना है। *जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करना है, उनसे भिड़ना है।* जिस दिन पहली बार भय को निकाल दोगे उस दिन पहली बार आपको अपनी शक्ति का अनुभव होगा और वह शक्ति रोम-रोम में व्याप्त होगी।

एक और विशेष बात, सदैव याद रखना।

युद्ध नहीं जिनके जीवन में, वे भी बड़े अभागे होंगे।
या तो प्रण को तोड़ा होगा, या फिर रण से भागे होंगे...।

बहुत-बहुत आशीर्वाद

नन्द किशोर श्रीमाली

लक्ष्य सिद्धि
संकल्प, कर्म और समत्व की यात्रा

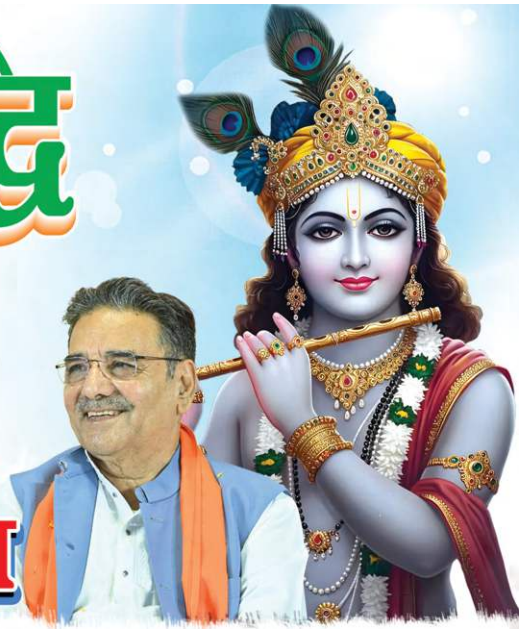

लक्ष्य सिद्धि की पांच कुंजियां

पहली – स्पष्टता, हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हम वास्तव में क्या चाहते हैं...

दूसरी – यथार्थता, लक्ष्य ऐसा हो जिसे पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त किया जा सके...

तीसरी – निरंतर कर्म, प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ना ही अंततः बड़ी उपलब्धियों का कारण बनता है...

चौथी – बाधाओं का मूल कारण समझना, केवल समस्या से नहीं, उसके कारण से संघर्ष करना चाहिए...

पांचवीं – समत्व, सफलता मिलने पर अहंकार न हो और असफलता मिलने पर निराशा न हो...

मनुष्य को जीवन केवल समय बिताने के लिए नहीं मिला है। जीवन का प्रयोजन है स्वयं को बड़ा बनाना, अपनी क्षमताओं को विकसित करना और ऐसा कुछ करना जिससे जीवन सार्थक हो। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को समय-समय पर स्वयं से यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए कि वह दो वर्ष, पांच वर्ष और दस वर्ष बाद अपने जीवन को किस रूप में देखना चाहता है। लक्ष्यहीन जीवन उस नौका के समान है जिसके पास दिशा नहीं है, वह लहरों के सहारे इधर-उधर भटकती रहती है। **लक्ष्य के अभाव में हम अपनी असंतुलित भावनाओं को ही अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने का कार्य दे देते हैं और फिर एक समय ऐसा आता है जब हमें यह अनुभव होता है कि हमने जीवन को व्यर्थ कर दिया। यह भाव अत्यंत दुःखदायी है।**

कल्पना और लक्ष्य में अंतर

सबसे पहले लक्ष्य का निर्धारण करना आवश्यक है और लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो प्राप्य हो। **कल्पना और लक्ष्य में यही अंतर है कि कल्पना केवल सुखद स्वप्न देती है, जबकि लक्ष्य कर्म की प्रेरणा देता है।** यदि कोई व्यक्ति बिना किसी तैयारी और प्रयास के पांच वर्ष में अंबानी जैसा धनी बनने की कल्पना करे, तो यह स्वप्न तो हो सकता है, पर लक्ष्य नहीं। ऐसी इच्छा सुनने पर भी अनर्गल प्रतीत होती है। लक्ष्य वही है जो हमारी योग्यता, परिस्थितियों और पुरुषार्थ के अनुरूप हो और जिसे प्राप्त करने के लिए हम निरंतर प्रयास कर सकें।

दीर्घकालीन और अल्पकालीन लक्ष्यों का विभाजन

लक्ष्य बनाते समय दीर्घकालीन और अल्पकालीन दोनों प्रकार के लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। दस वर्ष का लक्ष्य हमें जीवन की दिशा देता है, पांच वर्ष का लक्ष्य उस दिशा को स्पष्ट करता है, और दो वर्ष का लक्ष्य हमें प्रतिदिन के कर्मों का आधार प्रदान करता है। यदि किसी व्यक्ति का उद्देश्य एक अच्छा चिकित्सक बनना है, तो उसका दस वर्ष का लक्ष्य उस क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करना हो सकता है। पांच वर्ष का लक्ष्य शिक्षा पूर्ण करना और दो वर्ष का लक्ष्य आवश्यक परीक्षाओं की तैयारी करना हो सकता है। इस प्रकार बड़ा लक्ष्य छोटे-छोटे चरणों में विभाजित होकर साध्य बन जाता है।

गीता: कर्म पर अधिकार, फल पर नहीं

बाधाओं का आना तो जीवन का स्वाभाविक अंग है, यह निश्चित है। पर यदि हर बाधा को देखकर हम ठिठक जाएं और यह सोचने लगें कि संभवतः ईश्वर की इच्छा नहीं है, तो हम कभी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। गीता कहती है कि **कर्म करना हमारे अधिकार में है, परन्तु फल हमारे अधिकार में नहीं, यह सूत्र केवल दर्शन का वाक्य नहीं, यह लक्ष्य-प्राप्ति की सबसे व्यावहारिक नीति है।** इसका अर्थ यह नहीं कि फल की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि हमारा ध्यान परिणाम से अधिक कर्म पर होना चाहिए। जब हम फल से अपना सम्बन्ध शिथिल कर देते हैं और केवल कर्म पर अपनी दृष्टि केंद्रित रखते हैं, तब बाधाएं हमें रोक नहीं पातीं, क्योंकि बाधा का भय तो तभी जन्म लेता है जब हम परिणाम से अत्यधिक आसक्त हो जाते हैं।

अर्जुन का ठिठकना और स्थितप्रज्ञ की स्थिति

जब व्यक्ति अपने कर्म में तल्लीन हो जाता है, तब असफलता भी उसे विचलित नहीं करती और सफलता भी उसे अहंकार से भर नहीं देती। अर्जुन भी युद्धभूमि में मोह और भय से ठिठक गया था, पर श्रीकृष्ण ने उसे परिणाम की चिंता से मुक्त करके कर्तव्य की ओर लौटाया।

गीता का संदेश इसका सीधा समाधान देता है - **बाधा ईश्वर की अनिच्छा का प्रमाण नहीं है, बाधा तो कर्मक्षेत्र का स्वाभाविक स्वरूप है। जो साधक समबुद्धि से, सुख-दुःख और सफलता-असफलता को समभाव से देखते हुए कर्म करता रहता है, वही स्थितप्रज्ञ कहलाता है, और स्थितप्रज्ञ साधक ही अंततः लक्ष्य को सिद्ध करता है।**

काली: सूक्ष्म बुद्धि और मूल कारण का नाश

जहां गीता हमें कर्म और फल के बीच का संतुलन सिखाती है, वहीं **लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल परिश्रम ही पर्याप्त नहीं है, सूक्ष्म बुद्धि भी आवश्यक है।** देवी काली की कथा इसी सत्य को प्रकट करती है और हमें यह भी सिखाती है कि बाधा को कैसे निर्भीकता से पार किया जाए। **'काली काल को भी वशीभूत करने वाली शक्ति है...'** जब समय स्वयं किसी के अधीन हो जाए, तो उसके लिए कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं रह जाता।

काली के अवतरण की कथा ही लक्ष्य सिद्धि की ही कथा है। रक्तबीज के प्रत्येक रक्तकण से नया असुर उत्पन्न हो जाता था और देवता भी उस समस्या के समाधान में असमर्थ हो गए। **यदि केवल ऊपर से प्रहार किया जाता, तो समस्या समाप्त नहीं होती। तब देवी चामुंडा ने काली रूप धारण किया। काली ने अपनी जिह्वा फैलाकर रक्तबीज के प्रत्येक रक्त बिंदु को धरती पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर लिया, जिससे कोई नया असुर उत्पन्न ही न हो सके। यह केवल बल का प्रदर्शन नहीं था, यह उस सूक्ष्म बुद्धि का प्रतीक है जो लक्ष्य की सिद्धि के लिए समस्या की जड़ को ही समाप्त कर देती है।**

विजय के पश्चात संयम: काली का शिव पर पग

काली का यह स्वरूप भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वे संहार के पश्चात रुकी नहीं, उनका रौद्र रूप इतना प्रचंड हो गया कि सृष्टि के संतुलन के लिए स्वयं शिव को उनके चरणों में लेटना पड़ा। यह दर्शाता है कि जब साधक अपने लक्ष्य में पूर्णतः तल्लीन हो जाता है, तो उसे बाहरी संसार का भान भी शेष नहीं रहता। काली का शिव के ऊपर पग रखकर भी लज्जा से जिह्वा निकाल लेना, यह उस क्षण का प्रतीक है **जब लक्ष्य सिद्धि की चरम अवस्था में साधक को आत्मबोध होता है, और वह अपनी शक्ति को पुनः संतुलन में स्थापित कर लेता है। लक्ष्य सिद्धि का अर्थ केवल विजय नहीं, अपितु विजय के पश्चात संयम भी है, और यह संयम ही गीता के समत्व भाव से मिलता है।** जो साधक काली की

कृपा से निर्भय होकर बाधाओं का संहार करता है, उसे भी अंततः गीता के ज्ञान को धारण करना होता है कि **सफलता मिलने पर अहंकार में न डूबे, असफलता मिलने पर विषाद में न डूबे, क्योंकि लक्ष्य की वास्तविक सिद्धि बाहरी उपलब्धि और भीतरी संतुलन, दोनों के संगम में ही है।**

दो परंपराएं, एक सत्य

इस प्रकार गीता और काली, दोनों परंपराए एक ही सत्य को दो भिन्न मार्गों से प्रकट करती हैं। गीता हमें सिखाती है कि **कर्म में रहो, फल का मोह छोड़ो, बाधा को ईश्वर की अनिच्छा मत मानो।** काली हमें सिखाती हैं कि **बाधा के मूल कारण को निर्भीकता से समाप्त करो, और सिद्धि के पश्चात भी संयम मत खोओ।** जो साधक इन दोनों शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करता है, उसका संकल्प इतना दृढ़ हो जाता है कि वह अपने लक्ष्य के मार्ग में आने वाले प्रत्येक विघ्न को, चाहे वह बाहरी हो या भीतरी, समूल नष्ट करने का सामर्थ्य पा लेता है, और साथ ही उस संकल्प को समत्व भाव की डोर से बांधे रखता है।

संकल्प से समत्व तक की यात्रा

इस प्रकार **लक्ष्य सिद्धि की यात्रा केवल बाहरी उपलब्धि की यात्रा नहीं है। यह स्वयं को अनुशासित करने, भय से ऊपर उठने, निरंतर कर्म करने और अंततः समत्व को प्राप्त करने की यात्रा है। संकल्प उसका आरम्भ है, पुरुषार्थ उसका मार्ग है और संतुलन उसकी अंतिम सिद्धि है।** यही है सच्चे अर्थों में लक्ष्य सिद्धि की पूर्ण यात्रा, संकल्प से आरम्भ, निर्भीक कर्म से मार्ग और समत्व से चरम सिद्धि तक की यात्रा। गीता के कर्मयोग और महाकाली की निर्भीकता से साधक के जीवन में कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं रह जाता।

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी - 4 सितम्बर 2026

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और महाकाली जयन्ती

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी साधनात्मक दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण अवसर है। इस दिन महाविद्या काली की जयन्ती भी होती है और इसी दिन कर्म को धर्म का ज्ञान प्रदान करने वाले भगवान श्रीकृष्ण की जन्मोदिवस भी है।

महाविद्या काली का बीज मंत्र 'क्रीं' है और श्रीकृष्ण का बीज मंत्र 'क्लीं' है। महाविद्या काली अपनी तीव्र शक्ति द्वारा लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आ रही बाधाएं समाप्त करती है और भगवान श्रीकृष्ण कर्मयोग के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ति के अडिग रहने की शक्ति और प्रेरणा प्रदान करते है।

जीवन के महत्वपूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये संकल्प लेकर भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के महत्वपूर्ण साधनात्मक दिवस में महाकाली बाधा निवारण साधना और लक्ष्य सिद्धि क्लीं साधना सम्पन्न करें।

जीवन मार्ग में आने वाली बाधाओं का समापन और निरन्तर कर्मयोग द्वारा ही साधक अपने लक्ष्य को सिद्ध कर सकता है। सद्गुरुदेव से महाकाली बाधा निवारण शक्तिपात दीक्षा और लक्ष्य सिद्धि श्रीकृष्ण दीक्षा ग्रहण कर साधना सम्पन्न करें आपको अवश्य ही लक्ष्य प्राप्ति होगी।

कृष्ण जन्माष्टमी - 4 सितम्बर 2026

लक्ष्य सिद्धि 'क्लीं' साधना

लक्ष्य भेदन - सम्मोहन साधना ही जीवन की वास्तविक साधना है, अपनी प्रबल इच्छा को सर्वप्रथम स्पष्ट करें। तत्पश्चात् लक्ष्य निर्धारण के लिये कर्मशील हों।

लक्ष्य भेदन सम्मोहन साधना ही जीवन की महत्वपूर्ण साधना है, क्योंकि जब तक जीवन में कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं होता है मनुष्य के मन में कई इच्छाएं उत्पन्न होती हैं और समाप्त हो जाती हैं और ऐसा केवल एक बार नहीं होता यह प्रक्रिया चलती रहती है। अतः अपनी प्रबल इच्छा को सर्वप्रथम स्पष्ट करें तत्पश्चात् लक्ष्य निर्धारण के लिये क्रियाशील हों। यदि जीवन में लक्ष्य ही निर्धारित नहीं कर पा रहे हैं अथवा स्वय पर संशयों और संदेहों की भरमार है तो एक बार अवश्य सम्पन्न करें - श्रीकृष्ण **'क्लीं'** साधना।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिये कोई कठिन साधना विधान नहीं है। इस साधना हेतु सबसे महत्वपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित साधना सामग्री है। इस तंत्र प्रयोग के लिए आपके पास तीन साधना सामग्री के रूप में आवश्यक हैं - **श्रीकृष्ण यंत्र, लक्ष्य सिद्धि गुटिका** तथा **लक्ष्य सिद्धि माला।**

'लक्ष्य सिद्धि क्लीं साधना' कृष्ण जन्माष्टमी 4 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त या किसी भी शुक्रवार से आरंभ की जा सकती है।

साधक प्रातः स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पूर्व की ओर मुख कर बैठ जाएं। अपने सामने बाजोट पर गुरु चित्र/पादुका/गुरु यंत्र का स्थापन कर गुरुदेव का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें। गुरु पूजन कर गुरुदेव से साधना में सफलता का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त कर लें और गुरु चित्र के सम्मुख ही एक ताम्र पात्र में कुंकुम से त्रिभुज बनाकर उस पर **'श्रीकृष्ण यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र के ऊपर ही **'लक्ष्य सिद्धि गुटिका'** स्थापित कर दें।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र और गुटिका का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें -

ॐ श्रीं क्लीं कृष्णाय लक्ष्य भेदन क्लीं श्रीं हूं फट् कुंकुम, अक्षतान् पुष्पम् समर्पयामि, धुपम् आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि।

इसके पश्चात् यंत्र के पास तीन आचमनी जल छोड़ दें और निम्न मंत्र का 1 माला जप करें।

ॐ श्रीं क्लीं कृष्णाय लक्ष्य भेदन क्लीं श्रीं हूं फट्

पूजन एवं मंत्र जप के पश्चात् 'लक्ष्य सिद्धि माला' को गले में धारण कर लें। ध्यान अवस्था में सीधे बैठकर कर यंत्र गुटिका पर दृष्टि को एकाग्र रखते हुए श्रीकृष्ण के बीज मंत्र **'क्लीं'** का जप करें -

क्लीं... क्लीं... क्लीं...

त्राटक करते हुए कम से कम 15 मिनट तक मंत्र जप करें। मंत्र जप के पश्चात् उसी स्थान पर आंखें बंद कम से कम 15 मिनट तक पुनः **'क्लीं'** बीज का जप करें। मंत्र जप के पश्चात् माला को गले से निकाल कर यंत्र पर रख दें। तथा अगले दिन सम्पूर्ण साधना सामग्री को जल सरोवर अथवा नदी में प्रवाहित कर दें।

यह साधना लक्ष्य निर्धारण और लक्ष्य सिद्धि के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। आप लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पा रहे है या लक्ष्य प्राप्ति में निरन्तर बाधाएं आ रही हो, बार-बार लक्ष्य से भटक जा रहे है जिस कारण सफलता नहीं प्राप्त हो पा रही हो उन्हें निश्चय ही लक्ष्य सिद्ध क्लीं साधना सम्पन्न करनी चाहिए। प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री द्वारा यह साधना सम्पन्न की जाती है तो भगवान श्रीकृष्ण साधक के हृदयस्थल में स्थापित हो उसे सफलता प्रदान करते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

कृष्ण जन्माष्टमी - 4 सितम्बर 2026

लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा

सद्गुरु शक्तिपात - लक्ष्य चेतना का जागरण

'क्लीं' केवल एक बीजाक्षर नहीं है, बल्कि यह आकर्षण, एकाग्रता, संकल्प शक्ति और लक्ष्य से आत्मा के मिलन का दिव्य स्पन्दन है। जब यह बीज मंत्र सद्गुरु की चेतना से अभिमन्त्रित होकर शक्तिपात के माध्यम से शिष्य के भीतर प्रतिष्ठित होता है, तब साधक के भीतर बिखरी हुई ऊर्जा एक केन्द्र पर एकत्रित होने लगती है। उसकी इच्छाएं संयमित होती हैं, मन स्थिर होता है और जीवन लक्ष्य की दिशा में गति प्राप्त करता है।

संसार में वही व्यक्ति सफल होते है जिनके कर्म में लक्ष्य की स्पष्टता, श्रद्धा और दिव्य मार्गदर्शन जुड़ा होता है, तभी वह सिद्धि का माध्यम बनता है। लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा इसी आन्तरिक रुपान्तरण का प्रारम्भ है।

सद्गुरुदेव ही शिष्य की सुप्त चेतना को स्पर्श द्वारा जाग्रत करते है। शक्तिपात का वास्तविक अर्थ है सद्गुरु की जाग्रत आध्यात्मिक ऊर्जा का शिष्य के अन्तःकरण में प्रवाह है। लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा के प्रभाव से * साधक के निर्णयों में स्पष्टता आती है * समय का सदुपयोग होने लगता है * आलस्य और भ्रम कम होने लगते हैं * आत्मविश्वास बढ़ता है * परिस्थितियों से संघर्ष करने का साहस विकसित होता है * जीवन ऊर्जा व्यर्थ के विचारों में नष्ट न होकर लक्ष्य की दिशा में प्रवाहित होती है।

सद्गुरु की कृपा से सम्पन्न लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा साधक को यह अनुभव कराती है कि वह अकेला नहीं है। उसके प्रत्येक शुभ संकल्प में गुरु-शक्ति का संरक्षण विद्यमान है। यही विश्वास कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उसे विचलित नहीं होने देता। जब संसार के मार्ग बंद दिखाई देते हैं, तब गुरु-चेतना भीतर नया मार्ग प्रकाशित करती है।

लक्ष्य की प्राप्ति केवल गति से नहीं, सही दिशा से होती है। दिशा देने वाले सद्गुरु है, गति देने वाली साधना है और सफलता का आधार निरन्तर कर्म है। जब ये तीनों एक साथ जुड़ जाते हैं, तब लक्ष्य सिद्धि केवल संभावना नहीं, बल्कि निश्चित परिणाम बन जाती है।

जहां सद्गुरु की कृपा, साधना की निरन्तरता और लक्ष्य की पवित्रता एक हो जाती है, वहीं 'क्लीं' की दिव्य शक्ति साधक के जीवन को लक्ष्य सिद्धि की पूर्णता तक पहुंचा देती है।

- लक्ष्य सिद्धि 'क्लीं' दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

बाधाओं का नाश कर ही जीवन में लक्ष्य सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। हमारे जीवन की बाधाएं भी प्रायः आसुरी शक्ति रक्तबीज की भांति ही होती हैं, एक को समाप्त करते हैं तो दूसरा जन्म ले लेता है।

हमारे जीवन के रक्तबीज दूसरों के कारण उत्पन्न होने वाली बाधाएं ही नहीं बल्कि स्वयं का आलस्य, असंयम, आत्म विश्वास की कमी भी है। इन रक्तबीजों को समाप्त कर ही लक्ष्य प्राप्ति संभव है, इनके मूल कारण को पहचानकर समाप्त करना आवश्यक है।

काली की उपासना का यही रहस्य है कि वे साधक के समस्त भय, संकोच और दुर्बलता को जड़ से समाप्त कर देती हैं, जिससे साधक हर बाधा को विघ्न नहीं, अपितु अपने संकल्प की परीक्षा मानकर आगे बढ़ता है।

महाविद्या महाकाली साधना

महाविद्या महाकाली साधना की सृष्टि स्वयं शिव ने की थी और यह साधना अत्यंत तेजस्वी होने के साथ-साथ अत्यधिक सरल और सहज है, कोई भी पुरुष-स्त्री, बालक-वृद्ध इसको सम्पन्न कर सकता है। इसमें किसी भी प्रकार की कोई रोक-टोक नहीं है।

महाकाली साधना से जीवन में बाधा, शत्रु, भय, इत्यादि तो समापन होते ही है साथ ही साथ साधक का जीवन -

- अष्ट पाशों से मुक्त हो जाता है और तंत्र के क्षेत्र में अत्यंत ऊंचाइयों को प्राप्त कर पाता है।
- जीवन स्वस्थ, निरोग और पूर्ण आयुष्य भोगता है।
- अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है और उसमें एक नई चेतना एवं ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है।
- शत्रु रहते ही नहीं और अगर होते हैं, तो वे हमेशा उसके आगे विनीत भाव से रहते हैं, उसकी हर बात स्वीकार करते ही हैं।
- अटूट सम्पदा, धन, धान्य की स्थिति बन जाती है, समाज में मान, प्रतिष्ठा, पद की प्राप्ति होती है।

महाकाली साधना को महाकाली जयन्ती अथवा किसी भी कृष्ण पक्ष अष्टमी या अमावस्या की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है। साधक लाल अथवा काले वस्त्र धारण करके काले आसन पर बैठें। अपने समक्ष स्टील की थाली में काले तिल बिछाकर उस पर **'महाकाली यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र का पूजन कर निम्न ध्यान मंत्र द्वारा भगवती काली का ध्यान करें -

कराल वदनां धोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजां
नमामि रक्त कालीं तां मुण्डमाला विभूषिताम्
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम्
बालार्क मण्डलाकारं लोचनत्रितयान्वितम्

ध्यान के पश्चात्काली का पूजन करें - कुंकुम, तथा अक्षत यंत्र पर निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए चढ़ाएं -

आगच्छ वरदे देवि! दैत्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकर प्रिये।।

इसके पश्चात् **'महाकाली माला'** से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें -

।। नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं।।

यह 14 दिन की साधना है, 14 दिन नित्य साधना सम्पन्न करने के पश्चात् सम्पूर्ण साधना सामग्री को किसी नदी अथवा जल में विसर्जित कर दें।

जब साधक शुद्ध हृदय से कोई साधना करता है तो उसे उसके जीवन की अन्य प्रवृत्तियां बार-बार रोकती हैं लेकिन संकल्प में बहुत बड़ी शक्ति होती है उसके माध्यम से वह इस प्रवृत्ति को नष्ट कर आगे बढ़ता ही रहता है। शक्ति जो कि हमारे मन की सीमाएं और दोष हैं उन्हें तोड़ देती है जिससे जीवन के अवरोध समाप्त हो जाते हैं और एक शुद्ध मार्ग प्राप्त होता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. 750/-

महाकाली जयन्ती - 4 सितम्बर 2026

महाकाली दीक्षा

महाकाली मनुष्य के मन में जो बाधाएं हैं, अवरोध हैं, निम्नकारी स्थितियां हैं उनका विनाश करने के लिये है। वे खड्ग धारण की हुई हैं, जिससे वे सारी बाधाओं को काट देती हैं, नष्ट कर देती हैं। हमारे भीतर जो भी अज्ञान, अन्धकार, अशुद्धता और निम्नता है, उन्हें नष्ट करने के लिये ही उनका यह भयावह स्वरूप है।

तंत्र की आधारभूत महाविद्या महाकाली से सम्बन्धित दीक्षा जब गुरु कृपा से शिष्य-साधक को प्राप्त हो जाती है तो उस शिष्य-साधक का पूरा जन्म संवर जाता हैं। 'महाकाली दीक्षा' प्राप्त कर यदि साधक श्रद्धा से महाकाली साधना सम्पन्न करता है, तो निश्चित सफलता प्राप्त होती है।

काली साधना दीक्षा परम आवश्यक -

- *महाकाली दीक्षा से व्यक्ति के अन्दर अत्यधिक तेजस्विता स्वतः व्याप्त हो जाती है और उसके प्रतिवादी निष्प्रभावी हो जाते हैं।*
- *महाकाली अपने साधकों पर सदैव परम स्नेह रखने वाली तथा उनका कल्याण करने वाली हैं।*
- *महाकाली साधक समस्त लोकों को वशीभूत करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।*
- *महाकाली अपने समस्त साधकों की इच्छाओं को पूर्ण कर उसे श्री, सम्पन्नता तथा श्रेष्ठता प्रदान करती है तथा साधक के घर में कुबेरवत अक्षय भण्डार बना रहता है।*
- *महाकाली दीक्षा से साधक समस्त रोगों से मुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ जीवन व्यतीत करता हैं तथा पूर्ण स्वस्थ एवं दीर्घायु होता हैं।*
- *महाकाली महाविद्या त्रिभुवन में अत्यन्त दुर्लभ चारों पुरुषार्थों को देने वाली, महापापों को नष्ट करने वाली, सनातनी तथा समस्त भोगों को प्रदान करने वाली हैं।*

गुरुदेव से शक्तिपात दीक्षा प्राप्त करना साधनात्मक जीवन का एक टर्निंग प्वाइंट होता है, एक सुनहरा मोड़ जिसके बाद फिर उसके दोष, उसके विकार उसकी सफलता में आड़े नहीं आते। गुरु द्वारा सात चरणों में महाकाली दीक्षा प्राप्त कर, अपने जीवन को सकरात्मकता और विश्वास से परिपूर्ण करें।

महाकाली दीक्षा (प्रति चरण) न्यौछावर - 3100/-

अहंकार से स्वाभिमान की यात्रा
विचार ही बंधन : विचार ही स्वतंत्रता

विचारों को सही दिशा आवश्यक

जो स्वयं को मुक्त मानता है, वह मुक्त होने लगता है; जो स्वयं को बंधा मानता है, वह बंधन को और पुष्ट करता है।

एको द्रष्टासि सर्वस्य मुक्तप्रायोऽसि सर्वदा।
अयमेव हि ते बन्धो द्रष्टारं पश्यसीतरम्।।

अष्टावक्र का यह वचन हमें भीतर तक झकझोर देता है। वे कहते हैं कि हम स्वभाव से ही मुक्त हैं, परंतु हमारी सबसे बड़ी भूल यह है कि हम स्वयं को बंधा हुआ मान बैठे हैं। यही मान्यता हमारा बंधन बन जाती है। वास्तव में बंधन बाहर नहीं है, बंधन भीतर है। संसार ने हमें उतना नहीं बांधा, जितना हमारी अपनी धारणाओं ने बांध रखा है। और उन धारणाओं में सबसे प्रबल है अहंकार, यह भाव कि 'मैं कर रहा हूं, मैं ही सबका केंद्र हूं, मेरे बिना कुछ नहीं हो सकता।' यही भाव दुःख का मूल है।

योग वशिष्ठ में श्रीराम के माध्यम से यह बताया गया है कि अहंकार अनेक रूपों में समस्त जीवों में व्याप्त है। कोई अपने ज्ञान पर गर्व करता है, कोई अपने धन पर, कोई अपने तप पर, कोई अपने त्याग पर, और कोई अपने दुःख तक पर अहंकार कर बैठता है।

अहंकार केवल यह नहीं कि 'मैं महान हूं'; अहंकार यह भी है कि 'मेरे जैसा पीड़ित कोई नहीं', 'मेरी समस्या सबसे बड़ी है', 'मेरे किए हुए उपकार को कोई नहीं समझता।' इस प्रकार अहंकार बहुत सूक्ष्म होकर भी जीवन को विषाक्त कर देता है। हम सोचते हैं कि हमें दूसरों ने दुःख दिया, परन्तु गहराई से देखें तो दुःख का बड़ा कारण हमारा वही 'मैं' है, जो हर घटना में स्वयं को स्थापित करना चाहता है।

अहं कर्तेत्यहंमानमहाकृष्णाहिदंशितः।
नाहं कर्तेति विश्वासामृतं पीत्वा सुखी भव।।

अष्टावक्र आगे कहते हैं कि 'मैं कर्ता हूं' यह भाव मानो किसी विशाल काले सर्प के दंश के समान है। जिस क्षण हमने मान लिया कि सब कुछ हम कर रहे हैं, उसी क्षण हम भोक्ता भी बन गए। फिर हर फल हमें ही भोगना होगा सफलता भी, असफलता भी, सम्मान भी, अपमान भी। यही कारण है कि कर्तापन का अहंकार मनुष्य को चैन से जीने नहीं देता। वह निरंतर हिसाब रखता है हमने किसके लिए क्या किया, किसने हमारे लिए क्या नहीं किया, किसने हमारे परिश्रम को पहचाना, किसने नहीं पहचाना। यही सूक्ष्म गणित मन को थका देता है।

भीतर के बंधन

कितनी बार ऐसा होता है कि जब कोई हमारा साथ नहीं देता, तब भीतर से एक स्वर उठता है 'हमने तो उसके कठिन समय में सहायता की थी, उसने हमारे लिए क्या किया?' और यदि हमने किसी की सहायता कर दी, तो दूसरी ओर मन में यह भाव भी आ सकता है कि 'देखो, इतना अच्छा कार्य तो हम ही कर सकते हैं।' एक क्षण के लिए यह संतोष जैसा प्रतीत होता है, पर वास्तव में यह अहंकार का ही दूसरा रूप है। उपकार करके भी यदि भीतर 'मैं' पुष्ट हो रहा है, तो वह सेवा नहीं, सूक्ष्म बंधन है।

शिष्य बनने का अर्थ है - नम्रता और अहंकार से रहित होना। इसी के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यह भी ध्रुव सत्य है कि - ज्ञान के द्वारा ही संसार की सारी बाधाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है। ज्ञान ही शाश्वत् है, ज्ञान के द्वारा ही तो शांति और संतोष प्राप्त हो सकता है।

ज्ञान के बिना सबकुछ अधूरा है और जो अधूरा है वह दुःख की उत्पत्ति करता है और जो पूर्ण है वह सुख और खुशी की उत्पत्ति करता है।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

यही कारण है कि शास्त्रों ने बार-बार सावधान किया है कि पुण्य भी यदि अहंकार बढ़ा दे, तो वह मुक्ति का नहीं, बंधन का कारण बन जाता है। योग वशिष्ठ में स्वर्ग तक का वर्णन इस दृष्टि से किया गया है कि वहां भी जीव अपने पुण्य के अनुसार सुख भोगता है, परंतु जहां भोग है, वहां तुलना है; जहां तुलना है, वहां स्पर्धा है; और जहां स्पर्धा है, वहां ईर्ष्या और असंतोष छिपे हुए हैं। अतः केवल बाहरी सुख प्राप्त कर लेने से मुक्ति नहीं आती। स्वर्ग जैसी अवस्था भी यदि अहंकार के साथ है, तो वह अंतिम सत्य नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि समस्या वस्तुओं में नहीं, मन की वृत्ति में है।

एवं जब इस प्रकार की भावनाएं बनी हुई हैं, तो निस्संदेह अहंकार भी बना हुआ है। अहंकार शब्द की उत्पत्ति 'अहम्' से होती है। 'अहम्' को कार्य करने का गुमान ही अहंकार है और इस अहंकार को जलाने का उपाय भी अष्टावक्र ही बताते हैं

एको विशुद्धबोधोऽहमिति निश्चयवह्निना।
प्रज्वाल्याज्ञानगहनं वीतशोकः सुखी भव।।

अर्थात् 'मैं शुद्ध बोधस्वरूप हूं' इस निश्चय की अग्नि से अज्ञान के घने वन को जला दो और शोक से मुक्त होकर सुखी हो जाओ।

यह एक साधारण वाक्य नहीं, सम्पूर्ण अध्यात्म का सार है। जब तक हम स्वयं को केवल शरीर, मन, भूमिका, सम्बन्ध, उपलब्धि सफलता या असफलता के रूप में देखेंगे, तब तक अहंकार रहेगा। परंतु जिस क्षण हमने यह समझना आरंभ किया कि हम शुद्ध चेतना हैं, उसी क्षण दृष्टि बदलने लगती है।

मैं ही मैं में डूबा मन

अज्ञान क्या है? अज्ञान यह है कि 'मैं कर रहा हूं, इसलिए मैं महत्वपूर्ण हूं। मेरी इच्छाएं महत्वपूर्ण हैं। मेरी उपलब्धियां ही मेरी पहचान हैं।' यही अज्ञान हमें भीतर से कठोर बनाता है। इसके विपरीत जब हम यह मानते हैं कि 'हम चेतना हैं; जो चैतन्यता हममें है, वही परमात्मा की देन है' तब मन हल्का होने लगता है। फिर कार्य होता है, पर कर्तापन कम होता है। सेवा होती है, पर उसका बोझ नहीं रहता। सम्बन्ध रहते हैं, पर उनसे चिपकाव कम होने लगता है। यही आध्यात्मिक परिपक्वता है।

चेतना-जागरण का सिद्ध मंत्र है -

ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम
चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः

उसका तात्पर्य भी यही है कि भीतर सोई हुई चैतन्यता जाग्रत हो। चेतना कोई साधारण मानसिक अवस्था नहीं है; वह ईश्वरीय ऊर्जा है। वह विशुद्ध है, निर्मल है और हमारी बुद्धि को परिष्कृत करती है। जब बुद्धि परिमार्जित होती है, तब हम वस्तुओं को उनके यथार्थ रूप में देखने लगते हैं। फिर संसार का भ्रम धीरे-धीरे कम होने लगता है।

यत्र विश्वमिदं भाति कल्पितं रज्जुसर्पवत्।
आनन्दपरमानन्दः स बोधस्त्वं सुखं चर।।

यहां अष्टावक्र रस्सी और सांप का अत्यंत प्रसिद्ध उदाहरण देते हैं। अंधेरे में रस्सी पड़ी थी, हमने उसे सांप समझ लिया। भय वास्तविक लगने लगा, शरीर कांप उठा, प्राण सूखने लगे; पर वस्तु तो रस्सी ही थी। भय किससे उत्पन्न हुआ? सत्य से नहीं, भ्रम से। यही दशा हमारे जीवन

की भी है। हम अनेक चिंताओं को यथार्थ मान लेते हैं, जबकि वे अधिकतर मन की कल्पनाएं होती हैं। हम भविष्य की आशंकाओं से कांपते हैं, मानो वे अभी घटित हो रही हों। हम दूसरों की राय से आहत होते हैं, मानो वही हमारी अंतिम पहचान हो। हम जगत को इतना ठोस सत्य मान लेते हैं कि उसमें उलझकर अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाते हैं।

मायाजाल : विचारों की उलझन

यही मायाजाल है। मायाजाल विचार है। उसे इंद्रजाल भी कहा गया है, क्योंकि इंद्रियों के माध्यम से यह जाल फैलता है। जिह्वा को स्वाद चाहिए, शरीर को श्रृंगार चाहिए, मन को प्रशंसा चाहिए, अहंकार को मान चाहिए और आत्मा को शांति चाहिए। समस्या यह है कि हम आत्मा की आवश्यकता को भूलकर इंद्रियों की माँग को ही जीवन का केंद्र बना लेते हैं। चाह मन को भटका देती है। चाह जितनी बढ़ती है, शांति उतनी घटती है। फिर हम सोचते हैं कि कोई बाहरी वस्तु हमें स्थिर कर देगी, जबकि अस्थिरता भीतर से उत्पन्न हो रही होती है।

आत्मा साक्षी है, क्योंकि वह प्रत्येक क्षण हमारे विचारों को देख रही है और उन विचारों से प्रभावित हमारे आचरण को भी देख रही है। आत्मा न तो भाग-दौड़ करती है, न भयभीत होती है, न स्पर्धा करती है। वह केवल देखती है। इसी कारण शास्त्र कहते हैं कि आत्मा साक्षी है। यदि हम इस साक्षीभाव को थोड़ा भी साध लें, तो जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आ सकता है। तब हम हर विचार के साथ बह नहीं जाएंगे। हम यह देख पाएंगे कि यह क्रोध उठ रहा है, यह भय उठ रहा है, यह तुलना उठ रही है, यह वासना उठ रही है पर हम इनमें से कोई भी नहीं हैं। हम इनके साक्षी हैं।

इसी को अष्टावक्र आगे एक और श्लोक में अत्यंत स्पष्ट कर देते हैं

मुक्ताभिमानी मुक्तो हि बद्धो बद्धाभिमान्यपि।
किंवदन्तीह सत्येयं या मतिः सा गतिर्भवेत्।।

यह श्लोक गहरा मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक सत्य प्रकट करता है। जो स्वयं को मुक्त मानता है, वह मुक्त होने लगता है; जो स्वयं को बंधा मानता है, वह बंधन को और पुष्ट करता है। हमारी मति ही हमारी गति बन जाती है। आज पश्चिमी जगत जिस बात को 'अभिव्यक्ति' कहकर प्रचारित करता है, उसका मूल संकेत यहां बहुत पहले दिया जा चुका है। मन जिस विचार को बार-बार धारण करता है, वही धीरे-धीरे विश्वास में बदलता है और वही विश्वास जीवन की दिशा तय करता है।

स्वभाव निर्बलता

यदि हम निरन्तर यह सोचते रहें कि हम पीड़ित हैं, असहाय हैं, दुर्भाग्यशाली हैं, तो मन उसी प्रकार के प्रमाण खोजने लगता है। यदि हम यह धारण करें कि हमारे भीतर चेतना है, सामर्थ्य है, ईश्वरीय संरक्षण है, तो वही मन अवसरों को पहचानने लगता है। इसका अर्थ यह नहीं कि बाहरी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी; इसका अर्थ यह है कि हमारा सम्बन्ध समस्याओं से बदल जाएगा। हम उनके नीचे दबेंगे नहीं, उन्हें देखकर विचलित नहीं होंगे, बल्कि जागरूक होकर उनका सामना करेंगे।

अंततः अष्टावक्र का संदेश अत्यंत सीधा है विचार ही बंधन है और विचार ही मुक्ति है। यदि विचार मायाजाल बन जाए, तो हम भटक जाते हैं। यदि विचार आत्मबोध की ओर मुड़ जाए, तो वही मार्ग बन जाता है। इसीलिए आवश्यक है कि हम बार-बार स्वयं को स्मरण दिलाएं।

हम केवल भूमिका नहीं हैं, केवल उपलब्धि नहीं हैं, केवल दुःख नहीं हैं, केवल इच्छा नहीं हैं। हम चेतना हैं, साक्षी हैं, शुद्ध बोध हैं।

आत्मा साक्षी विभुः पूर्ण एको मुक्तश्चिदक्रियः।
असङ्गो निस्पृहः शान्तो भ्रमात् संसारवानिव।।

आत्मा व्यापक है, पूर्ण है, एक है, मुक्त है, चैतन्य स्वरूप है, अक्रिय है, असंग है, निस्पृह है, शांत है। केवल भ्रम के कारण वह संसार में फंसी हुई प्रतीत होती है।

इसलिए साधना का सार बाहर भागना नहीं, भीतर जागना है। जिस दिन यह जागरण प्रारम्भ हो जाता है, उसी दिन से जीवन का भार हल्का होने लगता है। तब हम संसार में रहते हुए भी संसार से परे होने का स्वाद चखने लगते हैं।

यही वास्तविक स्वतंत्रता है, यही शांति है, यही आनन्द है।

सृष्टि में नवीनता, सृजन, विकास, प्रेम, आनन्द इत्यादि का शुद्धतम स्वरूप 'काम-शक्ति' है। जीवन में चाहे आध्यात्मिकता अथवा भौतिकता की उच्चता को प्राप्त करना चाहते है तो सर्वप्रथम 'काम-शक्ति' अर्थात् आकर्षण, सम्मोहन, प्रेम, यौवन,रस इत्यादि तत्वों से स्वयं को सरोबार करना होगा।

चाहे स्त्री हो या पुरुष जीवन के किसी भी क्षेत्र में उच्चता प्राप्त करने के लिये काम तत्व से परिपूर्ण होना आवश्यक है।

मदनाक्षी काम स्वरूपा अप्सरा हैं, और इसकी सिद्धि साधक के व्यक्तित्व में काम भाव पूर्ण रूप से भर देती है, जिससे उसका अनंग काम तत्व सहस्र गुना हो जाता है।

प्रत्येक साधना को साधक अपनी सुविधा अथवा अपनी आवश्यकता के अनुसार वर्ष पर्यन्त विभिन्न मुहूर्तों पर सम्पन्न कर सकता है, फिर भी हमारे ऋषि-मुनियों ने साधनाओं को अल्प प्रयास में सिद्ध करने हेतु कुछ विशिष्ट मुहूर्तों के बारे में ग्रंथों में उल्लेख किया है। ऋषियों को इस बात की जानकारी थी कि मानव जाति अपने विकास क्रम में इतनी अधिक व्यस्त हो जाएगी की निरन्तर पूजा-साधना उनके लिये संभव नहीं होगा।

मानव जाति के इस विकास क्रम को जानकर ही हमारे ऋषियों ने पर्वों, तिथियों और कुछ ब्रह्माण्डीय घटनाओं पर विशेष साधना का उल्लेख किया। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि कालचक्र के खण्डों में कुछ क्षण इतने विशेष होते है कि उस समय किसी शक्ति के लिए किया गया आह्वान अन्य काल में किये गये आह्वान से कई गुना अधिक तेजस्वी, शक्तिशाली होता है। साधक के इस आह्वान को दैवीय शक्तियां स्वीकार कर उसके साथ सांमजस्य स्थापित करती है और उसे जीवन में वो सब कुछ प्रदान करती है, जिसका साधक हकदार होता है, जिसके लिये साधक निरन्तर प्रयत्नशील होता है।

प्रत्येक वर्ष हमें कई सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण दिखाई देते हैं जो पूर्ण (खग्रास) अथवा आंशिक (खंडग्रास) होते हैं । प्रत्येक ग्रहण पृथ्वी पर किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में ही दिखाई देता है परन्तु इसका प्रभाव समूची सृष्टि पर होता है।

आने वाले दिनों में दो महत्वपूर्ण ग्रहण घटित होने वाले हैं। दिनांक 12 अगस्त 2026 श्रावण मास अमावस्या को सूर्य ग्रहण और इसी क्रम में **28 अगस्त 2026** श्रावण पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण होगा।

ग्रहण का शाब्दिक अर्थ ही स्वीकार करना, आत्मसात करना या लेना है स्वयं में ज्ञान के प्रकाश को प्रज्वलित करने में ग्रहण काल विशेष रूप से प्रभावी सिद्ध होता है।

निखिल मंत्र विज्ञान पत्रिका का सदैव यही प्रयास रहा है कि निखिल साधक-शिष्य श्रेष्ठ और अद्भुत ही ग्रहण करें। पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में लगातार प्रयास करता

रहता है कि साधकों को विशिष्ट पर्वों, उत्सवों, त्यौहारों और श्रेष्ठ मुहूर्तों में विशिष्ट साधनाएं उपलब्ध कराई जाए, जिससे उनके जीवन स्तर में, आध्यात्मिक स्तर में, भौतिक स्तर में उन्नति हो।

अपने प्रयासों के इसी क्रम में गुरुदेव के आदेशानुसार सूर्यग्रहण के विशेष साधनात्मक काल हेतु **'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना (जुलाई 2026)'** की साधना सामग्री प्राण प्रतिष्ठित किया गया है तथा चन्द्र ग्रहण हेतु **'मदनाक्षी अप्सरा साधना सामग्री'** को प्राण प्रतिष्ठा युक्त किया गया है।

मदनाक्षी अप्सरा

रम्भा, ऊर्वशी, मेनका, तिलोत्तमा, सुकेशी, इत्यादि अप्सराओं के सम्बन्ध में उल्लेख बहुत सारे ग्रंथों में तोड़-मरोड़ कर आया हुआ है, लेकिन **'मदनाक्षी'** के सम्बन्ध में बहुत कम वर्णन है, क्योंकि इस साधना की विशेष प्रक्रिया है, इसके कुछ विशेष गुण हैं, और इसकी साधना पूरे वर्ष नहीं की जा सकती।

यह साधना साधक अकेले बैठ कर ही सम्पन्न करें, और जहां तक संभव हो, एकान्त स्थान में सम्पन्न करनी चाहिए, और साधना के सम्बन्ध में किसी से चर्चा नहीं करनी चाहिए। सिद्धि प्राप्त होने से पूर्व ही साधना के सम्बन्ध में रहस्य प्रकट करने से फल प्राप्ति नहीं होती है।

मदनाक्षी अप्सरा 5 दिवसीय सायंकालीन साधना है जिसे सूर्यास्त के पश्चात् सम्पन्न किया जाता है। **श्रावण पूर्णिमा 28 अगस्त 2026 को चन्द्र ग्रहण के साधनात्मक मुहूर्त (प्रातः 6:53 से 12:31 तक) के मध्य प्रारम्भ कर शेष 4 दिवस सांयकालीन ही सम्पन्न करें।** विशेष साधनात्मक मुहूर्तों के अतिरिक्त मदनाक्षी अप्सरा साधना को **किसी भी पूर्णिमा** से प्रारम्भ किया जा सकता है।

इस साधना हेतु कुल चार सामग्री आवश्यक है -

1. मदनाक्षी चैतन्य गुटिका, 2. 21 वाग्भव बीज, 3. आठ अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न, 4. नव चेतना प्राकाम्य। इसके अतिरिक्त साधना में प्रतिदिन पुष्प, चावल (अक्षत), सुपारी, सिन्दूर, काजल, इत्र, लाल वस्त्र, पुष्प माला आवश्यक है।

इसी साधना सामग्री से 5 दिन नित्य पूर्ण विधि-विधान से साधना सम्पन्न करनी है।

साधना विधान

साधक स्नान कर, सुन्दर वस्त्र पहनें, अपने कपड़ों पर इत्र इत्यादि सुगन्धित द्रव्य अवश्य लगाएं, अपने सामने एक पात्र में लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य में **'मदनाक्षी चैतन्य गुटिका'** स्थापित करें, सुगन्धित धूप, दीप जलायें और पूजा स्थान का द्वार बन्द कर साधना प्रारम्भ करें, स्वयं के सिन्दूर का तिलक लगायें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि, **'मैं (अपना नाम) अपनी समस्त मनोकामनाओं की सिद्धि हेतु, लाल वस्त्र धारण किये हुए, रत्न आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्न वदना, अरुण आभा-युक्त, सुन्दरतम त्रिपुर मदनाक्षी का ध्यान करते हुए, साधना सम्पन्न करता हूं।'**

अब साधक इत्र से मदनाक्षी गुटिका को स्नान कराएं, फिर उसे पुनः स्थापित करते हुए, उस पर सिन्दूर का लेपन करें, तत्पश्चात् सुगन्धित पुष्प चढ़ायें, स्वयं सुगन्धित पुष्पों की माला पहनें।

अब **नव चेतना प्राकाम्य** स्थापित करें और उसके चारों ओर **अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न** रखें, ये रत्न त्रिपुर मदनाक्षी की आठ सहयोगी अप्सराओं के प्रतीक हैं, ये आठ सहयोगी अप्सराएं हैं -

1. उर्वशी, 2. मेनका, 3. रम्भा, 4. धृताची, 5. पुंजकस्थला, 6. सुकेशी, 7. मंजुघोषा, 8. महारंगवती। प्रत्येक के आगे एक-एक पुष्प रखते हुए आह्वान करें -

क्लीं उर्वशी आवाह्यामि
क्लीं मेनका आवाह्यामि
क्लीं रम्भा आवाह्यामि
क्लीं धृताची आवाह्यामि
क्लीं पुंजकस्थला आवाह्यामि
क्लीं सुकेशी आवाह्यामि
क्लीं मंजुघोषा आवाह्यामि
क्लीं महारंगवती आवाह्यामि

अब साधक वीर मुद्रा में बैठकर 21 वाम्भव बीजों से त्रिपुर मदनाक्षी की शक्ति सोलह योगिनियों और पांच बाणों का आह्वान करें, यह आह्वान साधना में प्रमुख है, इन शक्तियों की स्थापना होने पर जरा, पीड़ा, अपमृत्यु, भय, भूत-प्रेत की बाधा का पूर्ण नाश हो जाता है, और साधना में किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता है, तत्पश्चात् पांच बाणों का आह्वान

करना चाहिए, जिससे साधक शक्ति सम्पन्न होने की क्रिया प्रारम्भ कर देता है, इन सोलह योगिनियों का पूजन निम्न प्रकार से करते हुए, अपने सामने एक-एक वाग्भव बीज स्थापित करना है -

ऐं गजाननना नमः	*ऐं सिंहमुख्री नमः*
ऐं वाराही नमः	*ऐं मयूरी नमः*
ऐं विकटाननना नमः	*ऐं विकटलोचना नमः*
ऐं शुष्कोदरी नमः	*ऐं सुराप्रिया नमः*
ऐं रक्ताक्षी नमः	*ऐं पाशहस्ता नमः*
ऐं प्रचण्डा नमः	*ऐं चण्डविक्रमा नमः*
ऐं पापहन्त्री नमः	*ऐं तापनी नमः*
ऐं विद्युत्प्रभा नमः	*ऐं कामाक्षी नमः*

अब मदनाक्षी के पांच बाणों का आह्वान किया जाता है, इन बाणों की शक्ति ही मदनाक्षी की शक्ति है -

द्रां द्रावण बाणाय नमः
ब्लूं मोहन बाणाय नमः
द्रीं शोषण बाणाय नमः
सः उन्मादन बाणाय नमः
क्लीं तापन बाणाय नमः

इन बाणों का मंत्र जप होने से साधक में द्रावण, शोषण, तापन, मोहन तथा उन्मादन तत्व आ जाता है, एक सुगन्ध वातावरण में छा सी जाती है, अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए प्रत्येक बाण मंत्र का 11-11 बार जप करना चाहिए।

यह पूजन क्रम पूरा हो जाने के पश्चात् मदनाक्षी का मन्त्रानुष्ठान सम्पन्न किया जाना चाहिए, शास्त्रों के अनुसार किसी विशेष इच्छा पूर्ति हेतु भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है और जीवन में पूर्ण रूप से मदन सुख, माया सुख, ऐश्वर्य सुख, सहयोग हेतु भी मदनाक्षी अप्सरा साधना सम्पन्न की जाती है।

मदनाक्षी अप्सरा मंत्र

।।क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर मदनाक्षी म दीप्सितां योषितं देहि वांछित कुरु स्वाहा।।

इस मंत्र का 108 बार जप वीर मुद्रा में ही करना है, और फिर जब मंत्र जप अनुष्ठान पूरा हो जाय तो नेत्र बन्द कर अपने हाथ ऊंचे कर चुपचाप ध्यान मुद्रा में बैठे रहें, कुछ विशेष चेतनी क्रियाओं का अनुभव होता है, और ये सब साधना में सफलता की प्रतीक हैं।

यह पूजा विधान पांच दिन इसी रूप में करना है, पुष्प प्रतिदिन नये लायें, जब पांच दिन पूर्ण हो जायें तो मदनाक्षी अप्सरा के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व में सम्मोहकता और आकर्षण का विकास होता है। आपके जीवन में रस का प्रवाह बढ़ने लगता है, आपकी वाणी रसयुक्त होने से भावनात्मक एवं व्यवसायी दोनों ही क्षेत्रों में आप सफलता प्राप्त करते है। मदनाक्षी अप्सरा साधना में सफलता प्राप्त करने हेतु इस साधना को गुप्त रूप से सम्पन्न करें तथा साधनात्मक अनुभव गुरुदेव के अतिरिक्त किसी से व्यक्त नहीं करें।

जीवन में भौतिक सुखों की इच्छा रखने वाले, पूर्ण आनन्द से जीवन जीने की इच्छा रखने वाले साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. 750/-

मदनाक्षी अप्सरा दीक्षा

मदनाक्षी अप्सरा अतिविशिष्ट अप्सरा है। मदनाक्षी अप्सरा में लक्ष्मी तत्त्व, आकर्षण शक्ति तथा ज्ञान का अद्भुत समन्वय है। सद्गुरुदेव से मदनाक्षी अप्सरा दीक्षा ग्रहण कर साधना सम्पन्न करने से -

- **मदनाक्षी अप्सरा साधना एवं दीक्षा से साधक हर समय अपने आपको यौवनमय, रसयुक्त और सौन्दर्यप्रिय रहता है।**
- **भौतिक समृद्धि के साथ ही व्यक्तित्व में आकर्षण और आत्मविश्वास का भी विकास होता है।**
- **मदनाक्षी अप्सरा धन प्राप्ति के नवीन अवसर के साथ ही साथ आकस्मिक लाभ तथा गुप्त संसाधनों को प्रदान करती है।**
- **मदनाक्षी अप्सरा साधक की वाणी में प्रभावशीलता तथा सम्मोहनात्मक का विकास करती है।**
- **साधक की तार्किक शक्ति प्रबल होती है। जिससे निर्णय क्षमता का विकास होता है।**

- मदनाक्षी अप्सरा दीक्षा

(प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

श्रीकृष्णः जीवन के हर रंग का परम सत्य

सनातन धर्म में यदि कोई चरित्र पूर्ण है तो वे श्रीकृष्ण हैं। वे केवल एक नाम नहीं हैं, बल्कि एक संपूर्ण दर्शन हैं, जिनमें इंद्रधनुष के सभी रंग स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं।

वे बाल्यकाल में माखनचोर हैं, तो युवावस्था में रासबिहारी और कुरुक्षेत्र के मैदान में योगेश्वर, जो अर्जुन के मोह को चीरकर गीता का अमृत वचन सुनाते हैं। यह विरोधाभास ही तो कृष्ण की महिमा है, कि वे बांसुरी भी बजाते हैं और सुदर्शन चक्र भी धारण करते हैं, वे प्रेम के प्रतीक भी हैं और धर्म के रक्षक भी।

गोकुल की गलियों में जो कृष्ण नंद यशोदा के आंगन में खेलते हैं, वे वही परब्रह्म हैं जिनके मुख में यशोदा को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के दर्शन होते हैं। यह लीला ही तो कृष्ण तत्व की गूढ़ता है, कि परमात्मा स्वयं को इतना सुलभ बना देते हैं कि एक मां अपने पुत्र को दंड देने के लिए रस्सी लेकर दौड़ती है, और वही पुत्र समस्त सृष्टि का आधार है। भागवत पुराण में यह कथा बार बार कहती है कि **ईश्वर दूर नहीं, वे तो घर के आंगन में, गाय के गोठ में, यमुना के तट पर विराजमान हैं, बस देखने वाली दृष्टि चाहिए।**

राधा और कृष्ण का सम्बन्ध इस भक्ति परम्परा में प्रेम के सर्वोच्च आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित है। यह प्रेम शारीरिक आकर्षण नहीं, यह जीवात्मा और परम ात्मा के मिलन की वह लालसा है जिसे शास्त्रों ने विरह और मिलन दोनों में समान रूप से पूजनीय माना है। **राधा की व्याकुलता, उनका विरह, यह दर्शाता है कि भक्ति में प्रतीक्षा भी उतनी ही पवित्र है जितना मिलन, क्योंकि सच्चा प्रेमी प्रतीक्षा में भी प्रियतम का स्मरण करते हुए स्वयं को शुद्ध करता जाता है।**

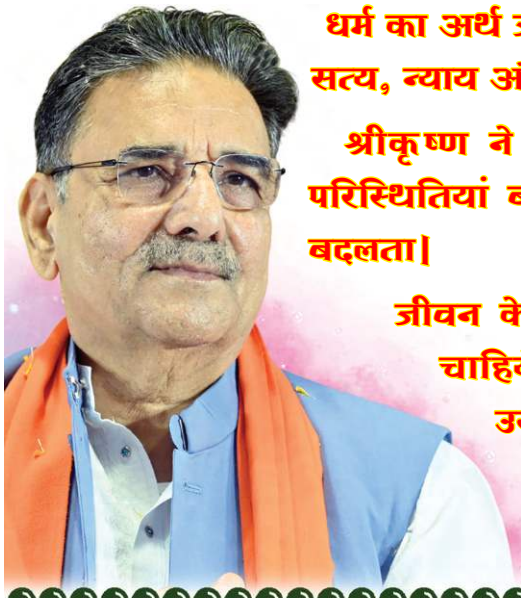

धर्म का अर्थ जड़ नियमों का पालन करना नहीं है... धर्म वह है जो सत्य, न्याय और लोककल्याण की रक्षा करे।

श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध में यही स्पष्ट किया है कि परिस्थितियां बदल सकती हैं, किन्तु धर्म का उद्देश्य कभी नहीं बदलता।

जीवन के कर्मपथ पर मनुष्य को अपनी भूमिका पहचानी चाहिये, अलग-अलग परिस्थितियों और स्थानों पर उसका स्वरूप हो सकता है परन्तु उसका ध्येय एक ही होना चाहिये - सत्य, न्याय और लोक कल्याण...

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

गोवर्धन पर्वत की लीला में कृष्ण ने इन्द्र के अहंकार को चूर करके यह सिखाया कि **सच्ची शक्ति बल में नहीं, विनम्रता और सामूहिक सेवा में है।** जब पूरा ब्रज इन्द्र के प्रकोप से भयभीत था, तब कृष्ण ने अपनी कनिष्ठा अंगुली पर पर्वत उठाकर यह प्रमाणित किया कि **जो अहंकार से रहित होकर धर्म के मार्ग पर चलता है, प्रकृति स्वयं उसकी रक्षा करती है।** यह प्रसंग आज भी हमें स्मरण कराता है कि प्रकृति की पूजा, गौ माता की सेवा, और सामूहिक एकता ही वह शक्ति है जो किसी भी संकट से पार पाने में सक्षम है।

कुरुक्षेत्र में जब अर्जुन मोहग्रस्त होकर गांडीव त्यागने को उद्यत हो जाते हैं, तब कृष्ण जो वचन कहते हैं वे केवल एक युद्ध की प्रेरणा नहीं, समस्त मानव जाति के लिए कर्मयोग का शाश्वत सूत्र हैं। श्रीमद् भगवद्गीता में वे कहते हैं,

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

इस श्लोक में समस्त जीवन दर्शन समाहित है। कृष्ण यह नहीं कहते कि **फल की चिंता मत करो इसलिए कि फल महत्वहीन है, वे यह कहते हैं कि फल की आसक्ति ही वह बंधन है जो कर्ता को कर्म से बांधती है। जब मनुष्य अपने कर्तव्य को निष्काम भाव से करता है, तब वह कर्म भी योग बन जाता है और यही स्थितप्रज्ञ की अवस्था है।**

कृष्ण की एक विशेषता यह भी है कि वे स्वयं को कहीं भी स्थिर नहीं होने देते, वे सदैव गतिशील हैं, चाहे वह मथुरा से वृंदावन जाना हो, या वृंदावन से द्वारका, या फिर कुरुक्षेत्र के मैदान में सारथी बनकर खड़ा होना। यह गतिशीलता जीवन का भी सत्य है, कि स्थिरता मोह है और गति ही धर्म है, जब तक वह गति कर्तव्य और धर्म के अनुरूप हो।

द्वारकाधीश के रूप में कृष्ण एक कुशल राजनीतिज्ञ, एक न्यायप्रिय शासक और एक स्नेहिल सखा के रूप में प्रकट होते हैं। सुदामा के प्रसंग में जब उनका बचपन का मित्र दरिद्रता में भी उनसे मिलने आता है, कृष्ण स्वयं दौड़कर उसका स्वागत करते हैं, यह दिखाते हुए कि **परमात्मा के लिए भक्त की भावना ही सर्वोपरि है, न कि उसका वैभव या दरिद्रता।**

कृष्ण की लीला हमें यह भी सिखाती है कि **जीवन में विरोधाभासों को स्वीकार करना ही परिपक्वता है।** वे रणछोड़ भी हैं और महाभारत के सूत्रधार भी, वे प्रेमी भी हैं और योगी भी, वे बालक भी हैं और परब्रह्म भी। यह सम्पूर्णता ही सनातन धर्म की वह दृष्टि है जो जीवन को खंडों में नहीं, समग्रता में देखने की शिक्षा देती है।

अंततः कृष्ण भक्ति का सार यही है कि **जीवन के प्रत्येक क्षण में, चाहे वह सुख हो या दुःख, संयोग हो या वियोग, कर्तव्य हो या प्रेम, उस परम तत्व का स्मरण बना रहे।** जैसे गीता में स्वयं कृष्ण कहते हैं कि **जो अंत समय में मेरा स्मरण करते हुए शरीर त्यागता है, वह मुझे ही प्राप्त होता है, वैसे ही भक्त का सम्पूर्ण जीवन ही उस स्मरण की साधना बन जाना चाहिए।**

मृदुल हंसने वाले, तेज से चमकने वाले, सदैव लोगों का चित्त आकर्षित करने वाले, अत्यंत मधुर बांसुरी बजाने वाले बालकृष्ण आपका मैं नित्य स्मरण करता हूं, मेरा यह पूजन आप स्वीकार करें -

जन्माष्टमी पूजन प्रत्येक गृहस्थ को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण का पूजन पूरे परिवार सहित सम्पन्न करना चाहिये यदि ऐसा संभव नहीं हो तो पति-पत्नी दोनों मिलकर भी यह पूजन सम्पन्न कर सकते हैं। जन्माष्टमी के लिए निर्धारित भगवान श्रीकृष्ण के विशिष्ट पूजन की सभी सामग्री एकत्र कर लें। सायं जब भी आप पूजन करना चाहें, स्नान करके पूजा कक्ष में पीला आसन बिछाकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। अपने सामने लकड़ी के बाजोट या चौकी के ऊपर पीला वस्त्र बिछा दें, उस पर भगवान श्रीकृष्ण का चित्र अथवा उनकी प्रतिमा स्थापित करें। यदि संभव हो तो श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप चित्र एक झूले में स्थापित करें। श्रीकृष्ण पूजन में नैवेद्य पंसेरी, फल तथा पंचामृत आवश्यक हैं, इसके अतिरिक्त जन्माष्टमी पूजन में लड्डू का भोग भी रख सकते हैं।

पूजन विधान

सर्वप्रथम गुरुदेव का विधिवत् पूजन सम्पन्न करें। गुरु पूजन ध्यान के पश्चात् विधिवत् श्रीकृष्ण पूजन हेतु सर्वप्रथम गणपति प्रार्थना से प्रारम्भ करें।

प्रार्थना

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प तथा कुंकुम लें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भाद्रपद मासे कृष्ण पक्षे अष्टम्यामं तिथौ शुक्रवासरे अमुक गोत्रीयः (गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) अद्य भगवतो कृष्णस्य प्रीत्यर्थं यथा मिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

जल को भूमि पर छोड़ दें।

कलश पूजन

कलश में जल भरकर अपनी दायीं ओर स्थापित करें, उसमें वरुण देवता का आह्वान करें -

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

इसके बाद *'वं वरुणाय नमः'* मंत्र बोलते हुए गन्ध, अक्षत व पुष्प को कलश में डालकर निम्न मंत्र बोलते हुए तीर्थों का आह्वान करें -

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

पवित्रीकरण

इसके बाद पंचपात्र में जल को आचमनी से बांए हाथ में लेकर, दायें हाथ से शरीर के ऊपर छिड़कते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर सामने चौकी या झूले पर भगवान श्रीकृष्ण का सुन्दर विग्रह स्थापित करें तथा निम्न प्रकार षोडशोपचार पूजन करें –

ध्यान

वंशी विभूषित करान्नव नीलदा भात्,
पीताम्बरादरुण बिम्ब फलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादर बिम्ब नेत्रात्,
कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने।।
श्रीकृष्णाय नमः ध्यानं समर्पयामि।

आसन

पुष्प लेकर किसी थाली में आसन के रूप में स्थापित कर लें और उस पर लघु श्रीकृष्ण विग्रह (धातु या प्रस्तर मूर्ति) स्थापित कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

श्रीकृष्णाय नमः आसनं समर्पयामि।

पाद्य

दो आचमनी जल श्रीकृष्ण विग्रह पर चढ़ा दें –

श्रीकृष्णाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य

किसी पात्र में जल लेकर, उसमें कुंकुम तथा अक्षत मिलाकर अर्घ्य प्रदान करें –

श्रीकृष्णाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीय

आचमनी से तीन बार जल विग्रह पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

श्रीकृष्णाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्क

किसी पात्र में मधु, घृत, दधि मिलाकर श्रीकृष्ण विग्रह पर चढ़ाएं –

इदं मधुपर्कं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

स्नान

आचमनी से जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र उच्चरित करें –

श्रीकृष्णाय नमः स्नानं समर्पयामि।

दुग्ध स्नान

श्रीकृष्णाय नमः दुग्ध स्नानं समर्पयामि।

दधि स्नान

श्रीकृष्णाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि।

घृत स्नान

श्रीकृष्णाय नमः घृत स्नानं समर्पयामि।

मधुस्नान

श्रीकृष्णाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि।

शर्करा स्नान

श्रीकृष्णाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।
श्रीकृष्णाय नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

इसके पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण के विग्रह को शुद्ध जल से स्नान कराकर पौंछ लें।

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण को शुद्धोदक स्नान कराने के साथ-पूजन सम्पन्न होता है इसके पश्चात् निम्न प्रकार से विग्रह का पूजन सम्पन्न करें।

वस्त्र

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए उत्तम कोटि का पीला वस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्र भगवान को पहना दें तथा उनके स्थापन निमित्त जो आसन है, उस पर कृष्ण विग्रह स्थापित करें –

श्रीकृष्णाय नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

आभूषण

हार, मुकुट-मणि, कड़े आदि गहने भगवान को पहनाते हुए इस मंत्र को बोलें –

इदानीं भूषणानि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

गन्ध

केशर, कपूर मिश्रित चन्दन लेकर भगवान श्रीकृष्ण के मस्तक पर लगावें –

इदं गन्धं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

अक्षत

हल्दी या कुंकुम से रंगे चावल विग्रह पर चढ़ाएं –

श्रीकृष्णाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पहार

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित पुष्प तथा पुष्प माला विग्रह पर चढ़ाएं और निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

इदानीं पुष्पाणि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

तुलसी दल

तुलसी दल पर चन्दन लगाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं –

इदं सचन्दनं तुलसीदलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

धूप

निम्न मंत्र बोलते हुए धूप अर्पण करें –

इदं धूपं श्रीकृष्णाय आघ्रापयामि नमः।

दीप

श्रीकृष्ण को दीप दिखाएं –

इदं दीपं श्रीकृष्णाय दर्शयामि नमः।

नैवेद्य

स्वच्छ थाली में नैवेद्य सजाकर भगवान के सामने रखें, साथ में एक गिलास पानी भी रखें और निम्न मंत्र भी बोलें –

ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।

उसके बाद इन मंत्रों से पांच बार आचमन करायें –

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

फल

अनेक प्रकार के ताजे और मीठे फल थाली में सजाकर भगवान को अर्पित करें –

श्रीकृष्णाय नमः फलम् समर्पयामि।

ताम्बूल

मुख शुद्धि के लिए ताम्बूल भगवान को अर्पित करें –

एतत् ताम्बूलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

आरती

इसके पश्चात् श्रीकृष्ण आरती सम्पन्न करें।

पुष्पांजलि

आरती के बाद फिर दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित करें –

श्रीकृष्णाय नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।

नमस्कार

दोनों हाथ जोड़ें –

श्रीकृष्णाय नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारम् समर्पयामि।

अब निम्न कृष्ण मंत्र का अपनी माला से तीन माला मंत्र जप करें –

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।।

विशेषार्घ्य

आचमनी में अक्षत, पुष्प एवं कुंकुम लेकर निम्न सन्दर्भ बोलते हुए भगवान को अर्पित करें –

अनया पूजया श्रीकृष्णः परमात्मा प्रीयन्ताम्।
ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण का पूजन सम्पन्न करें। इसके बाद अपने समस्त स्वजनों के साथ प्रसाद ग्रहण करें।

संतान : जीवन-चक्र का दिव्य आरम्भ

सनातन धर्म में मानव जीवन को सोलह संस्कारों से संस्कारित एक दिव्य जीवन-यात्रा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। इन संस्कारों में पाणिग्रहण (विवाह) संस्कार का वास्तविक उद्देश्य केवल दाम्पत्य-सुख प्राप्त करना नहीं, बल्कि धर्म, संस्कृति और वंश की अखंड परंपरा को आगे बढ़ाना है। इसी पाणिग्रहण संस्कार से जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ होता है और संतान के जन्म के साथ सृष्टि का वही सनातन जीवन-चक्र पुनः गतिमान हो जाता है।

जब एक शिशु जन्म लेता है, तब केवल उसका ही जन्म नहीं होता, बल्कि एक स्त्री माता और एक पुरुष पिता के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में संतान को केवल परिवार का नया सदस्य नहीं, बल्कि धर्म, संस्कार और जीवन की निरंतरता का सजीव आधार माना गया है।

भारत देश में हर दस विवाहित जोड़ों में से एक निःसंतानता की समस्या से ग्रसित है। यह केवल एक चिकित्सीय आंकड़ा नहीं, बल्कि लाखों परिवारों की भावनात्मक पीड़ा का प्रतिबिंब है।

हमारे भीतर दो मूलभूत इच्छाएं होती हैं पहली पुत्रेषणा, अर्थात् संतान प्राप्ति की इच्छा और दूसरी वित्तेषणा अर्थात् धन अर्जित करने की इच्छा। ये दोनों इच्छाएं एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका परिवार बढ़े और उस परिवार के पालन-पोषण के लिए उसके पास पर्याप्त साधन हों। धन का वास्तविक प्रयोजन केवल स्वयं का सुख नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ी के जीवन का निर्माण है।

संतान: जीवन की निरंतरता का प्रतीक

संतान केवल परिवार में एक नए सदस्य का आगमन नहीं है। वह जीवन की निरंतरता का प्रतीक है। इसी कारण पुत्रेषणा को मनुष्य की सबसे स्वाभाविक इच्छाओं में स्थान दिया गया है। शरीर नश्वर है, पर जीवन की धारा रुकनी नहीं चाहिए। इसी भावना से कहा गया है **'आत्मरक्षा परमो धर्मः।' आत्मा अपने अस्तित्व को निरंतर बनाए रखना चाहती है।** जब माता-पिता इस संसार से विदा हो जाते हैं, तब उनकी संतान ही उनके अस्तित्व, उनके संस्कार और उनके स्वप्नों का प्रतिनिधित्व करती है।

संतान के जन्म के साथ केवल एक शिशु जन्म नहीं लेता, बल्कि एक पुरुष पिता बनता है और एक स्त्री माता बनती है। यही वह क्षण है, जहां दाम्पत्य का वास्तविक परिपक्व होना आरम्भ होता है।

दाम्पत्य की परिपक्वता

विवाह का प्रथम चरण पति-पत्नी के परस्पर प्रेम का होता है, किन्तु संतान के जन्म के बाद वही सम्बन्ध उत्तरदायित्व में परिवर्तित हो जाता है। अब दोनों मिलकर एक नई सृष्टि का पालन-पोषण करते हैं। वे अपने दायित्व बांटते हैं, एक-दूसरे का सहयोग करते हैं, त्याग करना सीखते हैं और अपने सुख से अधिक संतान के भविष्य को महत्त्व देने लगते हैं। वास्तव में संतान दाम्पत्य को परिपक्व बनाती है।

भारतीय संस्कृति में संतान: धर्म का आधार

इसी कारण भारतीय संस्कृति में संतान को केवल जैविक उपलब्धि नहीं, बल्कि धर्म का आधार माना गया। हमारे यहां संतान प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ की परंपरा रही है।

वैवस्वत मनु, जिन्हें वर्तमान मन्वंतर का आदि पुरुष माना जाता है, संतान की इच्छा रखते थे। उन्होंने अपने कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ के मार्गदर्शन में मित्र-वरुण यज्ञ का आयोजन किया। मनु योग्य पुत्र चाहते थे जिससे उनका वंश आगे बढ़े, जबकि उनकी पत्नी श्रद्धा के मन में पुत्री की इच्छा थी। यज्ञ के समय उन्होंने गुप्त रूप से होतृ ऋषि से कन्या प्राप्ति की

कामना की। समय आने पर एक अत्यंत सुंदर कन्या का जन्म हुआ, जिसका नाम इला रखा गया।

मनु चिंतित हुए, क्योंकि यज्ञ पुत्र-प्राप्ति के उद्देश्य से किया गया था। तब महर्षि वशिष्ठ ने अपने तपोबल तथा भगवान विष्णु की कृपा से इला को पुरुष बना दिया। वही आगे चलकर सुद्युम्न कहलाए। यह प्रसंग महाभारत में वर्णित है।

यह कथा हमें केवल एक चमत्कार नहीं बताती, बल्कि यह समझाती है कि भारतीय संस्कृति के गृहस्थ जीवन में संतान का महत्त्व कितना गहरा था। वंश की निरंतरता को धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया।

संतान-प्रेम: सर्वोच्च निःस्वार्थ प्रेम

प्रेम की वास्तविक अनुभूति उस समय होती है, जब संतान का जन्म होता है। उससे पूर्व का प्रेम प्रायः व्यवहार पर आधारित होता है। लेन और देन का, अपेक्षाओं और प्रत्याशाओं का। किंतु **संतान के साथ जो प्रेम होता है, वह अटूट होता है। वहां कोई शर्त नहीं होती, कोई प्रतिफल की अपेक्षा नहीं होती; वहां केवल मुक्त भाव से देना होता है। माता-पिता अपना समय, अपना सुख, अपना श्रम और अपना जीवन तक संतान के लिए समर्पित कर देते हैं।**

श्रीकृष्ण हमारे धर्म में प्रेम के सर्वोच्च प्रतीक हैं और प्रेम का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप माता-पिता और संतान के संबंध में ही प्रकट होता है। यही कारण है कि श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप बाल गोपाल का सनातन धर्म में बहुत महत्व है। श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप मात्र पूजन-साधना नहीं है, बल्कि उस दिव्य प्रेम और उत्तरदायित्व को जीवन में धारण करना है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शास्त्र केवल संतान की नहीं, बल्कि दिव्य संतान की कामना करते हैं। वेदों की प्रार्थना है कि संतान तेजस्वी, आयुष्मान, धर्मपरायण, विद्वान और कुल का गौरव बढ़ाने वाली हो।

इसीलिए भारतीय परंपरा में यह कहा गया है कि केवल जन्म देना पर्याप्त नहीं है; संतान को संस्कार देना ही वास्तविक मातृत्व और पितृत्व है। शास्त्रों का उद्देश्य ऐसी संतान है जो माता-पिता के लिए ही नहीं, समाज और धर्म के लिए भी कल्याणकारी सिद्ध हो।

आज चिकित्सा विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है। महंगे से महंगे उपचार केंद्र और आईवीएफ जैसी आधुनिक तकनीकें निःसंतानता के उपचार का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं। वे प्रयास कर सकती हैं, साधन उपलब्ध करा सकती हैं; परंतु सफलता का अंतिम आशीर्वाद तो गोपाल जी की कृपा से ही प्राप्त होता है। जब पुरुषार्थ के साथ ईश्वर की अनुकंपा जुड़ जाती है, तभी जीवन में संतान रूपी दिव्य प्रसाद का आगमन होता है।

दूसरी बात, ऐसा नहीं है कि श्रीकृष्ण बाल स्वरूप गोपाल केवल निःसंतान दंपत्तियों के लिए ही है। जिनके घर में संतान है, परंतु वह सन्मार्ग पर नहीं चल रही है, जिनके संस्कार, अध्ययन, व्यवहार या जीवन-दृष्टि को लेकर माता-पिता चिंतित हैं, वे भी श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप गोपाल से लाभान्वित हो सकते हैं।

श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप गोपाल के पूजन का उद्देश्य केवल संतान की प्राप्ति नहीं, बल्कि संतान के जीवन में सद्बुद्धि, सदाचार, संस्कार और ईश्वर के प्रति अनुराग का जागरण भी है। इसलिए यह साधना प्रत्येक माता-पिता के लिए समान रूप से कल्याणकारी मानी गई है।

संतान गोपाल साधना का वास्तविक भाव

संतान गोपाल साधना का भी यही संदेश है। यह केवल संतान प्राप्ति की साधना नहीं है, बल्कि स्वयं को उस योग्य बनाने की साधना है कि हम एक नई चेतना का स्वागत कर सकें। संतान ईश्वर की सृष्टि है, इसलिए उसका पालन-पोषण भी ईश्वर द्वारा सौंपा गया उत्तरदायित्व है।

जब घर में संतान आती है, तब जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ होता है। पति और पत्नी अब केवल दो व्यक्ति नहीं रहते; वे सृष्टि के सह-निर्माता बन जाते हैं। उनका प्रेम उत्तरदायित्व में बदलता है, उनका जीवन केवल अपने लिए नहीं रहता और उनका प्रत्येक कर्म आने वाली पीढ़ी के निर्माण का आधार बन जाता है।

यही संतान गोपाल साधना का वास्तविक भाव है। संतान केवल जन्म न ले, बल्कि उसके माध्यम से माता-पिता का भी आध्यात्मिक और भावनात्मक पुनर्जन्म हो।

संतान बुढ़ापे की लाठी है, पर उससे भी अधिक हमारा ही प्रतिबिंब है। हम अपनी संतान में स्वयं को पुनः जन्म लेते हुए देखते हैं। हमारे संस्कार, हमारा प्रेम, हमारे स्वप्न और हमारा अस्तित्व उसी के माध्यम से आगे बढ़ता है।

जन्माष्टमी - 4 सितम्बर 2026

गोपाल संतान सप्तमी - 18 सितम्बर 2026

संतान गोपाल साधना

श्रेष्ठ-योग्य-मेधावी संतान

गृहस्थ जीवन की दृष्टि से संतान वह दिव्य प्रसाद है, जो दाम्पत्य को पूर्णता प्रदान करता है। संतान के साथ प्रेम उत्तरदायित्व बनता है, त्याग तपस्या बनता है और माता-पिता अपने ही संस्कारों को अगली पीढ़ी में जीवित होते हुए देखते हैं।

सनातन धर्म में दाम्पत्य का कर्तव्य है कि संतान सुसंस्कृत बनायें जो धर्म, संस्कृति और मानवता की ज्योति को आगे बढ़ाए।

'संतान' शब्द का ही शुद्ध रूप है 'संतति' अर्थात् जो सतत् हो। यही कारण है, संतानोत्पत्ति को हिन्दू धर्म में एक पुनीत कर्म माना गया और पुंसवन जैसे संस्कार का विधान रख कर यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया, कि उत्पन्न होने वाली संतान सुयोग्य व स्वस्थ हो।

संतानोत्पत्ति भले ही अपने स्वरूप में एक भौतिक क्रिया हो, किन्तु यह उससे कहीं अधिक मानसिक व भावनात्मक दशा है।

जिस कुल में या वंश में संतान का अभाव है वहां गृहस्थ सुख संभव नहीं है, इसलिए गृहस्थ व्यक्ति के लिए संतान प्राप्ति की प्रबल इच्छा बनती है, क्योंकि वंश वृद्धि के साथ कुल की परम्परा को और समाज की मर्यादा का पालन करने के लिए तथा पितृ मुक्ति के लिए वंश में संतान होना आवश्यक है। संतान के अभाव में नारी पूर्ण नहीं मानी जाती क्योंकि संतान को वात्सल्य का प्रतिरूप माना जाता है, संतान के अभाव में नारी की वत्सलता उद्भूत नहीं हो पाती और विशेष करके भारतीय समाज में संतान के बिना निरन्तर परिवार में अभाव खटकता ही रहता है और परिवार में मनोमालिन्य बना रहता है, संतान के बिना पति और पत्नी का अटूट प्यार का बंधन शिथिल सा होने लगता है।

संतान पुत्र हो या पुत्री कोई अन्तर नहीं होता। अपने पुत्र-पुत्री को समान समझें। उनकी देखभाल, रक्षा, पोषण और पालन माता-पिता के लिये प्रथम कर्तव्य है। संतान की रक्षा हेतु और उसके गुणों में अभिवृद्धि हेतु श्रेष्ठ संस्कार आवश्यक है और संस्कार घर में माता-पिता द्वारा प्रदान किये जाते है।

संस्कारो नाम स भवति यस्मिञ्जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य

संस्कार वह है, जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति योग्य हो जाता है।

ग्रहों का प्रभाव संतान सुख को प्रभावित करता है। संतानहीन दम्पतियों का शुक्र ग्रह अथवा मंगल दूषित रहता है। शुक्र ग्रह स्त्री की 'रज शक्ति' का एवं पुरुष की 'वीर्य शक्ति' का द्योतक है एवं जब शुक्र ग्रह किसी भी प्रकार से मंगल ग्रह के सम्पर्क में आ जाता है तो एक प्रकार से तप्त होकर नष्ट सा हो जाता है एवं संतानोत्पति में बाधा आ जाती है।

धर्मशास्त्रों में संतान-बाधा का एक कारण पितृदोष भी माना गया है...
इसलिए श्राद्ध, तर्पण और पितरों के प्रति कृतज्ञता का विधान किया गया है...

इसी प्रकार कई अन्य ग्रह बाधाओं का प्रभाव संतान के स्वास्थ्य, स्वभाव, आचार-व्यवहार पर पड़ता है।

संतान होना जीवन का सौभाग्य है इसके साथ यह भी आवश्यक है कि हमारी संतान तेजस्वी हो, गुणवान हो, पूर्ण आयु प्राप्त करें। उस पर किसी भी प्रकार का तंत्र दोष अथवा नजर का प्रभाव न हो।

संतान अपने कुल के सम्मान में अभिवृद्धि करें। इस हेतु संतान गोपाल साधना वर्ष में दो बार करना आवश्यक है।

संतान गोपाल साधना को कृष्ण जन्माष्टमी 4 सितम्बर 2026 को अथवा संतान सप्तमी 18 सितम्बर 2026 अथवा **किसी भी बुधवार** को सम्पन्न की जा सकती है।

यह प्रातः कालीन साधना है जिसे प्रातः 8:00 बजे से पूर्व सम्पन्न कर लेना चाहिए। साधना दिवस पर साधक स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करके, उत्तर दिशा की और मुख करके पीले अथवा सफेद आसन पर बैठ जाए।

साधना विधान

सर्वप्रथम पति-पत्नी स्नान कर पीला आसन बिछाकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाये और अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा दें। बाजोट पर गुरु चित्र एवं भगवान श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप चित्र स्थापित करें। घी का दीपक और अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें। बाजोट के मध्य में एक तांबे की प्लेट में **'पुत्रेष्टि यंत्र'** जो संतान गोपाल मंत्रों से अभिमंत्रित हो स्थापित करें।

सर्व प्रथम भगवान गणेश का ध्यान कर, पंचोपचार गुरु पूजन कर एक माला गुरु मंत्र का जप करें।

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना विधान प्रारम्भ करें। इस हेतु दोनों हाथ जोड़कर श्रीकृष्ण भगवान के बाल रूप का ध्यान करते हुए हुए निम्न ध्यान मंत्र का पाठ करें।

श्रीशं कमल पत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम्।
सुत सम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम्।।
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्।
यशोदाकगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम्।।
अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा।।
गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम।
पुत्र सम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपंगवम्।।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र पर पुष्प अर्पित करें।

आवाह्यामि देवेशं देवकी गर्भ संभवम्।
बालरुपधरं कृष्णं सच्चिदानन्द विग्रहम

यंत्र पर अक्षत अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

श्रीकृष्णाय नमः आवाहनं समर्पयामि

यंत्र को पंचामृत से स्थान कराते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम
श्री कृष्णाय नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि

तत्पश्चात यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराकर दूसरी प्लेट में रखे और केसर, अक्षत, पुष्प (पीले), धूप दीप से पूजन करें तत्पश्चात निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए अष्टगंध से पांच बिन्दी यंत्र पर लगाये।

ॐ गोविन्दाय नमः *ॐ गोपालाय नमः*
ॐ जन्मरहिताय नमः *ॐ नवनीत प्रियाय नमः*
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः

इसके बाद यंत्र से थोड़ी सी अष्टगंध लेकर पत्नी की नाभि पर लगा लें और पुत्रेष्टि माला को गले में धारण कर निम्न मंत्र का आधा घण्टा जप करें।

संस्कृत में संतान के लिये सुत शब्द है, जिसमें पुत्र और पुत्री में विभेद नहीं है।

मंत्र

ॐ क्लीं देवकी सुत गोविदं वासुदेव जगत्पते देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः

मंत्र जप के पश्चात् माला को अपनी संतान को धारण करा दे। यदि संतान प्राप्ति की इच्छा से साधना सम्पन्न की है तो यह प्रयोग तीन एकादशी को सम्पन्न करे। तब तक माला माता अपने गले में ही धारण रखें। तत्पश्चात माला को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

साधक पत्र

परम पूज्य गुरुदेव,

आपके श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

आज यह पत्र मैं अत्यंत भाव-विभोर होकर लिख रहा हूं। मेरे पास ऐसे शब्द नहीं हैं जिनसे आपके द्वारा प्रदान किए गए इस अनमोल सुख और आनंद के लिए अपना हृदय व्यक्त कर सकूं।

आपके श्रीचरणों में अपनी पोती के प्रथम जन्मोत्सव का सादर निमंत्रण अर्पित कर रहा हूं। 29 जून 2026 प्रथम जन्मोत्सव के पावन अवसर पर आपसे विनम्र प्रार्थना है कि कृपा पूर्वक निमंत्रण स्वीकार करें तथा अपने दिव्य आशीर्वाद से हम सभी को कृतार्थ करें। आपके शुभ आगमन से हमारा घर-परिवार धन्य हो जाएगा।

गुरुदेव, मेरा केवल एक ही पुत्र है, जिसका विवाह वर्ष 2012 में हुआ था। विवाह के पश्चात अनेक वर्षों तक संतान सुख प्राप्त नहीं हो सका। संतान के अभाव का जो दुःख, पीड़ा और मानसिक वेदना हमने, मेरी धर्मपत्नी ने, मेरे पुत्र और विशेष रूप से मेरी पुत्रवधु ने सहन की, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। अनेक उपचार हुए, आईवीएफ का भी प्रयास किया गया, परंतु सफलता प्राप्त नहीं हुई।

ऐसे कठिन समय में आपका आशीर्वाद ही था, जो वर्ष 2024 की संतान सप्तमी के पावन अवसर पर आपने हम पर असीम कृपा करते हुए मेरे पुत्र और उसकी पत्नी को श्री संतान गोपाल दीक्षा प्रदान कर मंत्र जप सम्पन्न करवाया।

आपके आदेशानुसार केवल मेरे पुत्र-पुत्रवधू ही नहीं, बल्कि मैं और मेरी धर्मपत्नी भी निरंतर श्रद्धा और विश्वास के साथ इस साधना को करते रहे।

गुरुदेव, यह सब आपकी असीम कृपा और श्रीकृष्ण के आशीर्वाद का ही प्रताप है कि इस बार आई.वी.एफ. का प्रयास पूर्णतः सफल हुआ और हमारे घर भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी कृपा बरसाते हुए एक कन्या के रूप में लक्ष्मी का आगमन कराया।

जिस घर में वर्षों तक सन्नाटा और प्रतीक्षा थी, वहां आज हंसी, आनंद और उत्सव का वातावरण है। पिछले एक वर्ष से हमारे परिवार में जो सुख और उल्लास है, वह केवल आपकी कृपा का ही फल है।

गुरुदेव, एक समय ऐसा भी था जब होली, दीपावली और अन्य पर्वों पर पड़ोस के लोग अपने पोते-पोतियों के साथ उत्सव मनाते थे और हम केवल उन्हें देखकर मन ही मन भगवान से प्रार्थना करते थे। आज वही आनंद हमारे घर में भी आपकी कृपा से प्राप्त हुआ है। यह ऋण हम जीवनभर नहीं चुका सकते।

गुरुदेव, आपके श्रीचरणों में विनम्र प्रार्थना है कि जैसे आपने हमें इस दिव्य सुख को प्रदान किया है, उसी प्रकार मेरे पुत्र को एक और संतान सुख आशीर्वाद प्रदान करें।

एक बार पुनः अपनी पोती के प्रथम जन्मोत्सव पर आपको सादर आमंत्रित करते हुए आपके शुभ आगमन एवं दिव्य आशीर्वाद की विनम्र प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आपके श्रीचरणों में सादर प्रणाम।

आपका कृतज्ञ शिष्य

जुलाई 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह जुलाई 2026 में प्रकाशित है

श्रावण सोमवार अभिषेक

(श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026)

श्रावण मास में शिव आराधना को शुभ और शीघ्र फलदायी माना जाता है। इस माह में शिव पूजा, अभिषेक, शिव स्तुति, मंत्र जप आदि का विशेष महत्व है। भगवान सदाशिव सभी सांसारिक कलह, अशांति व संकटों से रक्षा करते हैं। श्रावण मास में शिव उपासना ग्रह दोष और पीड़ा का अंत करने वाली भी मानी गई है। श्रावण सोमवार को देवाधिदेव महादेव की साधना से बाधा हरण, स्थायी लक्ष्मी, शत्रु विजय और आनन्द की प्राप्ति होती है।

श्रावण मास - रसेश्वर शिव साधना कल्प

प्रथम सोमवार - 03 अगस्त 2026 - बाधा हरण सिद्धि दिवस

द्वितीय सोमवार - 10 अगस्त 2026 - स्थायी लक्ष्मी सिद्धि दिवस

तृतीय सोमवार - 17 अगस्त 2026 - शत्रु बाधा निवारण सिद्धि दिवस

चतुर्थ सोमवार - 24 अगस्त 2026 - रसेश्वर शिव आनन्द सिद्धि दिवस

श्रावण मास में शिव आराधना को शुभ और शीघ्र फलदायी माना जाता है। इस माह में शिव पूजा, अभिषेक, शिव स्तुति, मंत्र जप आदि का विशेष महत्व है। भगवान सदाशिव सभी सांसारिक कलह, अशांति व संकटों से रक्षा करते हैं। श्रावण मास में शिव उपासना ग्रह दोष और पीड़ा का अंत करने वाली भी मानी गई है। श्रावण सोमवार को देवाधिदेव महादेव की साधना से बाधा हरण, स्थायी लक्ष्मी, शत्रु विजय और आनन्द की प्राप्ति होती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 30)

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना

(सूर्य ग्रहण/हरियाली अमावस्या - 12 अगस्त 2026 अथवा किसी भी अमावस्या)

कीलन का तात्पर्य है, एक बन्धन। जिस प्रकार एक खूंटे से बंधा पशु एक सीमा से आगे नहीं बढ़ सकता, खूंटे से गले तक की रस्सी किसी के लिए छोटी हो सकती है और किसी के लिए बड़ी, परन्तु बन्धन तो बन्धन ही है। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की शक्तियों का कीलन हो जाता है तो वह एक सीमा तक ही सफलता प्राप्त कर सकता है। उसके आगे पर अपने सम्पूर्ण प्रयास कर भी नहीं बढ़ पाता है।

यह कीलन उसके कर्मों के कारण, उसके दोषों के कारण, उस पर किये गये किसी तांत्रिक प्रयोगों द्वारा अथवा अन्य किसी कारण से हो जाता है और जब तक यह दोष दूर नहीं हो जाता तब तक वह कितना ही प्रयास करे, उसके कार्य पूर्ण सफल नहीं हो पाते। किसी भी प्रकार के कीलन को समाप्त करने हेतु 'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना' सम्पन्न करें, कीलन दोष समाप्त करने में सफलता प्राप्त होगी।

कैसा भी वशीकरण प्रयोग हो, कैसा भी भीषण तांत्रिक प्रयोग हो, दुर्भावना वश मूठ प्रयोग हो, गृहस्थ या व्यापार बंधा हुआ हो तो तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना सम्पन्न करने से वह बेअसर हो जाता है और जो आपके विरुद्ध तंत्र प्रयोग करता है, उस पर ही तंत्र लौट आता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 20)

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा

(सूर्य ग्रहण/हरियाली अमावस्या - 12 अगस्त 2026 अथवा किसी भी अमावस्या)

अस्तित्व पर जब भी संकट आता है, उसका निराकरण तंत्र के द्वारा ही संभव है, क्योंकि तंत्र एक नपा-तुला, जांचा-परखा मार्ग है, जिसके द्वारा बाधाओं पर विजय प्राप्ति सम्भव है।

तन्यते विस्तार्यते ज्ञानम्, अनेन इत तंत्रम्।

तंत्र ज्ञान का विस्तार है और ज्ञान पूर्वक आचरण करने वाले की रक्षा ही करता है तथा यह ज्ञान सद्गुरुदेव के मार्गदर्शन में ही संभव है। 'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा' के माध्यम से * साधक के चारों ओर एक सुरक्षा कवच निर्मित होता है। यह कवच नकारात्मक शक्तियों, दुष्प्रभावों और अनिष्ट संकल्पों से रक्षा करता है। * साधक की आन्तरिक शक्ति जागृत होती है। भीतर की दुर्बलता, भय, संशय और नकारात्मक दूर कर आत्मविश्वास प्रदान करती है। * कार्यों में गति आती है, निर्णय क्षमता बढ़ती है और रुके हुए कार्य आगे बढ़ने लगते हैं। * दृश्य अवरोधों का शमन होता है। इससे मंत्र सिद्धि, ध्यान और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। * जीवन में संतुलन स्थापित होता है। मानसिक तनाव, भय, असुरक्षा और निराशा का भाव समाप्त हो जाता है।

- तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 22)

शुक्र साधना

(हरियाली एकादशी - 25 जुलाई 2026
अथवा कामदा एकादशी - 9 अगस्त 2026)

शुक्र तो सदैव यौवन, कांति, ऐश्वर्य, विलास, पुरुषों में वीर्य और स्त्रियों में रज का स्वरूप है। रज और वीर्य के मिलन से ही सृष्टि में सृजन होता है। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसके रूप और वाणी में ओज हो, व्यक्तित्व में आकर्षण हो और लोग उससे बात करने के लिए, उसके सान्निध्य के लिए लालायित रहें। सीधे-सादे शब्दों में उसके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण हो और जो उसे एक बार देखे या उससे बात कर ले, उसके लिए उसे भूलना कठिन रहे। ऐसा व्यक्तित्व शुक्र साधना से ही संभव है।

शुक्र की कृपा से साधक सुन्दर मुख, कान्ति युक्त शरीर, प्रभावशाली नेत्र तथा सभी प्रकार के रोग-शोक से मुक्त और सौन्दर्य प्रधान मन का व्यक्तित्व प्राप्त करता है। जीवन में आर्थिक समृद्धि के लिए शुक्र की कृपा अनिवार्य है। अगर शुक्र शुभ हैं तो वैभव-विलास के साधन स्वतः एकत्र हो जाते हैं। बिना शुक्र की अनुकूलता के किसी भी व्यक्ति के जीवन की सार्थकता संभव नहीं है। शुक्र की साधना से शुक्र को बलवान और अनुकूल बनाया जा सकता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-
(जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 26)

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा

शुक्र की शुभता से साधक को जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी कुछ मिल जाता है। ऐसी है, शुक्र की माया जिससे साधक और जन-साधारण कोई भी नहीं बच पाता है।

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा के द्वारा मनुष्य की सभी भोग-विलासमयी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति में मुख में तेज और मादकता छलक उठती है और वह अपने सौन्दर्य से किसी को भी अपने तेज से सम्मोहित-आकर्षित कर सकते है। सौन्दर्य-आकर्षण, प्रेम, सम्मोहन का प्रतीक शुक्र ही है, शुक्र का प्रभाव मनुष्यों पर सामान्यतः देखा जा सकता है। समाज में नीरसता को दूर कर सरसता पैदा करना, आलस्य और कुण्ठा को समाप्त कर उत्साह और उमंग पैदा करना तथा किसी को सार्थक कार्य करने के लिए प्रेरित कर देना यह क्षमता शुक्र की अनुकूलता से ही संभव है।

सद्गुरुदेव से सात चरण में प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा प्राप्त कर मंत्र जप करने से शुक्र की प्रबलता साधक को अवश्य ही प्राप्त होती है और साधक के जीवन में सम्मोहन और आकर्षण के प्रभाव से सर्व कार्य सिद्ध होने लग जाते है।

- प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-
(जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 28)

श्रावण मास : कल्याणकारी महादेव

(श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026)

शिव का अर्थ ही कल्याण है, श्रावण मास हमें अपने भीतर के विकारों का शमन कर कल्याणमय बनने की प्रेरणा देते है। श्रावण मास केवल मांगने का समय नहीं, बल्कि स्वयं को बदलने का अवसर भी है, आत्मशुद्धि का पर्व है। शिव का अर्थ ही है जो कल्याण करे। अतः जो व्यक्ति अपने भीतर के अन्धकार को दूर कर प्रकाश की ओर बढ़ता है, वही वास्तविक रूप से श्रावण का पालन करता है।

श्रावण मास में शिवाभिषेक-साधना-उपासना से मनुष्य दुःख, भय, रोग, शत्रुता और संकटों से मुक्ति हेतु सम्पन्न करें -

पाशुपतास्त्रेय साधना एंव दीक्षा

श्रावण मास में भगवान शिव की कृपा से जीवन में पूर्ण सफलता के साथ भाग्योदय चाहते है तो 'पाशुपतास्त्रेय साधना-दीक्षा' साधक के लिये बहुत ही लाभकारी सिद्ध होती है।

शिव पुराण के अनुसार शौर्य प्रदायक पाशुपतास्त्रेय साधना दीक्षा के द्वादश लाभ इस प्रकार हैं -

* विजय और सफलता प्राप्त होती है * रोग समाप्त होते हैं और निरोगी अनुभव करता है * दुर्घटना की आशंका नहीं रहती * ऊर्जा, बल, साहस और क्षमता प्राप्त होती है * गृहस्थ जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है * लक्ष्मी प्राप्त होती है * शत्रुओं का भय नहीं रहता * भाग्योदय की स्थिति बनती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 54)
- पाशुपतास्त्रेय दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 55)

तांत्रोक्त पुष्पदंतेश्वर शिव साधना

तांत्रोक्त पुष्पदंतेश्वर शिव बहुत ही शीघ्र से प्रसन्न होकर अपनी कृपा से साधक को -

संतान विवाह में आ रही बाधाओं को समाप्त करते है।

योजना के क्रियान्वयन में बार-बार आ रही विघ्न बाधाओं का नाश करते है।

राज्य बाधा एवं सरकारी बाधाओं का नाश कर, धन प्रवाह का मार्ग प्रशस्त करते है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 460/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 56)

बृहस्पतीश्वर शिव साधना

ब्रह्मा के पौत्र अङ्गिरस ने भगवान शिव के जिस स्वरूप की साधना की वह साधना 'बृहस्पतीश्वर शिव साधना' के माध्यम से जगत में विख्यात हुई। श्रावण मास में आध्यात्मिक उन्नति, गुरु कृपा प्राप्ति, ज्ञान बल अभिवृद्धि, ध्यान-चेतना में अभिवृद्धि हेतु अवश्य सम्पन्न करें।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 57)

☆ मैं तुम्हें आवाज दे रहा हूं, मैं तुम्हारे दिल के द्वार पर दस्तक दिए जा रहा हूं इसलिए कि तुमसे कुछ वायदे किए हुए हैं, और इन वायदों को पूरा करना है।

☆ मैंने अपने हृदय के द्वार तुम्हारे लिए खोल रखे हैं। जिससे कि तुम आओ और बिना हिचकिचाहट के हृदय-द्वार के अन्दर पहुंच सको।

☆ पर विलम्ब न हो जाए, पहले ही बहुत अधिक देरी हो चुकी है। ऐसा न हो, कि तुम विलम्ब करो और दरवाजे बन्द हो जाएं।

☆ ऐसा न हो जाए, कि यह स्वर्णिम अवसर तुम्हें प्राप्त ही न हो। ऐसा न हो, कि जो सुगन्ध का झोंका तुम अभी अनुभव कर रहे हो, वह विलुप्त हो जाए।

☆ सैकड़ों वर्षों बाद ऐसा अवसर तुम्हारे जीवन में आया है, उठो, बढ़ो और मेरे हृदय-द्वार में प्रवेश कर जाओ।

☆ मेरे प्रवचन 'सुनने' के नहीं 'गुनने' के हैं, हृदय में उतारने के हैं, अपने रक्त में एकाकार कर देने के हैं, अपने व्यक्तित्व में एकरस कर देने के हैं।

☆ मेरे प्रवचन, शब्द जाल नहीं हैं, तुम्हें मिटा देने का अमोघ अस्त्र है, जब तुम मिटोगे तभी तो मैं तुम्हें महामानव बना सकूंगा।

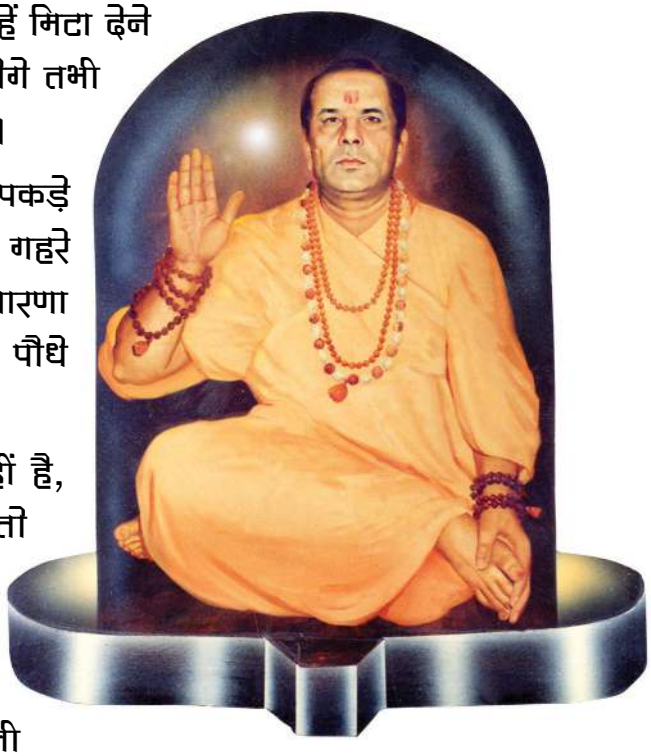

☆ मेरे प्रवचन 'क्रांति बीज' हैं, इन्हें पकड़े मत रखना, हृदय की मिट्टी में गहरे मिला देना, तभी तो ध्यान के, धारणा के, समाधि के सुन्दर, सुगन्धित पौधे विकसित हो सकेंगे।

☆ मेरे प्रवचन में गति है, विश्राम नहीं है, रुकने का स्थल नहीं है, यह तो तुम्हारे डगमगाते पैरों में गति देने की प्रक्रिया है, तुम्हारे तुतलाते शब्दों को दृढ़ता देने का आयाम है, तुम्हारे मुर्दा शरीर में संजीवनी देने की प्रक्रिया है।

☆ मेरे प्रवचन कान से सुनने के तथ्य नहीं, नाभि से गहरे उतारने के आयाम हैं, और जिस दिन तुम ऐसा कर दोगे, उस दिन तुम्हें 'बुद्धत्व' प्राप्त हो जाएगा।

☆ मुझे जो कहना था, वह काफी कुछ कह चुका। मुझे जो बताना था, वह काफी बता चुका। अब तुम्हारी जिम्मेवारी, तुम्हारा उत्तरदायित्व ज्यादा बढ़ गया है।

☆ अब मेरी जबान केवल मेरी ही नहीं रही, तुम सबकी जबानों में मेरी ही आवाज, मेरे ही शब्द ध्वनित हो रहे हैं, और अब मेरे प्रवचन केवल मेरे ही प्रवचन नहीं रह गए हैं, तुम सब के शब्द, ध्वनि और वाक् शक्ति में, मैं ही ध्वनित हो रहा हूं।

☆ अब मैं लाख-लाख रूपों में बंट गया हूं, अब मेरा शरीर केवल मेरा ही शरीर नहीं रह गया है तुम सबके शरीरों में मेरा शरीर बंट गया है।

☆ तुम्हारी जिम्मेवारी, तुम्हारा उत्तराधियित्व ज्यादा बढ़ गया है, कि अब मेरे संदेश को दूर-दूर तक तुम्हें ही पहुंचाना है। हवा के झोंके की तरह मेरी सुगन्ध लेकर चारों तरफ पूरे विश्व में फैल जाना है, और अब यह उत्तरदायित्व तुम्हारा है।

शिष्य धर्म

शिष्य और गुरु का सम्बन्ध जीवन में श्रेष्ठतम सम्बन्ध माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार की किसी तराजू में तोला नहीं जा सकता। एक श्रेष्ठ शिष्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से विश्वास एवं निष्ठा बढ़ती है।

- ✧ विश्वसनीयता (Reliability) - कमिटमेंट से आती है और पहले से अंदाजा लगाने की क्षमता देती है।
- ✧ स्थिरता (Consistency) - विश्वास बढ़ाती है।
- ✧ सम्मान (Respect) - खुद के और दूसरों के प्रति शिष्टता और परवाह करने का भाव पैदा करता है।
- ✧ निष्पक्षता (Fairness) - न्याय और निष्ठा के भाव को जगाती है।
- ✧ खुलापन (Openness) - बिना संकोच के हर चीज के लिए खुला रास्ता।
- ✧ समता (Congruence) - कथनी और करनी में समानता आती है। अगर कोई कहता कुछ है और करता कुछ है तो उसका कैसे यकीन करेंगे?
- ✧ निपुणता (Competence) - काबिलियत और सेवा की भावना से यह गुण आता है।
- ✧ ईमानदारी (Integrity) - ईमानदारी विश्वास का महत्वपूर्ण अंग है।
- ✧ स्वीकृति (Acceptance) - सुधार के प्रयास के बावजूद हमें एक-दूसरे की कमियों और खूबियों को एक हद तक स्वीकार करने की जरूरत है।
- ✧ चरित्र (Character) - किसी इंसान में कितनी ही योग्यता क्यों न हो, लेकिन अगर वह चरित्रहीन है तो उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

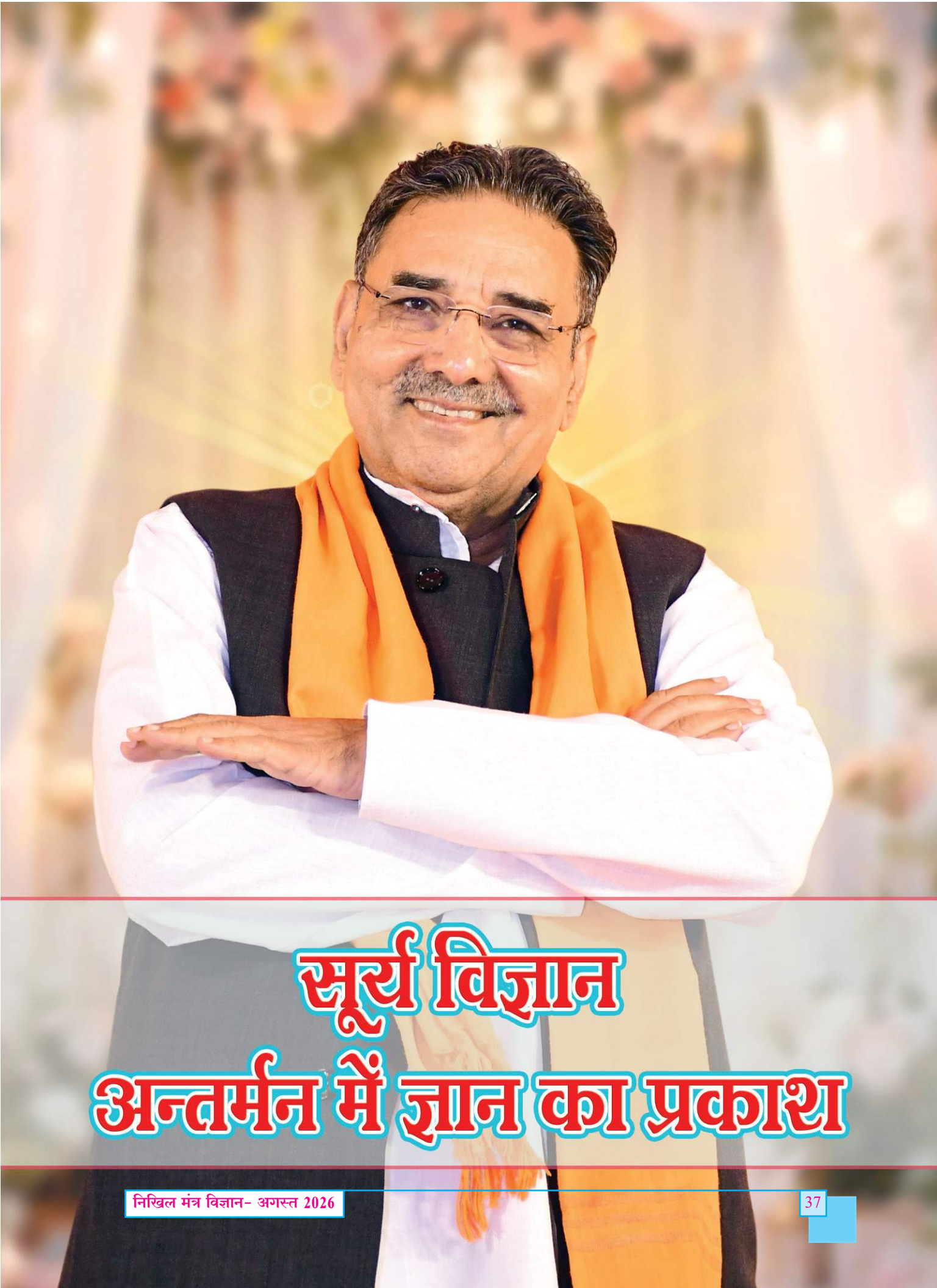

सूर्य विज्ञान
अन्तर्मन में ज्ञान का प्रकाश

वर्ष का सबसे पहला मंगलपर्व मकरसंक्रान्ति यह सूर्य दिवस है, शौर्य दिवस है, कर्म प्रारम्भ करने का दिवस है, इस सूर्य को अपने हृदय में भी आलोकित करो और कर्म पथ पर अग्रसर हो जाओं। सद्गुरुदेव का यह विशिष्ट प्रवचन -

मकर संक्रान्ति को सूर्य दक्षिणायान से उत्तरायण में प्रवेश करते है और मकर संक्रान्ति से सारे शुभ कार्यों का प्रारम्भ होता है। इस कारण मकर संक्रान्ति एक Milestone है।

ठीक इसी प्रकार नित्य सूर्यदेव आपको जाग्रत करते है, सूर्य की ज्योति प्रकाश जिसे उषाकाल कहा गया है। उस उषा काल में हम नींद से जागकर क्रिया की ओर अग्रसर होते है। सोये हुए है, जाग जाते है। कोई अर्लाम की आवश्यकता नहीं पड़ती, सूर्य का प्रकाश आपको ठकठकाता है कि हे मनुष्य मैं आ गया हूं। अब जागों और अपना-अपना काम करो।

इसीलिये सूर्य की प्रातःकालीन प्रार्थना -

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां देवी गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

हे सूर्य आप सहस्त्र किरणों से युक्त जगतपति है, मेरा अर्घ्य ग्रहण कर मुझ पर अनुकम्पा करें।

सूर्य तो रोज उदय होता है पर शिष्य के जीवन में सूर्य कब उदय होता है? जब वह पहली बार गुरु से मिलता है और प्रार्थना में कहता है कि -

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन श्लाकया
चक्षुरन्मीलितं तस्मै श्री गुरुवै नमः

हे गुरुदेव! ज्ञान अंजन रूपी श्लाका से आपने अज्ञान रूपी अंधकार से अंधे हुए लोगों की आंखें खोल दी और मंत्र ज्ञान से नेत्र खोल दिये है आपको मेरा नमन है।

हे गुरुदेव मेरे जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करो।

अब अंधकार का सम्पूर्ण नाश तो सूर्य के द्वारा ही हो सकता है। जो कार्य सूर्य के प्रकाश में सम्पन्न होता है, वह अन्य प्रकार के प्रकाश में सम्पन्न नहीं हो सकता है क्योंकि सूर्य अपना प्रकाश चारों और फैलाता है।

गहन से गहन अधंकार को भी सूर्य की किरणें भेद देती है और सूर्य वह देव है जो देने में किसी प्रकार की आनाकानी नहीं करते।

ठीक उसी प्रकार गुरु भी ज्ञान का प्रकाश शिष्य के जीवन में प्रत्येक रूप से प्रदान करते है, जिससे वह सम्पूर्ण रूप से आलोकित हो जाये, प्रकाशित हो जाये और उसके जीवन की रोग-बाधाएं समाप्त हो जाये क्योंकि अंधकार रोग, बाधा, भय का स्वरूप है।

हम सब यह कहते है कि **भूत-प्रेत-पिशाच भी अंधकार में भ्रमण करते है।** आप भी अपने बच्चों को डराने के लिये यही कहते है कि रात हो गई, सो जा नहीं तो भूत आ जायेगा।

अब सोचों भूत तो भूत है, वह अंधकार में ही क्यों भ्रमण करता है? क्योंकि अंधकार है अज्ञान का स्वरूप और जब अज्ञान आता है तो भूत-प्रेत आते है और जब अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है और ज्ञान का प्रकाश आता है तो भूत-प्रेत सब भाग जाते है, बाधाएं भाग जाती है।

इसीलिये मैं कहता हूं कि गुरु शिष्य के जीवन में भूत-प्रेत भगाने वाला ज्ञान 'विद्या' है, ज्ञान सूर्य है।

इसीलिये गुरु वन्दना में हम कहते है,

ज्ञानशक्ति समारुढ तत्वमाला विभूषिणे
भुक्तिमुक्ति प्रदात्रे च तस्मै श्री गुरुवै नमः

तो भाई! गुरु ज्ञान शक्ति का स्वरूप है और जीवन में गुरु ही ज्ञान द्वारा भोग और मुक्ति का मार्ग प्रदान करते है।

इसी प्रकार सूर्य देव को मित्र देव कहा गया है। एक सूर्य नहीं हमारे शास्त्रों में द्वादश आदित्य का वर्णन आता है। **विवस्वान (सूर्य), आर्यमन, त्वष्ट्र, सविता, भग, धात्र, मित्र, वरुण, अंश, पूषन, इंद्र और विष्णु (वामन के रूप में)** ये सभी मित्र देव है, सूर्य के स्वरूप।

इन्द्र भी सूर्य का स्वरूप, विष्णु भी सूर्य का स्वरूप, वरुण भी सूर्य स्वरूप और विस्वान सूर्य का स्वरूप है।

विवस्वान का अर्थ है जो उज्जवल प्रकाशवान हो। वे संसार को जीवनदायी ऊर्जा प्रदान करने वाले सूर्य देव है। शास्त्रों में विवेचन आता है कि सूर्य विवस्वान, कश्यप और अदीति के पुत्र है इसलिये उन्हें आदित्य कहा जाता है।

हम सभी वास्तव में सूर्यवंशी है क्योंकि प्रत्येक जीव सूर्य की ऊर्जा का ही स्वरूप है और सूर्य को संसार की आत्मा कहा गया है।

सीधी बात है, आप मैं और सभी प्राणी सूर्य के अंश है क्योंकि संसार की आत्मा है सूर्य, तो जीवात्मा आत्मा से अलग कैसे हो सकती है?

सूर्य निरन्तर प्रकाशित रहते है और हमें कर्म करने की प्रेरणा देते है। वे न केवल प्रकाश और ऊर्जा का स्रोत है बल्कि निस्वार्थ कर्मयोगी का स्वरूप है।

पूरे वर्ष के 365 दिन में सूर्य तो कभी विश्राम नहीं लेना, कोई आलस्य नहीं। कैसा भी मौसम हो वे अपने कर्त्तव्य को निभाते है। कभी बादलों में छिप जाते है, कभी उनकी किरणें तप्त कर देती है। उनकी निष्ठा में कोई कमी नहीं है। अब एक विचित्र बात –

आज है सण्डे का दिन, रविववार और आप सब को रविवार का बहुत इंतजार रहता है कि कब सण्डे आये, पूरे छः दिन सण्डे की प्रतिक्षा करते है। आपके कार्य करने की भी एक सीमा है। इसीलिये शरीर से थक जाते है, थोड़ा मन से भी थक जाते है और रविवार को हमने आराम का नाम दे दिया है, भाव दे दिया है जिससे हमारी क्रिया पुनः जीवन्त हो जाये।

आप तो रविवार को छुट्टी ले लेते है, रेस्ट करते है, जिससे हमारी पूरी क्रिया पुनः जीवन्त हो जाये, नया जोश आये, जिससे हम और अधिक क्रियाशील हो सके।

यही तो है सूर्य की विशेषता की वह हमें जीवन्त बनायें, जाग्रत बनायें, तरो-ताजा रखें।

इसलिये सूर्य को अग्नि देव कहा गया है। प्रभा का देव कहा गया है वे ग्रह अधिपति है।

सण्डे की छुट्टी से मुझे याद आया कि आपकी गृहलक्ष्मी भी तो निरन्तर और निरन्तर सातों दिन क्रियाशील रहती है। उसके लिये तो सण्डे को डबल काम हो जाता है। आप घर में बैठे-बैठे फरमाईशें बतातें रहते है। फिर भी थकती नहीं है 365 दिन निरन्तर और निरन्तर क्रियाशील रहती है।

क्योंकि वह शक्ति का साकार रूप है और शक्ति उसे ही कहा गया है जो थकती नहीं है, कभी रुकती नहीं है। निरन्तर और निरन्तर सूर्य की भांति क्रियाशील रहती है।

मेरे तो सलाह है कि आप सूर्य का ध्यान करें, उन्हें प्रणाम करें तो अपने घर की स्त्री शक्ति को भी अवश्य प्रणाम करें। सूर्य को सुबह-सुबह आप अर्घ्य देते है तो मेरे सलाह मानों कभी-कभी एक गिलास जल, एक कप चाय खुद बनाकर अपनी स्त्री शक्ति को अर्पण अवश्य करें।

आपको भी शक्ति मिलेगी। यह भी सूर्य का अर्घ्य है, शक्ति का अर्घ्य है।

अब मैं एक गंभीर बात पर आता हूं। सूर्य में प्रकाश है, सूर्य में तेज है। आप सूर्य पुत्र है पर सूर्य में और क्या विशेषता है?

सबसे बड़ा तत्व है आकर्षण तत्व और यह सबसे बड़ा तत्व है। **यह सारा संसार आकर्षण से ही चल रहा है, यदि जीवन में आकर्षण का तत्व न हो तो, यह संसार तो युद्ध भूमि बन जायेगा, एकाकी हो जायेगा, किसी को किसी से मतलब नहीं, यह जीवन चल रहा है नहीं चल रहा है, आनन्द आ रहा है या नहीं आ रहा है।**

जीवन में मूल आनन्द तत्व है आकर्षण।

कहते है शेर बड़ा ही बलवान जानवर होता है। सर्कस में एक रिंग मास्टर उसे भी पालतू बना देता है। आपने भी अपने घर में एक शेरनी को आकर्षण वश ही सारे कार्यों पर लगा दिया है कि वह आपके गृहस्थ कार्य को सम्भालती रहे।

शक्ति जो शेर की सवारी करती है, वह गृहस्थी के आकर्षण से ही घर-परिवार जोड़ती है।

देखों सूर्य के आकर्षण से पृथ्वी अपनी कक्षा में सूर्य के चारों और भ्रमण करती हैं वह अपनी धूरी पर घूमती है, वह स्वतंत्र है और इस प्रकार घूमकर दिन और रात की रचना करती है लेकिन सूर्य के आकर्षण चक्र को तो नहीं छोड़ती।

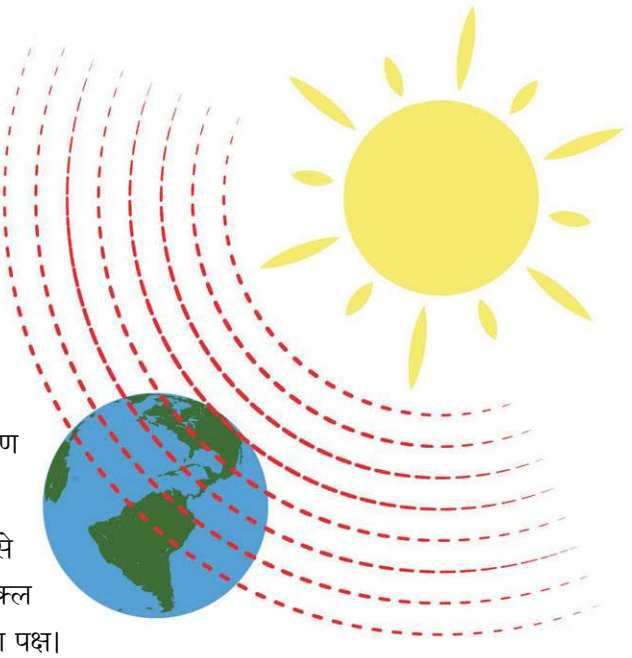

ठीक इसी प्रकार चन्द्रमा भी आकर्षण के प्रभाव से ही पृथ्वी के चारों ओर वृत्ताकार रूप में 28 दिन में एक पूरा भ्रमण करता है।

यह बात जरूर है कि शक्ति और प्रकाश उसे भी सूर्य से ही मिलता है। जिन दिनों में पूर्ण प्रकाश मिलता है वह शुक्ल पक्ष और जिन-जिन देखों में कम प्रकाश मिलता है वह कृष्ण पक्ष।

अब चन्द्रमा के प्रभाव में समुद्र का जल आकर्षित होता है और उसी के प्रभाव से समुद्र में ज्वार-भाटा जाता है। तो हमारे ऊपर सूर्य चन्द्रमा और जल तीनों का प्रभाव पड़ता है।

मनुष्य है भूमि स्वरूप, उसमें तीन तत्व प्रमुख है, सूर्य तत्व, चन्द्र तत्व, जल तत्व और हमारी देह में जल, वायु, चन्द्रमा की शीतलता और सूर्य का तेज न हो तो क्या स्थिति बन जायेगी। यह स्थूल शरीर शुष्क हो जायेगा।

तो भाई सबसे बड़ा तत्व कौन सा हुआ जो इन सबको जोड़कर देखता है। **सबसे बड़ा तत्व है आकर्षण तत्व। इसी कारण तो यह जगत हमें प्यारा लगता है और यह स्वतः जाग्रत होता है।**

आप हजारों लोगों से मिलते है। सबके प्रति तो आकर्षित नहीं होते। किसी-किसी के प्रति एकदम आकर्षित हो जाते है और किसी-किसी के प्रति विकर्षित हो जाते है। यह हमारे भीतर के सूर्य का प्रभाव है।

सबसे बड़ी बात है कि **आकर्षण से ही जगत बंधा हुआ है।** पत्रिका में भी जब आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण की साधना आती है तो आप बहुत प्रसन्न हो जाते है। आप सोचते है क्या मैं किसी को वशीकरण कर सकता हूं, क्या मैं किसी को सम्मोहित कर सकता हूं, क्या मैं किसी को आकर्षित कर सकता हूं। क्यों है ऐसा? क्योंकि आप में स्वयं में एक विशेष आकर्षण तत्व है जो दूसरे तत्व से मिलना चाहता है। आप किसी को अपना दास नहीं बनाना चाहते, यह प्रेम का भाव है।

हमारे यहां एक महान् ऋषि हुए है - रावण। जिन्होंने तंत्र के कई ग्रंथों की रचना की। रावण कृत उड्डीश तंत्र तो सम्मोहन-वशीकरण का आधारभूत ग्रंथ है। कभी किसी समय साधकों को मैं यह विशेष प्रकार की साधनाएं भी अवश्य सम्पन्न कराऊंगा।

अब देखों, शिव और शक्ति की प्रार्थना करते हुए शिव ताण्डव स्तोत्र में रावण कहते है, बहुत प्रेम रचना है।

अखर्व सर्व मङ्गला कला कदंब मञ्जरी
रस प्रवाह माधुरी विजृम्भणा मधु व्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्त कान्ध कान्तकं तमन्त कान्तकं भजे ।।

अतीव मंगलमयी पार्वती की कला रूपी कदम्ब वृक्ष की मंजरी के मकरन्द के प्रवाह की बढ़ती हुई माधुरी का पान करने वाले भ्रमर के समान जो भगवान शिव हैं तथा जो कामदेव त्रिपुरासुर, दक्ष यज्ञ, हाथी, अंधकासुर एवं यमराज का भी अंत करने वाले हैं, उनकी मैं उपासना करता हूं।।

स्पष्ट कह रहे है कि भगवान शिव और शक्ति का मिलाप हो रहा है। वही शिव राक्षसों का, यमराज का अंत करने वाले है।

तो प्रेम शक्ति और युद्ध शक्ति अलग-अलग नहीं है। जो प्रेम के उच्च स्तर पर पहुंच जाता है, वह आकर्षण भाव में भगवान की स्तुति सम्पन्न करता है और कहता है कि -

जटा कटाह सम्भ्रम भ्रमन् निलिम्प निर्झरी,
विलोल वीचि वल्लरी विराज-मान मूर्धनि।
धगद् धगद् धगज् ज्वलल् ललाट पट्ट पावके
किशोर चन्द्र शेखरे रतिः प्रति क्षणं मम ।।

जिस शिव के शीश पर गंगा वेगपूर्वक घूमती हुई लहरा रही है, तथा जिनके ललाट में धक्-धक् ज्वालायें जल रही हैं, जिनके सिर पर उदीयमान बाल चन्द्रमा विराजमान है, उन्हीं भगवान शंकर में मेरा अनुराग निरन्तर बढ़े।।

भगवान के आकर्षण में ही तो हम अपने नेत्र बंद कर अपने मन की बात कहते है, जो जगत से प्रेम कर सकता है वही ईश्वर से प्रेम कर सकता है।

'मैं प्रेम करता हूं...', यह बहुत बड़ा मंत्र है क्योंकि प्रेम हर एक से नहीं किया जा सकता। एक व्यक्ति पचास व्यक्तियों से घृणा कर सकते है लेकिन 50 व्यक्ति से प्रेम नहीं करता, कोई-काई ही अच्छा लगता है।

क्या हमारा प्रेम का विस्तार, आकर्षण का विस्तार हजारों-हजारों के प्रति नहीं हो सकता है?

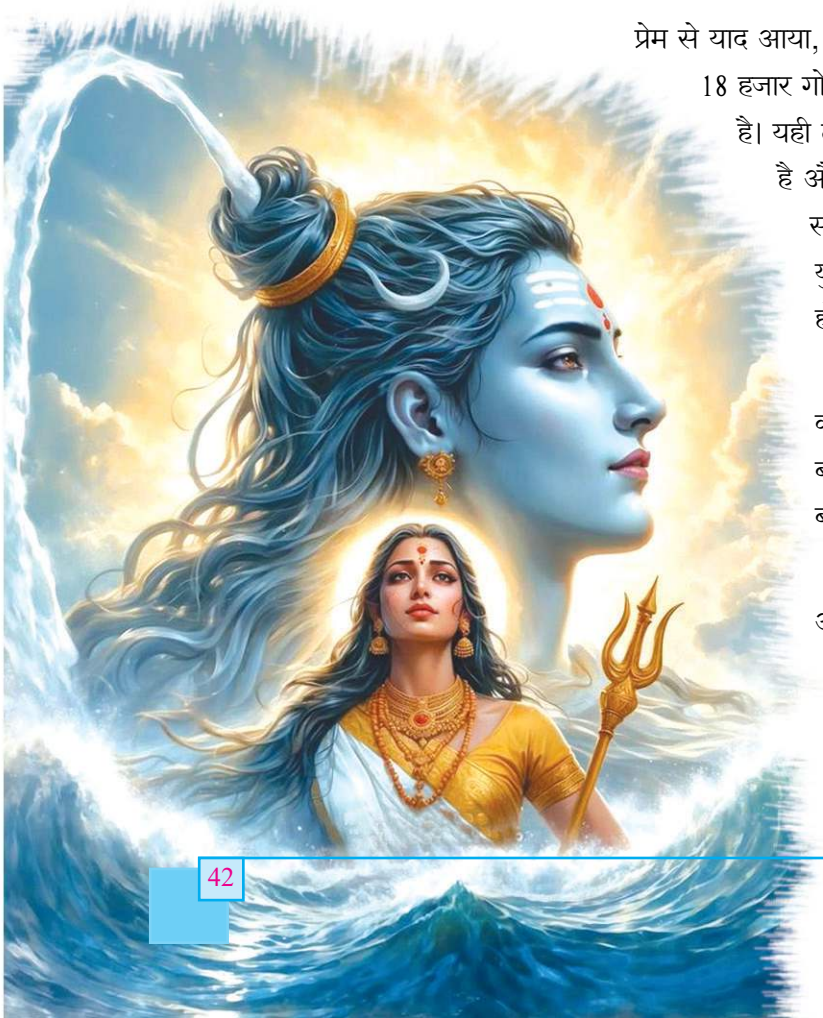

प्रेम से याद आया, हमें श्रीकृष्ण बहुत मधुर लगते है। वह श्रीकृष्ण जो 18 हजार गोपियों के साथ, एक साथ महारास सम्पन्न कर सकते है। यही तो आकर्षण तत्व जीवन को प्रेम से संचारित करता है और प्रेम से ही यह संसार चल रहा है। घृणा से यह संसार नहीं चल सकता। युद्ध होते है, तो घृणा से युक्त होते है। अधिकार की भावना जमाने की कोशिश होती है। प्रेम की भावना से तो सृष्टि में वृद्धि होती है।

सूर्य का धरती के प्रति असीम प्रेम है इसी के कारण जमीन के भीतर अंधकार में दबा हुआ एक बीज भी अंकुरित हो जाता है। वह जमीन को फोड़कर बाहर आ जाता है।

वह चाहता है कि मुझे बड़ा होना है। यह है सूर्य और एक बीज का प्रेम।

आप भी शिष्य हो, आपके मन में यह भावना होती है कि गुरु के आकर्षण में मैं बड़ा हो जाऊं, यह बड़ा होने की भावना ही जीवन में शक्ति को संचालित करती है। भीतर की शक्ति के साथ जब आकर्षण तत्व युक्त हो जाता है तो दोषों का शमन होता है।

एक और विशेष बात है आप महाकाली को देखों, रूप बड़ा ही भयावह है आप उसे किस रूप में देखते है? प्रेम के रूप में और जब हम उसके प्रति आकर्षित हो जाते है, समर्पण युक्त हो जाते है तो वह भयावह रूप भी हमें तेजोमय लगता है। हमारे भय को बढ़ाता नहीं है अपितु हमारे भय का नाश करता है क्योंकि महाकाली के प्रति हमारी आकर्षण शक्ति जुड़ गई है।

आप उच्च स्वर में नवार्ण मंत्र **'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै'** और काली मंत्र **'।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं महाकालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट्।।'** का मंत्र जप करते है तो आप बाह्य आखों से भयावह रूप नहीं देखते आप आन्तरिक नेत्रों से उसका कृपामय स्वरूप देखते है। आकर्षण में आबद्ध हो जाते है तब हमारे शरीर में एक ऊष्मा जाग्रत होती है, शक्ति जाग्रत होती है।

बड़ा ही रौद्र रूप दिखाया गया है, चाहे वह शिव का हो, चाहे भैरव का है लेकिन हमें भय नहीं लगता क्योंकि उनके प्रति आकर्षण का भाव होता है।

यह आकर्षण का भाव तब तक जाग्रत नहीं होगा, तब तक आप मृत प्रायः जीवन ही जीयेंगे। चल रहा है जीवन।

जैसे ही प्रेम, आकर्षण का भाव आता है। सीखने, समझने की प्रवृत्ति आती है। विद्या और ज्ञान की प्रवृत्ति आती है।

इसीलिये आकर्षण और सम्मोहन ही जीवन का आधार है।

तो प्रेम और आकर्षण है जीवन का आधार। प्रेम है तो सबकुछ संभव है। प्रेम के वशीभूत ही भगवान है।

श्रीकृष्ण कौरवों की सभामें पाण्डवों के राजदूत बनकर गये। सभा के बाद दुर्योधन ने अभिमान से कहा - महाराज! बड़ी तैयारी से आपके लिये भोजन बना है। चलकर ग्रहण करें।

भगवान ने उत्तर दिया - भैया! मैं तो नहीं खाऊंगा।

दुर्योधन ने पूछा - क्यों नहीं खायेंगे?

भगवान ने कहा - देखों, दुर्योधन! भोजन करने के तीन कारण होते है - भूख का कारण, भय के कारण या प्रेम के कारण।

भूख से मैं मरता नहीं, तुमसे किसी प्रकार का भयभीत मैं होता नहीं जो भय के कारण मुझे भोजन करना पड़े और प्रेम भाव तुममें है नहीं। इसलिये मैं यहां भोजन नहीं करूंगा।

यह महाभारत की कथा है। उसके बाद भगवान बिना बुलाये पहुंच गये विदुरानी के यहां। विदुरानी में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम था तो उसके प्रेम के वशीभूत प्रभु ने उसके हाथ से प्रेम से दिये गये केले के छिलके भी खा लिये।

अरे भाई! जीवन में इसी प्रेम भाव का विकास करना है। तब मनुष्य तो क्या देवता भी आपकी ओर आकर्षित हो जायेंगे।

इसी प्रेम भाव के कारण चेहरे पर ओज, तप, प्रकाश आता है। यही मनुष्य को आकर्षण युक्त बनाता है। तब वह सम्मोहन शक्ति से युक्त हो जाता है।

सूर्य है जीवन में तेज का स्वरूप, ओज का स्वरूप। और सूर्य के सबसे निकट ग्रह है शुक्र और शुक्र ग्रह कामनाओं का, भोग विलास का, सौन्दर्य का, रति-अनंग का, प्रेम का ग्रह कहा गया है। शुक्र और रज के प्रवाह से ही संसार में रचना होती है।

यदि शुक्र भाव कमजोर हो जाता है तो मनुष्य अपने जीवन में दरिद्री बना रहता है, उसकी कामनाओं की पूर्ति होती ही नहीं, वह भटकता रहता है। तो सूर्य और शुक्र का सीधा सम्बन्ध है। जिसमें सूर्य भाव तीव्र होता है वह समाज का नेतृत्व करता है और सामान्य शब्दों में कहें तो उसकी बात को कोई टाल नहीं सकता है और शुक्र तत्व तो लक्ष्मी का स्वरूप है क्योंकि हमारा यहजीवन कामनाप्रद जीवन है।

यदि मुझे एक लाईन में कहना पड़े कि यह जीवन क्या है तो मैं कहूंगा, कामनाओं का अथाह सागर जिसमें मनुष्य कर्मशील होकर अपनी एक-एक कामना को पूर्ण करता है और कामनाओं की पूर्ति लिये मनुष्य प्रयत्न करता है और जब फल प्राप्ति होती है तो उसे अथाह शांति और संतोष का अनुभव होता है, फिर नये जोश से भरता है।

फिर नयी कामनाएं, फिर नया जोश और फिर वही चक्र, फिर वही कामना।

एक बात समझ लेना, कामना और तृष्णा में बड़ा अन्तर है। कामना का अर्थ है - जिसे हम अपने कार्य से, कर्म से प्राप्त करना चाहते है और तृष्णा का अर्थ है जो हमें बिना कर्म के ही प्राप्त हो जाये।

एक बार एक छोटा बालक सूर्य प्रार्थना कर रहा था और सूर्य से पूछने लगा - हे सूर्यदेव! आप इतनी मेहनत क्यों करते है? क्या आपको यह चिन्ता नहीं होती कि लोग आपके प्रकाश का सही-सही उपयोग नहीं कर रहे है।

सूर्य ने जो उत्तर दिया ध्यान से सुनना - सूर्य कहते है हे पुत्र! मेरा धर्म कर्म करना है। मैं प्रति दिन निरन्तर अपना प्रकाश फैलाता हूं, यह नहीं सोचता हूं कि इसका उपयोग कौन करेगा, कौन नहीं करेगा। मेरा कार्य केवल देना है, केवल देना है। इसलिये कर्म का मूल्य फल की अपेक्षा कम नहीं होता है। जो अपना कर्त्तव्य निभाता है वही सच्चा योगी है।

योगी भाव से कर्म करना बहुत महत्वपूर्ण है। सूर्य योगी है, निरन्तर कर्मरत है।

आपका एक प्रश्न बार-बार मेरे सामने आता है कि हम कैसे कार्य करें?

ऐसे तो कार्य नहीं हो सकता जिसमें हम फल की इच्छा ही नहीं करें? क्योंकि हर मनुष्य में कर्म की भावना फल प्राप्ति के साथ ही आती है। तो फिर शास्त्रों में बार-बार यह क्यों कहा गया है कि हमें फल की अपेक्षा छोड़ देने चाहिये।

देखों भाई! जब हम फल के प्रति बहुत अधिक आकर्षित हो जाते है तो दो ही बातें मन में आती है -

पहला सकारात्मक फल की उम्मीद, यह तो हो ही जायेगा। मैं कर रहा हूं, अवश्य फल मिलेगा। ऐसी सोच जिसमें हम केवल परिणाम के बारे में अपने आपको केन्द्रित कर लेते है। वहां व्यक्ति थोड़ा आलसी हो जाता है।

अब दूसरी नकारात्मक फल का भय। अब आपने कार्य शुरु करने से पहले ही यह सोच लिया है कि इसमें तो मुझे सफलता नहीं मिलेगी तो क्या होगा? हम विफलता से डरते है और वह हमारी कर्म शक्ति को कमजोर कर देता है।

सूर्य महोत्सव है तो कर्म के सम्बन्ध में सूर्य हमें क्या सीखा रहे है।

1. रहो जीवन में नियमित – कैसी भी परिस्थिति हो सूर्य नित्य प्रति उदित होता ही होता है।

2. निस्वार्थ भाव – अब ऐसा तो नहीं है कि सूर्य किसी को प्रकाश दे और किसी को नहीं दे वह तो निस्वार्थ भाव से चारों ओर अपना प्रकाश देता है।

3. सूर्य का ज्ञान – जीवन में धैर्य।

सूर्य को कभी-कभी बादल ढक देते है, आपके जीवन में भी बाधाओं के बादल आ सकते है। कार्यों में देरी हो सकती है, जो चाहा उसके अनुसार नहीं होता है। धैर्य रखिये और सूर्य की भांति अगले दिन प्रकाशित होने के लिये तैयार रहे।

मैं साधकों से कहता हूं कि ऐसी कोई घनी अंधेरी रात नहीं हुई है जिसका अंत न हो। हर रात का अंत होता ही होता है क्योंकि सूर्य को आना ही आना है और रात को जाना ही जाना है।

सबसे महत्वपूर्ण बात जीवन में सूर्य की भांति त्याग भाव।

सूर्य अपने ऊर्जा का एक बहुत बड़ा भाग पृथ्वी को प्रदान करता है और उसी से तो जीवन संभव हो पाता है।

एक बीज को हम बहुत गहरे रोपते है। अंधेरे में रोपते है। उस पर भी सूर्य का ताप धरती को भेद कर पहुंच जाता है और वह अंकुरित हो जाता है। वह भी सूर्य के आकर्षण में अंकुरित होता है और धीरे-धीरे एक विशाल वृक्ष बन जाता है।

ईश्वर सब ओर से सहयोग देते है। बस हमारे अन्दर यह भाव आना आवश्यक है कि हमें हर हाल में अंकुरित होना है, अपने आपको बड़ा बनाना है, ऊंचा उठाना है।

सारे देवी-देवता आपको सहयोग देने के लिये तत्पर है। प्रार्थना में भी आप फल की इच्छा पहले रखते फिर प्रार्थना करते है।

एक कहानी मुझे याद आ रही है – एक राजा अपने राज्य क्षेत्र में भ्रमण कर रहा था, अपनी प्रजा का सुख-दुख का हाल जानने।

यही तो राजा का कर्त्तव्य है, जो जनता से बराबर जुड़ा रहे।

तो राजा जा रहा था और उसका कुर्ते का सोने का बटन टूट गया। अब टूटा बटन, खुला कुर्ता कैसे रखें, साथ में मंत्री था। कहा, मालूम करो इस गांव में कोई सुनार है या नहीं और वह मेरा बटन ठीक कर सकता है या नहीं।

अब गांव में एक ही सुनार था, उसके पास बटन लेकर गये। सुनार ने कहा मैं कर दूंगा और थोड़ी ही देर में उसने टूटे बटन को ठीक से गढ़ कर एकदम अच्छा बना दिया।

राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा, अरे भाई! कितना पारिश्रमिक हुआ। तो सुनार ने कहा कि - आप राजा है, आपसे क्या पारिश्रमिक। छोटा सा ही काम था मैंने कर दिया।

अब जो राजा होते है वे बड़े जिद्दी होते है। उन्होंने कहा कि पारिश्रमिक तो लेना पड़ेगा, बोलों।

अब सुनार मन ही मन विचार करने लगा और सोचा कि 2 रुपये मांग लेता हूं। फिर विचार आया कि इतने से काम के 2 रुपये मांगूगा तो पूरे गांव को पता चलेगा कि यह तो बड़ा लालची है। इसी भाव के साथ मन में मंथन चल रहा था। कितना मांगू, कैसे मांगू, मांगू या नहीं मांगू? कहीं गलत मांग लिया तो क्या होगा?

फिर मन ही मन मंथन कर कहा हे राजन्! हम तो आपकी प्रजा है। जो आपकी इच्छा हो वह प्रदान कर दो।

राजा ने अपने मंत्री को कहा, इस सुनार को दो गांव दान कर दो।

सुनार यह सुनते ही आश्चर्यचकित हो गया। अरे मैं कितनी बड़ी गलती कर बैठता, मैं सोच रहा था कि दो रुपये ही बहुत है और मुझे तो दो गांव मिल गये।

यही बात मनुष्य को अपने जीवन में अपनानी चाहिये। कभी देवताओं से, भगवान से आदान-प्रदान का नियम नहीं बनाना चाहिये। कि मैं आपके सवा लाख मंत्र जप कर रहा हूं आप मुझे यह फल निश्चित रूप से प्रदान करें। यह तो व्यापार हो गया। ईश्वर के साथ कैसा व्यापार?

निष्काम मन से ईश्वर का ध्यान करो। देव स्तुति करो। जो उसे देना है वह आपकी सोच से कई गुणा बढ़ा देगा।

अभी मैंने कहा कि यह मनुष्य जीवन क्या है? यह मनुष्य जीवन कामनाओं का समुद्र है और आपकी असंख्य कामनाएं हैं। आप प्रयत्न करते है कुछ कामनाएं पूर्ण होती है फिर कामनाओं के सागर में ओर गहरा गोता लगाते है, फिर कुछ और कामनाएं पूर्ण होती है और इस प्रकार आपका संसार चलता रहता है।

बहुत कम व्यक्ति ऐसे होते है जो अपने आप में प्रसन्न रहते है और कामनाओं का जाल-जंजाल बढ़ाते नहीं रहते है।

यहां भी एक विचित्र स्थिति है। कि कामनाओं का जाल बढ़ाया जाये या नहीं जाये? आप अपने मन में सोच लो सत्य यह है, आप बढ़ाते रहे हो क्योंकि हमारा सनातन धर्म चार सिद्धान्तों पर ही तो टिका है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

और इसमें भी अर्थ प्राप्ति के लिये आपका विशेष आग्रह रहता है। अब मूल बात तो है जीवन का अर्थ लेकिन लोग अर्थ समझते है जीवन में धन की प्राप्ति । आज आप लक्ष्मी आबद्ध दीक्षा के लिये तत्पर है। आप चाहते है कि लक्ष्मी जीवनभर आपसे आबद्ध रहे।

क्या लक्ष्मी जीवन भर आबद्ध रह सकती है? आप समझते है लक्ष्मी का अर्थ धन और धन तो उपयोग और उपभोग के लिये होता है। इसे जीवनभर बांधकर तो नहीं रख सकते। बांधकर रखा तो लक्ष्मीदास बन जायेंगे और कर्मशील रहे तो लक्ष्मीपति बन जायेंगे।

आवश्यकता है लक्ष्मी के आवागमन की, आये और खर्च हो। हमारे पास आये और हम उसे उचित कार्यों में खर्च करें। घर-परिवार में सम्पन्नता रहे और उसे दान-पुण्य समाज, उपयोगी कार्य करने के लिये व्यय करें।

आय और व्यय का जोड़ है लक्ष्मी।

अब मैं प्रबंधन के बारे में कुछ बात कहना चाहूंगा। यह लक्ष्मी सूत्र है। इसे अपनायेंगे तो आप बहुत सुखी रहेंगे।

आप सभी परिश्रम करते है, धन प्राप्त करते है, धन खर्च करते है। तीन बातें मेरी नोट कर लो। क्योंकि धन तो खर्च करने के लिये ही होता है।

सबसे पहले आता है - अनिवार्य खर्च। जिसमें खान, पान और वस्त्र होते है। बच्चों की पढ़ाई, घर का किराया होता है और यदि खुद का घर नहीं है तो मैं आपको आशीर्वाद देता हूं कि जल्दी से जल्दी आप अपना स्वयं का घर बना दे।

अब ये जो अनिवार्य खर्च है वह तो करने ही पड़ेंगे, उसके बिना तो जीवन चल नहीं सकता। उसमें किसी प्रकार की कटौती नहीं कर सकते।

अब दूसरा खर्चा है आवश्यक खर्च - इसको बहुत संभाल कर करना है कि मैं लक्ष्मी का व्यय कर रहा हूं क्या यह व्यय करना आवश्यक है। तो वह व्यय अवश्य कीजिये और जो अनावश्यक है उसे रोक दीजिये।

अब तीसरी स्थिति आती है आकांक्षा। इसमें शौक-मौज और दिखावे का खर्च कहता हूं। जो न अनिवार्य है, न आवश्यक है। केवल दूसरों को दिखावें के लिये किया गया है। आप समझते है कि मैं धन का प्रदर्शन करूंगा तो लोग मुझे बड़ा समझेंगे।

अब समस्या क्या आती है? यदि हम हमारा जीवन अनिवार्य खर्च, आवश्यक खर्च और आकांक्षा के क्रम में चलाते है तब तो ठीक है लेकिन उल्टा चला दिया तो बड़ी ही दिक्कत हो जायेगी। पहले दिखावे के लिये कर दिया फिर आवश्यक खर्च किये तो अनिवार्य खर्च रह जायेंगे।

मेरी बात को ध्यान से समझना, तीन क्रम को निभाया तो लक्ष्मी आपके जीवन में स्थाईरूप से रहेगी।

लक्ष्मी को स्थाई रखना है तो जीवन में श्रीमति का होना आवश्यक है। अब श्रीमति का अर्थ स्त्री भी होता है, पत्नी भी होता है। श्री और मति, श्री अर्थात् लक्ष्मी, मति अर्थात् बुद्धि, सरस्वती।

जहां लक्ष्मी और सरस्वती एक जगह निवास करती है उसे श्रीमति कहते है। लक्ष्मी का स्वरूप भी स्त्री स्वरूपा है, श्री से युक्त है। उसे अर्जन भी आता है और बचत करना भी आता है।

इसी प्रकार श्रीमान् का अर्थ है - इसमें श्री क्या है लक्ष्मी। और मान् का अर्थ है गर्व, सम्मान। और लक्ष्मी के मान है श्रीविष्णु।

आप पुरुष हो, आप अपने आपको बहुत कर्मशील और महान् समझते हो लेकिन आज का शिविर में आधा शक्ति को समर्पित कर रहा हूं, जो निरन्तर क्रियाशील रहती है। शुरुआत में मैंने कहा था कि पुरुष के लिये सण्डे होता है लेकिन स्त्री के लिये कोई सण्डे, मण्डे नहीं। हर समय क्रियाशील, इसीलिये तो उसे शक्ति कहा जाता है।

और स्त्री और पुरुष की प्रकृति में भी बहुत अन्तर होता है। पुरुष हमेशा बाद में सोचता है, पहले काम में लग जाता है और इस कारण बड़ी-बड़ी गलतियां हो जाती है। जबकि स्त्री पहले विस्तार से सोचती है कि क्या आवश्यक है और क्या अनावश्यक है? वह कम में भी काम चलाना जानती है और ज्यादा हो गया तो वह संग्रह करना भी जानती है। यह मति है, यह बुद्धिमता है।

एक व्यवहारिक कथा है - पत्नी ने पति को फोन किया कि शाम को ऑफिस से आते समय मण्डी से सब्जी लेते आ जाना।

पुरुष देव पहुंचे सब्जी की दुकान, अब वहां तो सब्जियों का भण्डार लगा हुआ, सब तरह की सब्जियां। भूल गया था कि क्या सब्जी लाने का बोला, उसने सोचा कि पत्नी को खुश करने के लिये सब तरह की सब्जियां ले जाता हूं और 20 तरह की सब्जियां एक-एक किलो उठा ली, आलू भी, गोभी भी, टमाटर भी, भिण्डी भी, लौकी भी, तुरई भी, सेबफली भी, कद्दू भी।

भाई साहब स्कूटर पर बीस किलो का वजन लादे, घर पहुंचे। सोचा कि पत्नी प्रसन्न हो जायेगी और दोनों बाहें उठाकर घर में प्रवेश किया।

पत्नी ने पूछा ये सब क्या है, इतनी सब्जी। भोलेपन से कहा कि सब सब्जियां लिया हूं। जो मर्जी हो, जो बनाओं।

पत्नी ने सिर पर हाथ रखकर कहा कि हे भगवान कैसे पति से पाला पड़ा है जिसे इतना भी ज्ञान नहीं है घर में चार तो प्राणी है और मालूम नहीं है कि कल वापिस ताजी सब्जी मिल जायेगी, अब फ्रिज में भी जगह नहीं और यह भर-भर कर ले आया है।

यह पुरुष काशिव भाव है। हे भोले भण्डारी मेरा भण्डार भर दो। जबकि शक्ति भाव है, श्रीमति भाव है जो साधन है उनका समुचित उपयोग कैसे किया जायें?

जो कार्य हाथ में है उसे किस प्रकार से सम्पादित किया जाये कि उसका पूर्ण फल प्राप्त हो।

यह क्रिया केवल शक्ति ही कर सकती है क्योंकि शक्ति चैतन्य होती है वह जीवन का अविरल प्रवाह जानती है। वह अपने भीतर भण्डार भरकर नहीं रखती, वह उपयोग और उपभोग दोनों जानती है।

जो व्यक्ति शक्ति का उचित उपयोग करते है वही तो सफल है। इतना जान लीजिये कि शक्ति को आप एकत्र कर के नहीं रख सकते। उसे तो निरन्तर और निरन्तर चैतन्य रखना पड़ता है क्योंकि शक्ति स्वयं नित्य-नित्य जाग्रत है।

अब मैं सबसे महत्वपूर्ण बात कह रहा हूं कि हमारे जीवन में शारीरिक, आध्यात्मिक, भौतिक कष्ट न हो। एक ही उपाय है सूर्य से प्रेरणा लो, सूर्य की भांति निरन्तर और निरन्तर कर्त्तव्य करते रहो।

देखों, जीवन मिला है कर्त्तव्य निभाने के लिये। कर्तव्य करोगे तो अधिकार मिलेंगे। कर्तव्य से आप भाग नहीं सकते। जितने अच्छे तरीके से कर्तव्य निभाओंगे उतना ही आदित्य देव के आर्दशों पर चलोंगे।

कर्तव्य से भागने का अर्थ है - अपने जीवन के उद्देश्य से भागना।

आपके जीवन का क्या उद्देश्य है। हम अपने घर-परिवार और समाज का कल्याण करें।

हम प्रसन्न रहे, हम अपना कर्तव्य करते रहे और दूसरों की प्रसन्नता में भी सहयोग दे।

अपना कर्तव्य निभाने में कभी पीछ नहीं हटे, इस कर्तव्य पथ पर धैर्य के साथ आगे बढ़ना है, संयम के साथ आगे बढ़ना है।

मुझे एक बात समझ में आ रही है कर्तव्य पथ हाईवे है जिसे आपको एक शहर से दूसरे शहर जाना है तो आप हाईवे से जा सकते है या शहर के अन्दर-अन्दर से भी जा सकते है।

हाईवे को रास्ता, सीधा, सरल होता है पर हाईवे पर टोल कटता है।

जीवन में सदैव सही मार्ग पर जाने के लिये टोल देने के लिये तैयार होना ही पड़ता है और कर्तव्य पथ के हाईवे पर बढ़ने का अर्थ हैं जीवन में त्याग का टोल, सेवा का टोल, संयम का टोल।

श्री आपका वरण करें, मति सरस्वती आपका वरण करें और देव शक्ति आपकी कामनओं से अधिक आपको प्रदान करें। यह मेरा आशीर्वाद है।

बहुत-बहुत आशीर्वाद...

परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

(मकर संक्रान्ति महोत्सव,
सम्बलपुर - 2025)

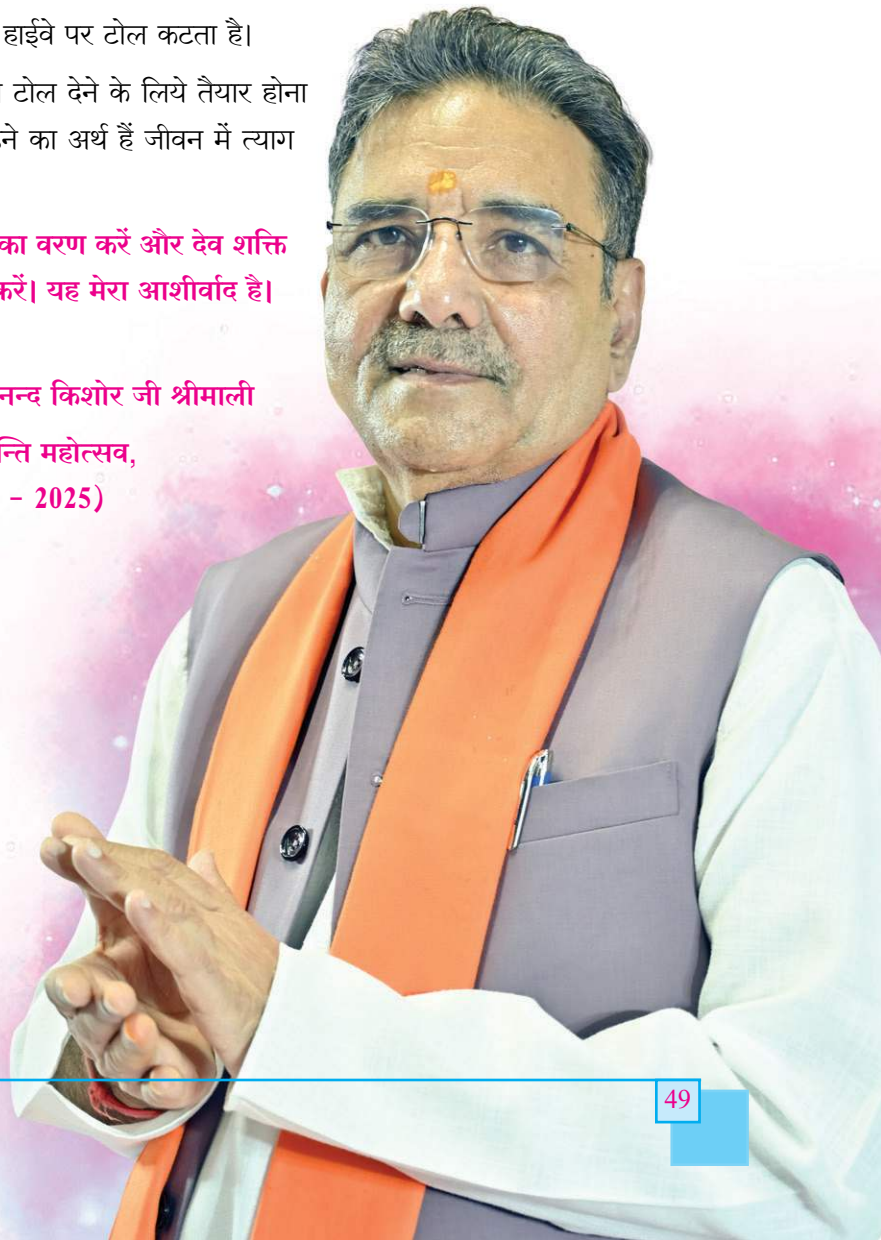

श्रावण मास (30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026) नित्य पाठ करें

मार्कण्डेय रचित चन्द्रशेखर स्तोत्र

रत्नासानु शरासनं रजतादि श्रृंग निकेतनम्।
सिञ्जिनीकृत पन्नगेश्वर मच्युतानन सायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।१।।

पञ्चपादप पुष्पगन्ध पदाम्बुज द्वयशोभितं
भाललोचन जातपावक दग्ध मन्मथ विग्रहम्।
भस्मदिग्ध कलेबरं भवनाशनं मव्ययं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।२।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

मत्तवारण मुख्यचर्म कृतोत्तरीय मनोहरं
पङ्कजासन पद्मलोचन पूजितांघ्रि सरोरुहम्।
देवसिन्धु तरङ्गसीकर सिक्तशुभ्र जटाधरं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।३।।

यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजङ्ग विभूषणं
शैलराज सुता परिष्कृत चारुवाम कलेबरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।४।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

कुण्डलीकृत कुण्डलेश्वर कुण्डलं वृषवाहनं
नारदादि मुनीश्वर स्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामर पादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।५।।

भेषजं भव रोगिणामखिलापदाम पहारिणं
दक्ष यज्ञ विनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्ति मुक्ति फल प्रदं सकलाघ संघ निबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।६।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

भक्त वत्सल मर्चितं निधिक्षयं हरिदंबरं
सर्व भूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम्।
सोमवारिद भोहुताशन सोमपानिलखाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।७।।

विश्व सृष्टि विधायिनं पुनरेव पालन तत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चम शेष लोक निवासिनम्।
क्रीडयन्त महर्निशं गणनाथ यूथ समन्वितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।८।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

हिन्दी भावार्थ

कैलाश शिखर पर जिनका निवासगृह है, जिन्होंने मेरु गिरि का धनुष, नागराज वासुकि की प्रत्यञ्चा और भगवान विष्णु को अग्निमय बाण बनाकर तत्काल ही दैत्यों के तीनों पुरों को दग्ध कर डाला था, सम्पूर्ण देवता जिनके चरणों की वन्दना करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।1।।

मन्दार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन के पुष्पों से सुगन्धित युगल चरण-कमल जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जिन्होंने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की ज्वाला से कामदेव के शरीर को भस्म कर डाला था, जिनका श्री विग्रह सदा भस्म से विभूषित रहता है, जो भव-सबकी उत्पत्ति के कारण होते हुए भी भव - संसार के नाशक हैं तथा जिनका कभी विनाश नहीं होता, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।2।।

जो मतवाले गजराज के मुख चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पड़ते हैं, ब्रह्मा और विष्णु जिनके चरण-कमलों

की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरंगों से भीगी हुईं शीतल जटा धारण करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।3।।

जो यक्षराज कुबेर के सखा, भग देवता की आंख फोड़ने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं, जिनके श्रीविग्रह के सुन्दर वामभाग को गिरिराज किशोरी उमा ने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिनका कण्ठभाग नीले रंग का दिखायी देता है, जो एक हाथ में फरसा और दूसरे में मृगमुद्रा धारण किये रहते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।4।।

कुण्डली मारे हुए सर्पराज जिनके कानों में कुण्डल का काम देते हैं, जो वृषभ पर सवारी करते हैं, नारद आदि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अन्धकासुर का नाश करने वाले, आश्रित जनों के लिये कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शान्त करने वाले हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।5।।

जो जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिये औषध रूप हैं, समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष-यज्ञ का विनाश करने वाले हैं, सत्त्व आदि तीनों गुण जिनके स्वरूप हैं, जो तीन नेत्र धारण करके, भोग और मोक्षरूपी फल देते तथा सम्पूर्ण पापराशि का संहार करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?116।।

जो भक्तों पर दया करने वाले हैं, अपनी पूजा करने वाले मनुष्यों के लिये अक्षय निधि होते हुए भी जो स्वयं दिगम्बर रहते हैं, जो सब भूतों के स्वामी, परात्पर, अप्रमेय और उपमा रहित हैं, पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और चन्द्रमा के द्वारा जिनका श्रीविग्रह सुरक्षित है, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?117।।

जो ब्रह्मा रूप में सृष्टि करते हैं, फिर विष्णु रूप में पालन और अन्त में सारे प्रपञ्च का संहार करते हैं, सम्पूर्ण लोकों में जिनका निवास है तथा जो गणेश जी के पार्षदों से घिरकर दिन-रात भांति-भांति के खेल किया करते हैं, उन चन्द्रशेखर की शरण में यमराज मेरा क्या करेगा?।।8।।

श्रीशिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।१।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।२।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

शिवाय गौरी वदनाब्ज वृन्द
सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।३।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

वसिष्ठ कुम्भो द्भवगौतमार्य
मुनीन्द्रदेवैरर्चिताय।
चन्द्रार्केश्वराय नागेश्वराय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।४।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।५।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

रक्षा बंधन – 28 अगस्त 2026

ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै,
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

गुरु और शिष्य एक दूसरे का बल संवर्धन करें

गुरु रक्षा सूत्र

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध संसार में सबसे दिव्यतम पावन सम्बन्ध है। गुरु और शिष्य एक दूसरे के पूरक हैं। शिष्य गुरु के समक्ष अपना भाव, विश्वास और श्रद्धा समर्पित करता है। उसी अनुरूप गुरु भी अपने शिष्य को वरदान के साथ प्रेम और विश्वास की शक्ति देते हैं।

गुरु का कार्य शिष्य को उसके जीवन में आने वाली बाधाओं से सचेत करने के साथ-साथ उन बाधाओं पर विजय प्राप्ति की शक्ति प्रदान करना है। शिष्य के पास संकल्प का भाव होता है और गुरु के पास शिष्य की रक्षा का भाव एवं दिव्य शक्ति होती है।

गुरु के निर्देशन में ही शिष्य कार्य कर अपने जीवन में पूर्ण विजय प्राप्त करता है। शिष्य-साधक के जीवन में नित्य प्रति सैकड़ों भौतिक बाधाएं आती हैं और गुरु ही इन बाधाओं के निवारण के उपाय, अपनी ज्ञान शक्ति द्वारा शिष्य को निरन्तर बताते रहते हैं। जब कोई पवित्र कार्य, यज्ञ, अनुष्ठान आदि किया जाता है तो विशेष प्रकार की क्रिया की जाती है, जिसे मौली बंधन **'रक्षा-सूत्र बन्धन'** कहा जाता है। इस क्रिया में गुरु अपने शिष्य को रक्षा सूत्र पहनाते समय वचन देते हैं –

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेनत्वां प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचलः।।

जैसे **'भगवान वामन'** राजा बलि को शिष्य के रूप में स्वीकार कर उसकी रक्षा के लिए आबद्ध हो गये उसी प्रकार शिष्य के प्रेम और श्रद्धाभाव में आबद्ध होकर मैं तुम्हारी रक्षा का वचन देता हूं।

इसी भाव को निरन्तर जाग्रत रखने हेतु प्रत्येक शिष्य को गुरु प्रदत्त एक विशेष गुरु रक्षा सूत्र धारण करना आवश्यक है। जब आपने यह **'गुरु रक्षा सूत्र'** धारण कर रखा है तो निश्चित मानिए सद्गुरुदेव सदैव आपके साथ हैं।

☆ **गुरु रक्षा सूत्र आपके हाथ में बंधा एक विशेष कवच है, जो आपको निरन्तर शक्ति प्रदान करता है। मंत्रों से अभिमंत्रित प्राण प्रतिष्ठा की विशेष क्रिया के साथ गुरु रक्षा सूत्र का निर्माण किया गया है।**

☆ **गुरु रक्षा सूत्र को गुरु ध्यान-पूजन कर पुरुष साधक दाहिने हाथ में और स्त्री साधक बांये हाथ में बांध लें। गुरु रक्षा सूत्र प्रत्येक शिष्य को अवश्य धारण करना है। स्त्रियों द्वारा इसे धारण करने से तंत्रदोष, रोग इत्यादि से रक्षा प्राप्त होती है।**

☆ **अपने परिवार में बच्चों तथा अन्य सदस्यों को भी यह दिव्यतम गुरु रक्षा सूत्र अवश्य पहना दें। इससे बालकों पर नजर दोष इत्यादि समाप्त हो जाते हैं और विद्या सिद्धि प्राप्त होती है।**

– प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 400/–

रक्षा बंधन का दिन सामाजिक लोक मर्यादा में बहन द्वारा भाई को रक्षा सूत्र पहनाया जाता है। वैदिक काल में श्रावण पूर्णिमा को गुरु शिष्य रक्षा पर्व के रूप में सम्पन्न किया जाता था। शिष्य द्वारा गुरु को रक्षा सूत्र अर्पित किया जाता था और गुरु द्वारा शिष्य को रक्षा सूत्र प्रदान किया जाता था। वैदिक प्रार्थना 'ॐ सह नाववतु...' गुरु शिष्य एक दूसरे को आपस में रक्षा बल, संबल और सहयोग की प्रार्थना है। प्रत्येक शिष्य गुरु द्वारा संस्पर्शित रक्षा सूत्र को इस दिन स्वयं पहने और अपने परिवार के सदस्यों को पहनायें।

ईश्वर हमारी प्रार्थना अवश्य सुनते हैं हम अपना पुरुषार्थ करते रहे...

ईश्वर को सकल कामनाओं का अधिपति माना गया है, इसीलिए हम अपनी इच्छाओं और दुखों को लेकर उनके पास जाते हैं। हमारी कामनाएं भी क्या हैं? बस अपने लिए सुख और शांति को सुनिश्चित करना। लेकिन हमारी सुख-शांति अनेक बार हमारे हाथों में नहीं होती। दूसरे लोग जैसे हमारी संतान, हमारे जनक या हमारे श्रेष्ठ जन उसका रिमोट अपने हाथों में लिए होते हैं। ऐसे में जब सुख और शांति हम से दूर हो जाए और कितनी भी प्रार्थना कर लो, ईश्वर उस पर तथास्तु की मुहर न लगाएं, तो हमें क्या करना चाहिए?

संशय और विश्वास का द्वंद्व

ऐसी स्थिति में ईश्वर पर संदेह होना और यह विचार आना स्वाभाविक है कि ईश्वर हैं भी या नहीं? और यदि हैं, तो क्या वे हमारी प्रार्थनाओं को सुन रहे हैं? यह संशय हमें तोड़ भी सकता है और सशक्त भी बना सकता है। प्रश्न यह है कि हम इस संशय को किस दृष्टिकोण से देख रहे हैं? संशय जहां भी आता है, वह संबंधों में तनाव डाल देता है। संबंध असहज भी होंगे और उन पर प्रश्नचिह्न भी लगेगा, क्योंकि संशय का कार्य ही तोड़ना है। पर यह संशय तर्कसंगत भी लगता है। जब हम अपनी आकांक्षाओं का भार लेकर ईश्वर के पास जाते हैं और वे उन्हें ठंडे बस्ते में डाल देते हैं, तो हमें क्रोध और संदेह का आना लाजमी है। यह संदेह विश्वास की जड़ में मट्ठे की तरह काम करता है, जो उस जड़ को दुर्बल कर देता है।

ईश्वर के तथास्तु न कहने के तीन मुख्य कारण

ईश्वर हमारी प्रार्थनाओं पर शीघ्रता से तथास्तु नहीं कहते, इसके पीछे तीन गहरे कारण हो सकते हैं -

* **हमारा संघर्ष अभी पूरा नहीं हुआ है:** जीवन एक संघर्ष है। यहां बिना कुछ किए या आराम से बैठे कुछ नहीं मिलता। माया और बुद्धि दोनों मिलकर हमें भली-भांति मथती हैं। यह मंथन जरूरी है, क्योंकि इस मंथन के बाद ही ईश्वरीय प्रेम का घी निकलता है।
* **ईश्वर पर भरोसा दृढ़ नहीं है:** कई बार हमारी श्रद्धा केवल संकट में जागती है। ईश्वर हमारे धैर्य और विश्वास की परीक्षा लेते हैं ताकि हमारा उनसे संबंध केवल लेन-देन का न रहकर आत्मिक हो जाए।
* **हमारी मांग हमारे लिए उचित नहीं है:** हम अक्सर वही मांगते हैं जो हमें वर्तमान में अच्छा लगता है, लेकिन ईश्वर वह देखते हैं जो हमारे भविष्य और हमारी आत्मा के लिए कल्याणकारी हो। एक मां भी हमेशा बच्चे की हर ज़िद पूरी नहीं करती, वैसे ही ईश्वर भी हमारी हर अनुचित मांग को स्वीकार नहीं करते।

ऐसे समय में हम क्या करें?

सबसे पहले कर्म को प्रधानता दें: जब प्रार्थना काम न आए, तो हमें समझना चाहिए कि अब पूरी ऊर्जा के साथ कर्म करने का समय है।

प्रार्थना हमें मानसिक शक्ति देती है, लेकिन परिस्थिति को बदलने के लिए हमारा पुरुषार्थ आवश्यक है।

स्वीकार्यता का भाव लाएं: हम यह मान लें कि जो स्थिति आज है, वह किसी गहरे कारण से है। जब हम ईश्वर की मर्जी को स्वीकार कर लेते हैं, तो हमारे मन का तनाव अपने आप कम होने लगता है।

आत्म-मंथन करें: हम यह जांचें कि जो हम मांग रहे हैं, क्या वह वास्तव में हमारे विकास के लिए जरूरी है, या वह केवल एक क्षणिक इच्छा है?

ईश्वर का मौन उनकी अनुपस्थिति नहीं, बल्कि उनकी एक अलग योजना का संकेत है। जब वे हमारी प्रार्थना नहीं सुन रहे होते, तब वे हमें भीतर से मजबूत बना रहे होते हैं।

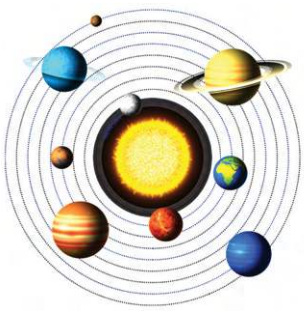

अगस्त 2026

नक्षत्रों की वाणी

मेष

नवग्रहों की गणनानुसार समय आपके लिये मिश्रित फलकारक है कार्य स्थल पर कार्य करने की अधिकता के कारण भागदौड़ और व्यस्तता रहेगी और आपके परिश्रम का आपको फल भी प्राप्त होगा परिणाम स्वरूप आपको आश्चर्यजनक धन लाभ होगा, किन्तु आपको अनावश्यक खर्च को नियन्त्रित भी करना होगा। साथ ही भाईयों से चले आ रहे विवाद का अन्त होने से शान्ति का अनुभव होगा अनुकूलता हेतु **'पुष्प दन्तेश्वर शिव साधना'** (जुलाई 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 6, 10, 23, 28 हैं।

वृषभ

इस माह मान-सम्मान में वृद्धि होगी, लोग आपके कार्य का सम्मान करेंगें। जिससे आत्मविश्वास बढ़ेगा, नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति कार्यस्थल पर अपना प्रभाव और वर्चस्व बनाने में सफल होंगे, व्यापार क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति अपनी आय के संसाधन बढ़ाने के लिये प्रयास करेंगें। महत्वपूर्ण कार्य करते समय सावधानी रखें, आर्थिक पक्ष को लेकर सावधानी रखने की आवश्यकता है तथा इस माह उधार लेने और देने से बचें। अनुकूलता हेतु **'विन्ध्यवासिनी साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 2, 12, 20, 31 हैं।

मिथुन

ज्योतिष की गणना से पता चलता है कि वर्तमान समय आपके लिये चारों तरफ से सफलतादायक है समाज में आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को प्रमोशन के रूप में सफलता प्राप्त होगी। वहीं व्यापार क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा। लम्बे समय से संतान से सम्बन्धित चली आ रही समस्या के निदान होने से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'लक्ष्मी आबद्ध दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 13, 15, 30 हैं।

कर्क

क्रोध में व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है इसलिये क्रोध से बचें और व्यर्थ के लड़ाई-झगड़ों से दूर रहें। समय उन्नति और प्रगति करने का है राजकीय कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त होगी, किन्तु आपकी उन्नति से ईर्ष्या और द्वेष रखने वाले गुप्त शत्रुओं से सावधान रहने की आवश्यकता है। इस माह संतान से सम्बन्धित महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होने से हर्ष का वातावरण रहेगा। आप अनुकूलता हेतु **'बृहस्पतिश्वर शिव साधना'** (जुलाई 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 4, 16, 24, 30 हैं।

सिंह

जीवन में व्यक्ति को सब कुछ दुबारा मिल सकता है किन्तु समय एक ऐसी चीज है जो दुबारा लौटकर नहीं आता इसलिये समय का सदुपयोग करें और अपनी उन्नति और प्रगति के लिये क्रियाशील रहें। व्यापार इत्यादि में धन का निवेश सोच-समझकर करें। दाम्पत्य सुख में वृद्धि के साथ जीवन साथी का सहयोग आपको आगे बढ़ने में सहायक होगा। परिवार में किसी के स्वास्थ्य को लेकर अस्पताल जाना पड़ सकता है, आप **'तंत्र उत्कीन त्रिपुरा साधना'** (जुलाई 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 7, 15, 23, 27 हैं।

कन्या

जीवन में धोखा अथवा विश्वासघात तब ही होता है जब वह आंख बंद कर लोगों पर विश्वास करते है। इसलिये अंध विश्वास से बचने का प्रयास करें। आपके परिश्रम का फल आपको प्राप्त होने जा रहा है नौकरी में प्रमोशन प्राप्त हो सकता है, व्यापार क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति व्यापार बढ़ाने के अवसर प्राप्त होंगे, नये व्यक्तियों से सम्बन्ध बढ़ेंगे जिसका आपको लाभ होगा। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'भाग्योदय दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 8, 12, 17, 29 हैं।

तुला

वर्तमान समय मिश्रित फलकारक है इस माह आपको आपके परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त होगा किन्तु अनायास अनावश्यक खर्च आपको परेशान कर सकते हैं। इस माह आप अपने कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा उच्च अधिकारीयों के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है परिवार में व्यर्थ की बात को लेकर वाद-विवाद की स्थिति बन सकती है, इसलिये आप शान्त और संयमित रहें। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'पाशुपतास्त्रेय दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 11, 15, 24 हैं।

वृश्चिक

नवग्रहों के प्रभाव से मन में कुछ उलझनें रह सकती है। कार्य स्थल पर कार्य की अधिकता से स्वयं को मानसिक रूप से थका हुआ अनुभव करेंगें। किन्तु याद रखे व्यक्ति का सबसे बड़ा धन उसका स्वास्थ्य होता है, इसलिये कार्य की अधिकता में इसकी उपेक्षा न करें। इस माह जीवन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हो सकते है, नौकरी इत्यादि में हो रहे परिवर्तन को खुले मन से स्वीकार करें। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 8, 17, 24, 31 हैं।

धनु

किसी समस्या के लिये चिन्ता करने की अपेक्षा बुद्धि और विवेक से उसका निदान करना चाहिये। आप भी भविष्य की चिन्ता छोड़कर बुद्धि-विवेक से भविष्य की योजना बनाकर कार्य करें। परिवार और व्यवसायिक जीवन में सामंजस्य बनानें का प्रयास करें। बेरोजगार व्यक्तियों का संघर्ष समाप्त होगा, उन्हें योग्यता अनुरूप रोजगार की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थी वर्ग को भी उनके परिश्रम के अनुरूप सफलता प्राप्त होगी। अनुकूलता हेतु **'वार्ताली तीव्र तंत्र स्तम्भन साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 2, 17, 24, 28 हैं।

मकर

कार्य जब योजनाबद्ध रूप से किया जाता है तो निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है। इस माह आप व्यापार विस्तार के लिये योजना बनाकर बुद्धि-विवेक के साथ कार्य करें, परिणाम स्वरूप आय के संसाधनों में वृद्धि होगी। अपने अनावश्यक खर्च को नियन्त्रित करें अन्यथा दिक्कत का सामना करना पड़ेगा। लम्बे समय से अटके कार्य पूर्ण होने से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। प्रेम सम्बन्धों में सफलता प्राप्ति का योग है। सद्गुरुदेव से **'इन्द्र वैभव वर्चस्व दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 10, 21, 31 हैं।

☆ **सर्वार्थ सिद्धि योग** - 2, 4, 8, 16, 20, 21, 23, 30 अगस्त / 1, 3, 7, 8, 13, 16 सितम्बर ☆ **अमृत योग** - 4, 8, 16 अगस्त / 1, 13, 26, 29 सितम्बर ☆ **द्विपुष्कर योग** - 9 अगस्त ☆ **त्रिपुष्कर योग** - 25, 29 अगस्त / 12 सितम्बर ☆

कुम्भ

क्रोध वह अग्नि है जो व्यक्ति की सोचने समझने की शक्ति समाप्त कर देती है। इसलिये आप क्रोध को अपने से दूर रखें अन्यथा अपना ही नुकसान कर बैठेंगें। आप शान्त संयमित रहते हुये कर्म करते रहें, कोर्ट-कचहरी के मामले में थोड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। बेरोजगार व्यक्तियों को भी इंटरव्यू इत्यादि में सफलता प्राप्त होगी साथ ही लम्बे समय से अटके धन की प्राप्ति होने से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। अनुकूलता हेतु **'चन्द्रमौलिश्वर साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 2, 19, 23, 30 हैं।

मीन

इस माह का प्रारम्भ थोड़ा परेशानी से युक्त रहेगा, जिस कारण आप शरीर और मन दोनों से थका हुआ और अस्वस्थ महसूस करेंगें। किन्तु जल्द ही परेशानी के बादल हटने लगेंगें, कोर्ट सम्बन्धित मामलों में थोड़ी सावधानी रखें। भविष्य के लिये यदि निवेश की योजना है तो सोच-विचारकर ही करें। विद्यार्थी वर्ग अपने लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर कर्म करते रहें, समय आपके पक्ष में है। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा दीक्षा'** (जुलाई 2026) ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 3, 12, 17, 24 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

15 अगस्त	श्रावण शु.-03	शनिवार	स्वतंतत्रा दि./ ह. तीज
17 अगस्त	श्रावण शु.-05	सोमवार	श्रावण सोमवार
23 अगस्त	श्रावण शु.-11	रविवार	पुत्रदा एकादशी
24 अगस्त	श्रावण शु.-11	सोमवार	श्रावण सोमवार
28 अगस्त	श्रावण शु.-15	शुक्रवार	रक्षा बंधन
31 अगस्त	भाद्रपद कृ.-03	सोमवार	कज्जली तीज
04 सितम्बर	भाद्रपद कृ.-08	शुक्रवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
07 सितम्बर	भाद्रपद कृ.-11	सोमवार	अजा एकादशी

काल निर्णय

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं, और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	
रविवार (अगस्त 2, 9, 16, 23, 30) (सितम्बर 6, 13)	दिन रात	06:00 से 10:00 तक 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (अगस्त 3, 10, 17, 24, 31) (सितम्बर 7, 14)	दिन रात	06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (अगस्त 4, 11, 18, 25) (सितम्बर 1, 8)	दिन रात	06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अगस्त 5, 12, 19, 26) (सितम्बर 2, 9)	दिन रात	07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (अगस्त 6, 13, 20, 27) (सितम्बर 3, 10)	दिन रात	06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अगस्त 7, 14, 21, 28) (सितम्बर 4, 11)	दिन रात	06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अगस्त 1, 8, 15, 22, 29) (सितम्बर 5, 12)	दिन रात	10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

आज क्या करना है - वराहमिहिर वचन

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जाएंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाए। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अगस्त - 2026

16. गणेशजी को **'ॐ गं गणपतये नमः'** बोलकर इक्कीस बार दूर्वा अर्पित करें।
17. **श्रावण के तृतीय सोमवार** पर **'रसेश्वर शिव अभिषेक साधना'** (जुलाई 2026) सम्पन्न करें।
18. **श्रावण शु. षष्ठी** पर के **कल्कि जयन्ती** पर सद्गुरुदेव से **'क्रियमाण भाग्योदय दीक्षा'** ग्रहण करें।
19. तेल का दीपक जलाकर घर के बाहर रख दें।
20. आज प्रातः गुरु स्मरण कर घर से निकलें।
21. **'गुरु जन्म'** दिवस पर विशेष गुरु पूजन कर, गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. काले उड़द काला वस्त्र दान करें, धन लाभ होगा।
23. **पुत्रदा एकादशी** के शुभ मुहूर्त संतान के सौभाग्यवृद्धि हेतु **'संतान गोपाल साधना'** (पृष्ठ सं. 27) करें।
24. **श्रावण के चतुर्थ सोमवार** पर **'रसेश्वर शिव अभिषेक साधना'** (जुलाई 2026) सम्पन्न करें।
25. **मूंगा माला** (न्यौ. 300/-) का पूजन कर धारण करें।
26. अपने इष्ट का स्मरण कर दिन का आरम्भ करें।
27. प्रातः गुरु आरती अवश्य सम्पन्न करें।
28. **रक्षा बंधन** पर **'गुरु रक्षा सूत्र'** (पृष्ठ सं. 52) धारण करें और चन्द्र ग्रहण काल में **'मदनाक्षी अप्सरा साधना'** (पृष्ठ सं. 17) प्रारम्भ करें।
29 हनुमान विग्रह पर तेल और सिन्दूर अर्पित करें।
30. भगवान सूर्य कुंकुम, अक्षत मिश्रित जल से अर्घ्य दें।
31. **कज्जली तीज** के शुभ योग में सद्गुरुदेव से **'आद्या विभूषिणी योगिनी दीक्षा'** ग्रहण करें।

सितम्बर - 2026

1. आज दर्पण में मुख देख कर घर से निकलें, कार्य सिद्धि होगी।
2. आज **'गणेश आरती'** अवश्य सम्पन्न करें।
3. नारायण पूजन कर ही कार्य पर जायें, सफलता मिलेगी।
4. **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, महाकाली जयन्ती** पर सद्गुरुदेव से **'लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 11) ग्रहण कर साधना सम्पन्न करें और **'महाकाली दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 13) ग्रहण साधना सम्पन्न करें।
5. काले तिल का दान करें, बाधा समाप्त होगी।
6. जल में कुंकुम, अक्षत मिश्रित कर सूर्य को अर्घ्य दें।
7. भगवान विष्णु का पूजन कर **'तुलसी दल'** अर्पित करें।
8. **'हनुमान कवच'** (न्यौ. 5100/-) पूजन कर, लाल धागे में धारण करें, सर्वकार्य सिद्धि होगी।
9. कागज पर **'ऐं'** बीज लिखकर शिवलिंग पर चढ़ा दे।
10. **'अघोर चतुर्दशी'** आरोग्य प्राप्ति हेतु सद्गुदेव से 'महामृत्युंजय दीक्षा' (पृष्ठ सं. 00) ग्रहण करें।
11. आज किसी निर्धन व्यक्ति को भोजन करायें, बाधा समाप्त होगी।
12. किसी शिव मंदिर में काले उड़द भेंट करें।
13. सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर ही दिन का आरम्भ करें।
14. **गणेश चतुर्थी** के शुभ अवसर **'सिद्धिदायक गणपति साधना'** (पृष्ठ सं. 62) सम्पन्न कर, सद्गुरुदेव से **'कार्य सिद्धि गणपति दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 64) ग्रहण करें।
15. **'ऋषि पंचमी'** पर सद्गुरुदेव का पंचोपचार पूजन अवश्य सम्पन्न करें।

गणपति

सिद्धि का दिव्य विज्ञान

विघ्नों से विजय तक की यात्रा

हर व्यक्ति जीवन में सफलता चाहता है, परंतु सफलता का सबसे बड़ा शत्रु विघ्न नहीं, बल्कि बिखरा हुआ मन, गलत निर्णय और सीमित दृष्टि है। इसलिए सनातन परंपरा ने प्रत्येक शुभ कार्य के आरंभ में श्रीगणपति का स्मरण अनिवार्य माना।

गणपति बुद्धि, विवेक, मौलिक चिंतन, एकाग्रता और पूर्णता के अधिष्ठाता हैं। गणपति समस्याओं से भागना नहीं, बल्कि उन्हें प्रयासों से अवसर में बदलना सिखाते है। जब गणपति हमारे विचारों, निर्णयों और कर्मों में उतरने लगते है, तभी जीवन वास्तव में निर्विघ्न होकर सिद्धि और समृद्धि की ओर अग्रसर होता है।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

गणपति आरम्भ के देवता हैं। किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले गणपति की पूजा-अर्चना की जाती है और इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि शिव और पार्वती के विवाह के पूर्व गणपति की वंदना की गई थी और इसके बाद ही विवाह संस्कार संपन्न हुआ था।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि गणपति शिव और पार्वती की संतान हैं, परंतु गणपति आदि देव हैं और कोई भी शुभ कार्य उनके स्मरण के बिना आरंभ नहीं होता है, क्योंकि गणपति में यह शक्ति है कि वे कार्य को निर्विघ्न कर दें।

प्राचीन समय में तो संग्राम लड़े जाते थे, परंतु आज के समय में तो संग्राम होते नहीं हैं, पर अब जीवन अपने आप में एक संग्राम है। ऐसे में गणपति का पूजन बहुत आवश्यक है। गणपति हमारे जीवन से विघ्न हर देते हैं, फिर जो हमें चाहिए वह हमें मिल जाता है।

एक आम मनुष्य, एक आम साधक की इच्छाएं भी क्या हैं? वह चाहता है कि उसका घर बन जाए, उसकी संतान अच्छे से पढ़-लिख ले, उसके परिवार में सुख रहे, उसके घर में स्वास्थ्य और आमदनी बनी रहे।

इन सभी इच्छाओं की पूर्ति में विघ्नेश्वर की कृपा अनिवार्य है, बिना उनके सहयोग के न तो साधना मिलेगी, न सिद्धि। ऋद्धि का तो प्रश्न ही नहीं आता है। **ऋद्धि का अर्थ है धन एवं सिद्धि का अर्थ है सफलता।**

जैसे दूध को दही में जमाना होता है, तो उसमें खट्टा डालकर उसे शांति से छोड़ दिया जाता है, जिससे वह जम सके। अब यदि हर आधे घंटे में कोई आकर उसमें कलछी चला देगा, तो क्या दही जम पाएगा?

यदि तुम मंत्र जप कर रहे हो, तब तुम चाहते हो कि तुम्हें एकांत और शांति मिले, जिससे तुम्हारा जप निर्विघ्न पूर्ण हो सके। हर दस मिनट में यदि तुम उठकर इधर-उधर देखने लगोगे, तो क्या तुम्हारा जप संपूर्ण होगा?

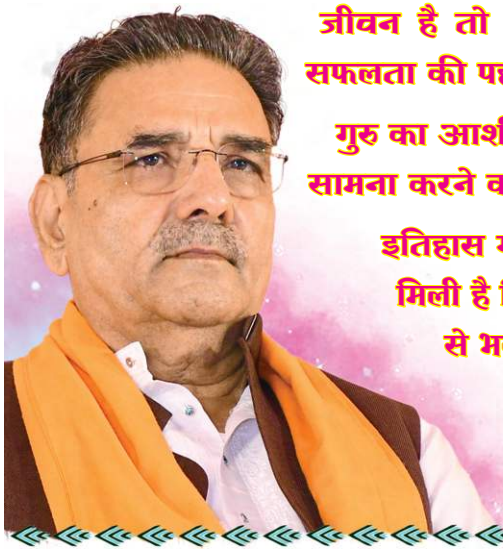

जीवन है तो समस्याएं भी आएंगी और संघर्ष करने का साहस ही सफलता की पहचान है....

गुरु का आशीर्वाद भी उन्हीं पर बरसता है, जिसके भीतर चुनौतियों का सामना करने का संकल्प, धैर्य और पुरुषार्थ होता है।

इतिहास गवाह है कि सम्मान, सिद्धि और सफलता केवल उन्हीं को मिली है जिन्होंने संघर्ष को अपना साथी बनाया। इसलिए कठिनाइयों से भयभीत नहीं, बल्कि उन्हें अवसर मानकर आगे बढ़ें।

जहां गुरु का मार्गदर्शन और साधक का पुरुषार्थ मिलते हैं, वहां असंभव भी संभव बन जाता है।

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली।

विद्यारंभ में भी निर्विघ्नता अनिवार्य है। नहीं तो अनेक लोग ऐसे हैं जो पढ़ाई तो बड़े उत्साह से आरंभ करते हैं, पर बीच में उनका अध्ययन किसी न किसी कारण से छूट जाता है। यह कारण धनाभाव हो सकता है या फिर मन का बदल जाना हो सकता है।

जब तुम किसी प्रयोजन को पूरा करने की सोचते हो तो तुम चाहते हो कि उसमें कोई बाधा नहीं आए। इसके लिए तुम्हें दो तत्व आवश्यक हैं – मनोबल और गणपति का आशीष।

दोनों ही गणपति हैं। मनोबल को विग्रह रूप में देखा जाए तो वह गणपति हैं, क्योंकि मनोबल बुद्धि से ही मिलता है।

आदि कवि वाल्मीकि श्रीगणेश स्तोत्र में कहते हैं, 'मैं उन कवियों के स्वामी, बुद्धि के अधिपति श्रीगणेश को प्रणाम करता हूं, जिनके दांतों का युगल समस्त विद्याओं और कलाओं का दान करने वाला है। वे देवताओं के गुरु बृहस्पति को भी विद्या प्रदान करने वाले हैं, तथा साधकों की इच्छित विद्याओं को प्रदान करते हैं।'

गणपति में प्रत्युत्पन्नमति का भंडार है। वे समस्याओं से घबराते नहीं हैं बल्कि उसके नए तरह के उपाय ढूंढ़ लेते हैं। एक बार एक प्रतियोगिता हुई कि प्रथम पूज्य देव कौन होंगे? इसमें था कि जो पृथ्वी की परिक्रमा सबसे शीघ्रता से कर लेगा वही बनेगा प्रथम पूज्य।

गणपति ने अपनी सवारी की शक्ति को आंका और कार्य की गंभीरता को देखते हुए, नया तरीका सोचा, पृथ्वी की परिक्रमा करने का। उन्हें पता था कि मूषक के भरोसे परिक्रमा करेंगे तो वह कभी पूर्ण नहीं होगा। उन्होंने माता-पिता की परिक्रमा की और कहा कि मेरे पृथ्वी और आकाश दोनों मेरे माता-पिता हैं। इस बात में कोई विवाद नहीं है कि माता-पिता धरती और आकाश होते हैं।

बस, बन गए गणपति प्रथम पूज्य, क्योंकि गणपति लकीर के फकीर नहीं हैं। यही गुण गणपति को दूसरे देवताओं से भिन्न कर देता है।

पृथ्वी की परिक्रमा की उस कथा का सार केवल इतना नहीं है कि गणपति ने माता-पिता को ब्रह्माण्ड माना, बल्कि उसका एक और गहरा संदेश है। गणपति ने यह दिखाया कि हर समस्या का समाधान केवल वेग से नहीं, दृष्टि से निकलता है। जो व्यक्ति केवल दूसरों के पीछे-पीछे चलता है, वह प्रतियोगिता तो कर सकता है, परंतु इतिहास नहीं रच सकता। **इतिहास वही रचते हैं, जो समस्या को नए कोण से देखने की क्षमता रखते हैं।**

गणपति के विशाल मस्तक का अर्थ ही है व्यापक चिंतन। वे हमें सिखाते हैं कि यदि जीवन में सफलता चाहिए तो केवल परिश्रम पर्याप्त नहीं है, **सही दिशा में परिश्रम और परिस्थितियों को नए दृष्टिकोण से देखने की क्षमता भी आवश्यक है।**

इसलिए गणपति बुद्धि के देवता हैं। बुद्धि का अर्थ केवल ज्ञान नहीं है। ज्ञान तो रावण के पास भी था, परंतु बुद्धि वह है जो सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करे। बुद्धि वह है जो एक ही परिस्थिति में दूसरों को संकट दिखाए और तुम्हें अवसर दिखा दे। यही प्रत्युत्पन्नमति है।

ध्यान से देखो, गणपति के शरीर का प्रत्येक अंग हमें यही शिक्षा देता है।

उनका बड़ा सिर कहता है - बड़ा सोचो।

उनके विशाल कान कहते हैं - अधिक सुनो और कम बोलो।

उनकी छोटी आंखें बताती हैं कि लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखो।

उनकी सूंड हमें सिखाती है कि परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालना सीखो। और उनका छोटा मुख यह कहता है कि जितना आवश्यक हो, उतना ही बोलो।

आज संसार में सबसे बड़ा विघ्न बाहर नहीं है, भीतर है। हमारा मन ही हर समय कलछी चलाने का काम कर रहा है। एक लक्ष्य तय करते हैं, फिर दूसरा लक्ष्य सामने आ जाता है। एक पुस्तक पढ़ते हैं, तभी मोबाइल का संदेश आ जाता है। एक साधना प्रारंभ करते हैं, तभी मन किसी और विषय की ओर भागने लगता है। बाहर की बाधाओं से पहले मन की चंचलता सबसे बड़ी बाधा है।

गणपति का स्मरण इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे मन को एकाग्रता प्रदान करते हैं। एकाग्रता ही शक्ति है। सूर्य का प्रकाश जब बिखरा हुआ रहता है तो केवल प्रकाश देता है, परंतु वही प्रकाश यदि उत्तल लेंस से एक बिंदु पर केंद्रित कर दिया जाए तो अग्नि उत्पन्न कर देता है। मनुष्य का मन भी ऐसा ही है। बिखरा हुआ मन केवल इच्छाएं उत्पन्न करता है, परंतु केंद्रित मन उपलब्धियां उत्पन्न करता है।

आज संसार में ज्ञान की कमी नहीं है, जानकारी की भी कमी नहीं है, परंतु ध्यान की कमी है। लोग बहुत कुछ जानते हैं, परंतु किसी एक कार्य पर टिक नहीं पाते। इसी कारण बहुत से लोग आरंभ तो बहुत करते हैं, परंतु पूर्ण बहुत कम करते हैं।

गणपति आरंभ के देवता ही नहीं हैं, वे पूर्णता के भी देवता हैं, क्योंकि विघ्नों को हटाने का अर्थ केवल बाहरी समस्याओं को दूर करना नहीं है, बल्कि मन के बिखराव को समाप्त करना भी है।

इसलिए गणपति की उपासना का वास्तविक अर्थ केवल मोदक चढ़ाना नहीं है, बल्कि उनके गुणों को अपने भीतर उतारना है। जब तुम परिस्थितियों से घबराने के स्थान पर नए उपाय खोजने लगते हो, जब तुम भीड़ का अनुसरण करने के स्थान पर स्वयं विचार करने लगते हो, जब तुम अपने मन को एक लक्ष्य पर स्थिर करना सीख लेते हो, तब समझना कि गणपति का आशीर्वाद प्राप्त होने लगा है।

वक्रतुण्ड का अर्थ ही है सीधी रेखा पर चलने की जिद छोड़कर आवश्यकता पड़ने पर वक्र मार्ग से भी समाधान ढूंढ़ लेना। संसार में बहुत बार सफलता उन्हीं को मिलती है जो अलग सोचने का साहस रखते हैं।

गणपति हमें यही सिखाते हैं कि **बुद्धि केवल पुस्तकों से नहीं आती, बल्कि दृष्टि से आती है और जिस मनुष्य के पास दृष्टि, धैर्य और एकाग्रता तीनों आ जाएं, उसके लिए विघ्न स्वयं मार्ग छोड़ देते हैं।**

भगवान गणपति केवल पूजन के नहीं, बल्कि धारण करने के देवता हैं...

विशाल बुद्धि, सूक्ष्म विवेक, अटूट धैर्य, प्रखर तर्कशक्ति, कर्मनिष्ठा और विनम्रता यही तो जीवन की वास्तविक संपदा है...

इन गुणों को अपने व्यक्तित्व में उतार लें, तो जीवन स्वतः ही आनन्द का भण्डार बन जाता है..

गणपति की कृपा से विघ्न स्वतः ही दूर हो जाते है और सफलता के द्वार खुल जाते हैं।

गणपति का वास्तविक आशीर्वाद तभी मिलता है, जब सद्गुरु ज्ञान से आत्मसात् होकर साधक विचारों, कर्मों और चरित्र में गणपति को धारण करता है...

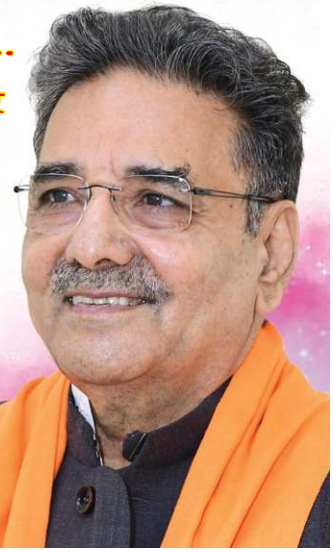

इसलिए गणपति केवल विघ्नहर्ता नहीं हैं, वे फोकस, मौलिक चिंतन और सिद्धि के भी अधिष्ठाता हैं। जो गणपति की तरह सोचना सीख गया, उसके लिए संसार का प्रत्येक संकट एक नई संभावना बन जाता है।

यही कारण है कि गणपति को केवल विघ्नहर्ता कहकर सीमित कर देना उनके विराट स्वरूप के साथ न्याय नहीं होगा।

सामान्यतः यह प्रश्न उठता है कि क्या गणपति वेदों में वर्णित हैं?

क्योंकि आज अधिकांश लोग गणेश-पूजा को पौराणिक परंपरा से जोड़कर देखते हैं। परंतु सत्य यह है कि गणपति का स्वरूप वैदिक है। वेदों में उनका नाम गणेश या गणपति के रूप में नहीं, अपितु ब्रह्मणस्पति के रूप में प्राप्त होता है। ब्रह्मण का अर्थ है वाणी, मंत्र अथवा वाक् और उसके स्वामी हैं ब्रह्मणस्पति। वाणी का स्वामी वही हो सकता है, जिसके अधीन बुद्धि हो, वाणी बुद्धि की ही अभिव्यक्ति है।

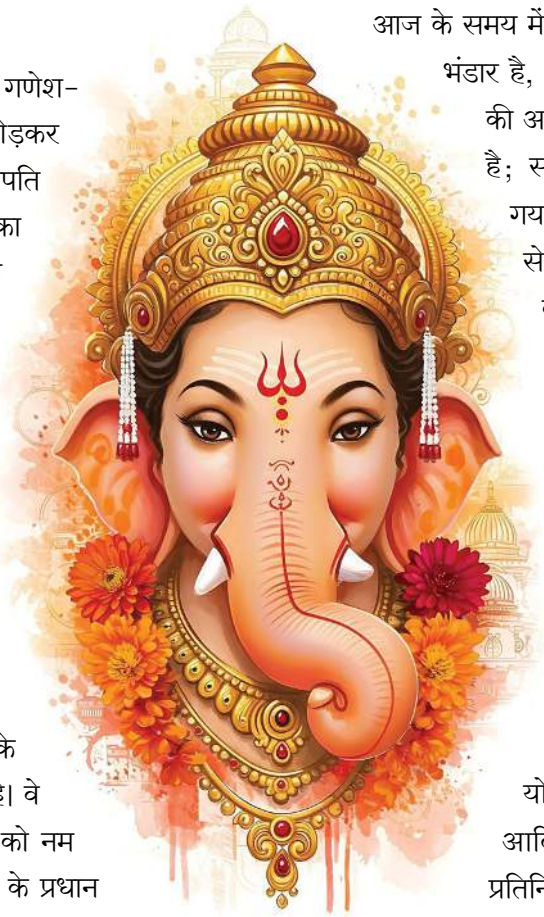

इसीलिए आदि कवि वाल्मीकि ने गणपति को बुद्धिनाथ, कवियों के स्वामी और समस्त विद्याओं के अधिष्ठाता के रूप में प्रणाम किया है। वे कहते हैं कि मैं उन स्वामी गणेश को नम स्कार करता हूं, जो समस्त विघ्नों के प्रधान नाशक हैं, जिन्होंने अपनी इच्छा से असंख्य ब्रह्माण्डों की रचना की और जो दक्षिणामूर्ति शिव के समान ज्ञान एवं विद्या प्रदान करने वाले हैं।

गणपति का संबंध केवल ऋद्धि और सिद्धि से नहीं है, बल्कि दृष्टि और बुद्धि से भी है। धन और सफलता तो उनके अनुग्रह के फल हैं, परंतु उनका वास्तविक वरदान है विवेक। धन के बिना मनुष्य कुछ समय तक रह सकता है, परंतु विवेक के बिना नहीं। संसार में जितनी भी बड़ी भूलें हुई हैं, वे बुद्धि के अभाव से नहीं, विवेक के अभाव से हुई हैं। ज्ञान होना और उसका उचित प्रयोग करना, इन दोनों के बीच का जो सेतु है, वही गणपति हैं।

गणपति की उपासना केवल विघ्न दूर करने के लिए नहीं की जाती। यदि केवल विघ्नों को दूर करना ही उद्देश्य होता, तो ऋषि, मुनि, देवता और स्वयं वाल्मीकि उनकी स्तुति क्यों करते? गणपति का तत्त्व मनुष्य को केवल सुविधा नहीं देता, वह दृष्टि देता है। वह केवल सफलता नहीं देता, वह सफलता को संभालने की बुद्धि भी देता है। वह केवल ज्ञान नहीं देता, वह ज्ञान को जीवन में उतारने का विवेक भी देता है।

आज के समय में जब मनुष्य के पास सूचनाओं का भंडार है, परंतु एकाग्रता का अभाव है; ज्ञान की अधिकता है, परंतु स्पष्टता का अभाव है; साधन बहुत हैं, परंतु साध्य खो गया है, तब गणपति का स्मरण पहले से अधिक प्रासंगिक हो जाता है। क्योंकि गणपति का तत्त्व हमें यह सिखाता है कि जीवन में केवल अधिक जानना ही पर्याप्त नहीं है, सही देखना भी आवश्यक है। और जब दृष्टि शुद्ध होती है, तब विचारों में मौलिकता आती है, मन में स्थिरता आती है और कार्यों में सिद्धि आती है।

गणपति केवल विघ्नहर्ता नहीं हैं, वे समस्त विद्याओं, वेदों, योग, आगम और काव्य शक्ति के आदिगुरु हैं। वे परब्रह्म के साक्षात् प्रतिनिधि हैं। अतः जो साधक गणपति को केवल मनोकामनाओं की पूर्ति तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उनके स्वरूप में निहित बुद्धि, विवेक, संतुलन, त्याग, करुणा और मौलिक चिंतन को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है, वही वास्तव में गणपति की उपासना करता है। रूप के माध्यम से निराकार तक पहुंचने का नाम ही सिद्धिदायक गणपति साधना है और जब मनुष्य के भीतर यह बुद्धि जागृत हो जाती है, तब विघ्न समाप्त नहीं होते, बल्कि वह स्वयं इतना समर्थ हो जाता है कि विघ्न उसके मार्ग को रोकने के स्थान पर उसकी उन्नति का साधन बन जाते हैं। सिद्धियां उसके सम्मुख करबद्ध होकर खड़ी हो जाती हैं।

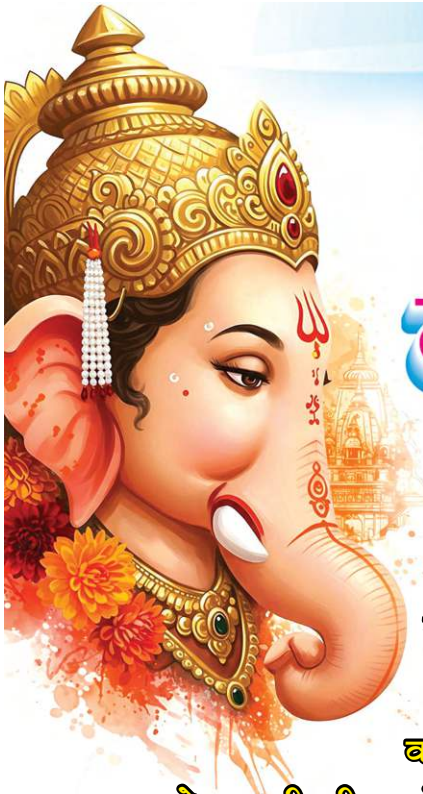

गणेश चतुर्थी - 14 सितम्बर 2026

सिद्धिदायक गणपति साधना

बलहीन व्यक्ति हमेशा दुःखों, विपदाओं से घिरा रहता है। अपनी सामर्थ्यानुसार प्रयत्न करने पर भी वह अपने-आप को उन संकटों में घिरा ही पाता है, एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी...

इस प्रकार कोई न कोई बाधा उसके जीवन में दुःखों का कारण बनती ही है... और ये बाधाएं, अड़चनें ही शत्रु बनकर उसके सुखी जीवन में दुःख का जहर घोल देती हैं...

किन्तु वही बलहीन व्यक्ति शक्तिवान बन सकता है, और समस्त संकटों से छुटकारा पा सकता है। आवश्यक है 'सिद्धिदायक गणपति साधना' अवश्य सम्पन्न करें।

गणपति साधना अत्यन्त ही सरल और सुगम मानी जाती है और तीक्ष्ण प्रभावकारी भी। यदि किसी व्यक्ति का कोई कार्य बार-बार प्रयत्न करने पर भी न हो पा रहा हो या किसी साधक को किसी साधना में बार-बार प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिल रही हो, तो ऐसे में **'सिद्धिदायक गणपति साधना'** करने पर मार्ग में आये अवरोधों को हटाकर सफलता व श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है, इससे यह स्पष्ट होता है, कि सिद्धिदायक गणपति साधना, साधक के लिये जितनी भौतिक उन्नति में लाभदायक है, उतनी ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी सर्वोपरि है।

सिद्धिदायक भगवान गणपति की लीलाओं तथा रूपों का वर्णन विभिन्न पुराणों आदि में उपलब्ध होता है। भगवान गणपति सर्व समर्थ देव हैं। वास्तव में वे अज, अनादि एवं अनन्त हैं और अपनी विभिन्न लीलाओं प्राकट्य स्वरूप, जो कि परम वन्दनीय, परम अनुपम, परम मनोरम हैं, उसमें प्रत्येक साधक के समक्ष उपस्थित होते ही हैं उनके विघ्नों को हरने के लिए।

साधना विधान

- इस साधना की सफलता के लिए शीघ्र सफलतादायक **'महागणपति यंत्र'**, **'दो विघ्नविघातक मंगल गुटिकाएं'** एवं **'सौभाग्यदायिनी मूंगा माला'**, जो कि विशेष मंत्रों से अनुप्राणित एवं चेतना युक्त हों, साधक मंगा लें।
- सिद्धिदायक गणपति साधना **गणेश चतुर्थी 14 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी चतुर्थी या किसी भी बुधवार** प्रातः काल सम्पन्न करनी चाहिए।
- साधना में साधक को **पूर्व या उत्तर दिशा** की ओर मुख करके बैठना चाहिए।
- **पीले वस्त्र धारण करें** तथा ऊपर से गुरु चादर ओढ़कर यह साधना सम्पन्न करें।
- पूरे साधना काल में घी का अखण्ड दीपक जलता रहे। साधना कक्ष अगरबत्ती एवं धूप की सुगन्ध से आपूरित होना चाहिए।

अपने सामने किसी चौकी पर **लाल वस्त्र** बिछाकर किसी प्लेट पर कुंकुम या केसर से **'स्वस्तिक'** का चिह्न बनाकर पुष्पों का आसन देकर **'महागणपति यंत्र'** को स्थापित कर दें। पुष्पों का आसन देकर यंत्र के दोनों ओर **'विघ्नविघातक दो मंगल गुटिकाएं'** एक-एक गुटिका स्थापित कर दें।

लकड़ी के बाजोट पर ही आधा जल से भरा हुआ एक कलश स्थापित करें, कलश के मुंह पर मौली/कलावा बांध दें। इसके बाद एक नारियल, जिसमें पानी हो, दोनों हाथों में लें, उसमें कलावा बांधकर, कुंकुम का तिलक करें तथा एक पुष्पमाला नारियल को पहनाकर, मन ही मन यह प्रार्थना करें, कि मेरे जितने भी पाप-दोष हैं, वे समाप्त हों और मुझे इस साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त हो, फिर इस नारियल को कलश के ऊपर स्थापित कर दें।

कलश और गणपति यंत्र स्थापित करने के पश्चात् दोनों हाथों में पुष्प लेकर सिद्धिदायक गणपति का ध्यान करें -

गजानन भूत गणधि सेवितं
कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं;
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।

तत्पश्चात् पुष्प गणपति यंत्र पर अर्पित कर दें तथा अपने दोनों हाथों को आह्वान की मुद्रा में ऊपर उठाकर भगवान गणपति का आह्वान करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

आगच्छ भगवन् देव सर्वसौभाग्य दायक।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् यत्र स्थिरो भव।।

यंत्र को किसी दूसरे पात्र में रखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए जल, पंचामृत और पुनः जल से स्नान करायें -

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव! शान्तिं कुरुष्य मे।।

पुनः जल से स्नान कराने के पश्चात् वस्त्र से पौंछकर इसे पुनः प्लेट में स्थापित कर दें। इसके बाद यंत्र पर कुंकुम से 5 तिलक करें, 'गुटिकाओं' पर तिलक करें, फिर अक्षत, पुष्प, धूप व दीप से उनका पूजन करें। ये दोनों गुटिकाएं **'शुभ'** और **'लाभ'** की प्रतीक हैं। इसके पश्चात् **'सौभाग्यदायिनी मूंगा माला'** से निम्न सिद्धिदायक गणपति मंत्र की 5 माला जप करें -

मंत्र

ॐ श्रीं गं गणपतये श्रीं गं सिद्धये नमः

मंत्र जप के पश्चात् गणपति यंत्र पर पुष्प अर्पित करें तथा भगवान गणपति को बेसन के लड्डू का भोग लगायें। नैवेद्य अर्पण के पश्चात् गणपति आरती सम्पन्न करें और सभी को प्रसाद वितरण कर स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करें। एक दिवसीय साधना के पश्चात् साधक यंत्र, माला और गुटिकाओं को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

जो साधक अपने घर में गणेश चतुर्थी को मूर्ति विराजमान करते हैं वे गणेश चतुर्थी (14 सितम्बर 2026) को ऋद्धि -सिद्धि गणपति साधना सम्पन्न करने के पश्चात् यंत्र के ऊपर ही गणपति का विग्रह स्थापित कर दे और मंगल गुटिकाएं - शुभ-लाभ को विग्रह के दोनों ओर पुष्पों का आसन देकर स्थापित कर दें तथा सौभाग्यदायिनी मूंगा माला को गणपति को पहना दें।

आप जितने दिनों तक गणपति स्थापित रखें, उतने दिनों तक नित्य प्रति प्रातः और सांय गणपति विग्रह के समक्ष - ॐ श्रीं गं गणपतये श्रीं गं सिद्धये नमः मंत्र का 10 मिनट जप करें तथा उसके पश्चात् गणपति को भोग अर्पित कर आरती सम्पन्न करें।

गणपति विसर्जन दिवस पर गणपति विग्रह के साथ ही गणपति यंत्र, चारों गुटिकाओं और माला को भी विसर्जित कर दें। भगवान गणपति की कृपा से आपकी कामनाएं अवश्य ही सिद्ध होगी।

कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा

सद्गुरु शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से आज्ञा चक्र में गणपति भाव को स्थापित करते है क्योंकि गणपति बुद्धि के स्वामी है और जहां सद्बुद्धि स्थापित होती है वहां सद्विचारों से युक्त साधक सर्वार्थ सिद्धि के सुपथ पर बढ़ता हैं।

गुरु का कार्य है, साधक के जीवन में संशय नहीं हो, उसकी बुद्धि स्थिर हो, एकाग्र भाव हो और अपने कार्यों को पूर्ण करने के लिये निरन्तर प्रयत्न हो।

कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा साधक के बुद्धि तत्व को जाग्रत करने की महान् चेतना क्रिया है।

भगवान श्रीगणपति सभी देवताओं में प्रथम पूज्य, सर्वपूज्य और सिद्धि प्रदायक एवं मंगलदायक देव माने गये है, गणपति भगवान शिव और आदि शक्ति पार्वती का कल्याणकारी स्वरूप है और इनका सम्पूर्ण स्वरूप ही कल्याणकारी एवं विघ्नहर्त्ता है, आदिकाल से शास्त्रों में यह विधान आया है कि जीवन में कैसा भी कार्य हो पहले गणेश स्मरण एवं पूजन आवश्यक है। जिस कार्य को प्रारम्भ में गणपति से मंगल कामना कर कार्य प्रारम्भ होता है, उसमें लक्ष्य सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए कर्म तो सभी करते है किन्तु सब को फल बराबर प्राप्त नहीं होता। उदाहरण के लिए एक मजदूर तपती गर्मी में भरपूर कर्म करता है किन्तु उसके कर्म का उसे उतना फल नहीं मिल पाता जितना दूसरे व्यक्ति को प्राप्त होता है, इसमें भाग्य के साथ-साथ दूसरा पक्ष भी है। जिसे बुद्धि कहा जाता है अर्थात् ज्ञान।

ज्ञान अर्थात् (बुद्धि) के साथ जो कार्य किया जाता है उसमें अवश्य लक्ष्य सिद्धि होकर फल प्राप्त होता है और व्यक्ति को ज्ञान कहां से प्राप्त होगा, ज्ञान का स्वरूप गुरु को कहा गया है और भगवान गणेश बुद्धि प्रदाता कहे गये है अर्थात् ज्ञान के स्वरूप गुरु से कार्य पूर्णता शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से शिष्य जब शक्ति प्राप्त कर गणेश का आह्वान कर कार्य का श्रीगणेश करता है, तो उस कार्य में पूर्णता अवश्य प्राप्त होती है।

साधक शिष्य अपने जीवन काल में कोई भी नवीन कार्य प्रारम्भ करें चाहे नवीन रोजगार हो अथवा भूमि-भवन की खरीद अथवा कोई भी अन्य शुभ कार्य सबसे पहले सद्गुरुदेव से 'कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा' ग्रहण कर कार्य प्रारम्भ करें।

- कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

7-8-9 अगस्त 2026

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

16 अगस्त 2026

शिव सायुज्य छिन्नमस्ता साधना शिविर, इंदौर

शिविर स्थल : आनन्दम् क्लब रिजॉर्ट्स, रेडिसन होटल स्क्वेयर, मालवीय नगर मेट्रो के सामने, ए.बी. रोड इंदौर (म.प्र.)

आयोजक- विष्णु पाटीदार 9826231345• अशोक प्रजापति 9425074794• कुंवरसिंह राजपूत 9301060305• ललित जोशी 9826088920• गणेश मोदिया 9826031 845• मुकेश जैन 9425922222• रघुराज सिंह मेहदेले 9754645047• गंगाप्रसाद जायसवाल 9755629061• राम सिंह राजपूत 9425400822• दिलीप धोटे 9826702088• रामस्वरूप निखिल 9826091488• कमल खेड़े 98272 33200• जगदीश बैरागी 7587615075• यतिंद्र सक्सेना 9425059293• अर्जुन दास बैरागी 9399417091•आशीष डाले 9406718124• उमाशंकर पुरोहित 9009044033• जीपी परसाई 9340326221• देव काग 8619110544• हेमंत सोलंकी 9826082921• दिनेश साहू 9039207313• प्रीतम सिंह राजपूत 8889721421• नरेंद्र सिंह सोलंकी 7772884571• देवराम वर्मा 9826042471• नरेश साहू 9229610122• राजेश शर्मा 8878444044• डॉ. दीक्षा राजपूत 9340804586• कमल सिसोदिया 9753208821• गोपाल वशिष्ठ 9926802121• गिरीश वर्मा 9399686395• चंद्रभान सिंह• जाहर सिंह 9826701516• हेमराज सिंह चौहान• मनोहर साहू 8349622901• लक्ष्मी कांत पांडेय 9827031916• नितिन नंदवाल 9769862821• जगदीश शर्मा 9179099007• कैलाश साहू 6268635910• रामकिशन पवार 9869361920• दिलीप फूल माली 7224090205• दिनेश पटेल 9179815241• अनुराग जज साहब 7999130379• संतोष बैरागी 9399417091• नितेश बाघेल 9926380089• संजय मोदिया 09826641215• अरविंद कोष्ठी• सत्यनारायण मौर्य• राजेश शर्मा 9424495527• डॉ राजेंद्र विश्वे 7000065294• रामू चौहान 9425071986• सुभाष धौलपुर 9827700021• विनोद शर्मा 9827304221• राजाराम चौकसे 998135282• **बड़वाह:** दीपक पटेल 9009930042• पंकज देवराय 9399177435 • जगदीश भमोरिया 9926598052• मनीष नरिया 9589388279• **विदिशा:** देवना अरोरा 9406917770• राकेश सिंह 9301636074• नम्रता अरोड़ा 9406910005• प्रकाश जोशी 9827362754• **कुक्षी:** संजय टक्कर 9770503899• स्वयं प्रकाश कुशवाहा 9993356659• **बैतुल:** आई डी कुमरे 7224996443• एस एल धुर्वे 9993155686• हर्षा मनोज अग्रवाल 8982187885• गणेश साहू 9977556797• रघुनाथ लोखंडे 9754788277• निश्चल कमाविसदार 7987511868• पंजाब राव चिलाटे 9165762576• राजश्री मरकाम• रूषी लाल यादव• कमलाकर धाडसे 8989263486• जनक लाल मवासे 8319047976• **महेश्वर:** भगवान पांडे 9589634101• अरविंद पांडे 6264778541• नंदकिशोर डोंगरे 7000058718• **बड़वानी:** विजय सिंह पवार (एस डी ओ)• रजनीश पाटीदार 9977315003• सुशील कुमरावत 989338253• मोहन निगम 9926703585• **पुनासा (ओम्कारेश्वर):** रघुनाथ सिंह सिसोदिया 8226097320• रघुराज सिसोदिया 7024275845• रूपेश राज वेद 9424556875• सुरेश कलाम 6267244077• **भीकन गांव:** घन्नालाल प्रजापति 7089571058• **उज्जैन:** दीपक कोडापे 9425071172• एन के सिजेरिया 9424011686• भगवान सिजेरिया 9424870726• कैलाश सोनी 9826571757• विकास नागर• राजेश परमार• **धामनोद:** डॉ बागसिंह पंवार 9826860921• अन्तिम शुक्ला 9993114308• मुकेश खंडेलवाल• लखन कुशवाहा• **धार:** अजय पाटीदार 9893884799• रमेश चौहान 9752619050• राहुल हटीले 9340025750• लालाराम पाटीदार 9179828688• **देवास:** विमल चौधरी 9893069761• मदन प्रजापति 9229993747• पुखराज प्रजापति 9009926298• प्रहलाद प्रजापति 9826371343• संजय पागनीस 9893131200• **भोपाल:** कौशिक श्रीवास्तव 9425183471• एस बी साह 9685124110• भागीरथ साहू 7869011148• कृष्ण गोपाल मैथिली• हरिराम प्रजापति• किशोर मैथल• संगीता सपूत• **मैना:** देवराज वर्मा 7389323879• महेश निखिल• मानसिंह निखिल• बाबूलाल निखिल 9685107312•

तेजपुरी गोस्वामी (मंदसौर) 9285219687• बी डी दवंडे (छिंदवाड़ा) 9424461118• **नरसिंहगढ़ः** अरुण कुमार मेहता 9425445137• गोविंद सिंह मकवाना 9425445073• **श्योपुरः** जगदीश शर्मा 9575775602• राम अवतार शर्मा 9926263620• ओम प्रकाश जाट 9179331516• रमाशंकर प्रजापत 9926604600• **नर्मदा पुरमः** सरनाम सिंह ठाकुर 9425687263• सुरेश धुर्वे 9340947927•

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

28-29-30 अगस्त 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

4-5-6 सितम्बर 2026

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

18-19-20 सितम्बर 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

27 सितम्बर 2026

पितृ प्रसन्न कुल देवी देवता साधना शिविर, बोकारो

शिविर स्थल : बौद्ध विहार सेक्टर - 4, जगन्नाथ मन्दिर के पास, बोकारो, झारखण्ड

आयोजकः- ब्रजनंदन कुमार श्यामला 8986872120• अमर बाउरी• मोहन सिंह 8789219358• जितेन्द्र प्रसाद 8340409238• मनोज कुमार 9905571724• अरुण कुमार वर्मा 8334231579• घनश्याम प्रसाद 9693415603• आर.सी. प्रसाद 9470121495• जगदेव प्रसाद चौधरी 9308068866• प्रमोद कुमार 9835315565• युगता देवी 98355155665• चन्द्रप्रभा देवी 9279295881• गीता देवी 9031810703• रेखा देवी 8271825063• सुनिता देवी 9199693118• रूपेश करमाली 7631028551• रमेश पात्रा 9102963730• डी.डी.रवानी 7250796021• सुरेश प्रसाद 9507544304• सुभाष पंडित 6201824022• मंजू देवी 9142296569• राज किशोर शर्मा 950796021• उमाकान्त दुबे 9661457012• गीता देवी बरार्डक• उदय कुमार शर्मा• अनिल वर्मा 8340479180• अगनु दास• सोनू कुमार वर्मा 7488672948• पी.एन. सिंह• विजय कुमार झा 9431379234• पी.एन. पाण्डे 9470382582• जेलर सिंह 90065538081• अजय सिंह 6205476366• अमरेन्द्र सिंह 7488194490• संतोष ठाकुर 7004825814• विनोद शर्मा 9431321462• रजीव 9709182327• अनिरुद्ध राम 7061268617• मिथलेश पुरी 6201822477• मुंशी मांझी 9905542166• अश्वनी सिंह 6202070733• दिलीप कुमार• अनिल सिंह• **टाटा नगरः** अनिल ओराव 923455436• वाई.एम.मुर्ति 7461066316• अभय कुमार वर्मा 9835563288• अरुण प्रसाद 9835956812• डॉ.रवि सिंह 9334626918• नरेश वर्मा 9031929112• बालेश्वर सिंह 8002326169• नविन कुमार 8340596023• विजय शाह 6206137839• गुरुबारी देवी 6201879398• राम बाबु सोनकर 8877404090• अरुण पाण्डे 9431346042• **सिन्दरीः** पंकज सिंह 7979717850• पंकज मनी 9122693944• वायो बिनोद आर्या 7903010735• उदय सिंह(धनबाद) 9386897555• डॉ.सुशील सिंह 6204498988• सुनैना देवी 9153773948• मल्लिका मिठू 9546854539• गोपाल पंडित 7870736689• प्रसन्नजित मंडल 9973706187• सफीक अंनसारी 7654847741• **गुमलाः** सुशीला कुमारी 9778542739• रामेश्वर बघेल 9430390239• अनिल पाण्डे 9693075820• धनराज साय पैकरा 7762967948• सुजीत साहू 7667988972• **शेष नाम अगले अंक में...**

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

24-25 अक्टूबर 2026

जाग्रत लक्ष्मी साधना शिविर, चित्रकूट

शिविर स्थल : राष्ट्रीय रामायण मेला क्षेत्र, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

आयोजक : फौजदार सिंह 9721458101• डॉ. दिनेश मिश्रा 9307637084• रमाशंकर यादव 9120590115• मीरा मिश्रा 9307782759• दिवाकर सिंह एडवोकेट 9415833466• राममिलन सिंह 9721458122• अरुण सिंह एडवोकेट 9415457229• रामू राम आर्या 9208491715• डॉ. जितेन्द्र गौतम 7319886120• माखन लाल संन्यासी 7607951522• डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा प्राचार्य 9721455817• डॉ. दिवाकर सिंह प्राचार्य 971458112• मुसाफिर सिंह चेयरमैन• मदन मोहन पाण्डेय• **शेष नाम अगले अंक में...**

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

आवश्यक सूचना

निखिल मंत्र विज्ञान का प्रत्येक अंक अब से रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जा रहा है। जिससे आपको पत्रिका निश्चित रूप पता हो सके। अब पत्रिका जोधपुर कार्यालय से POST होते आपको डाक विभाग द्वारा SMS प्राप्त होगा। यदि आपको मोबाईल पर SMS के माध्यम से सूचना प्राप्त नहीं हुई है तो कृपया पते के साथ अंकित अपना MOBILE NUMBER अवश्य जांच लें और यदि आपने अपना मोबाईल नम्बर बदल दिया है तो तत्काल जोधपुर कार्याल के WhatsApp No. 9602334847 पर अपना नया नम्बर अपने नाम सहित भेज दें अथवा फोन द्वारा सूचना कर दें।

पत्रिका आपको समय पर और निरन्तर प्राप्त हो इसीलिये रजिस्टर्ड डाक (MAGAZINE POST) की विशेष सेवा का प्रयोग किया जा रहा है। पत्रिका नहीं प्राप्त होने पर तुरन्त जोधपुर कार्यालय में फोन एवं WhatsApp द्वारा सम्पर्क करें।

साधना और दीक्षा से ही जीवन गतिशील

प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री, दीक्षा, भेंट आदि की न्यौछावर आप सीधे "निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर" के SBI Bank A/c. 32677736690 और UBI Bank A/c. 310001010036403 में QR Code Scan कर जमा करवा सकते है -

SBI Payments
SBI Bank A/c.
32677736690
IFSC Code
SBIN0000659
SCAN & PAY

Union Bank of India
UBI Bank A/c.
3100010100-
36403
IFSC Code
UBIN0531006
SCAN & PAY

WhatsApp 9602334847 पर न्यौछावर की जानकारी अवश्य भेजे।

कार्यालय में व्यक्तिगत सम्पर्क केवल इन्ही चार नम्बरों पर करें

9799988915 9799988930 9799988937 9799988938

इन्हें अपने Phone में Save कर दें।

शिविर, दीक्षा, साधना सामग्री, विधान, पूजन आदि की जानकारी हेतु
निखिल मंत्र विज्ञान जोधपुर के कार्यालय व्यवस्थापक से सम्पर्क करें -
संजय निखिल - मान सिंह - प्रवेश भारती - जगदीश

दिल्ली कार्यालय में साधनात्मक जानकारी, पूजन-यज्ञ-अनुष्ठान हेतु सम्पर्क करें - मनोज भारद्वाज - 9799988970

RNI No. RAJBIL/2010/34824
Postal Registration No. Jodhpur/366/2025-2027

MAGAZINE POST
Cust. ID - 3000067831
Contract ID - 41372420
BPC Jodhpur HO 342001

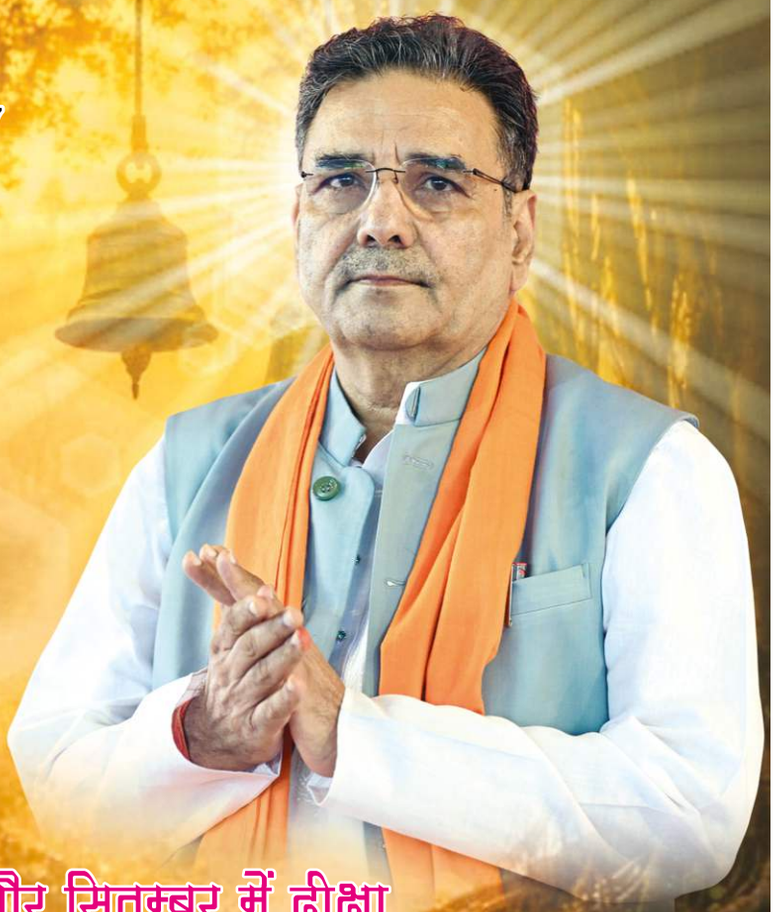

माह : अगस्त और सितम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान जोधपुर

7-8-9 अगस्त

4-5-6 सितम्बर

स्थान आरोग्यधाम (दिल्ली)

28-29-30 अगस्त

18-19-20 सितम्बर

पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे।
इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंचकर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रेषक -
निखिल मंत्र विज्ञान
14 A, मेन रोड हाई कोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन: 9799988915, 9799988930
9799988937, 9799988938
SMS & WhatsApp - 9602334847
Web Add. - nikhilmantravigyan.org
facebook.com\nikhilmantravigyan.org
Email - nmv.guruji@gmail.com